

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186515

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No. ^H 231

Accession No. ^H 1247

Author ^{Q17m} জালাল মাহলু

Title মহা ২ম

This book should be returned on or before the date last marked below.

भूमिका

यह विश्वास कर कि 'मेरा राम' जिस प्रकार भौतिक, दैविक और आत्मिक दुर्वलताओं को दूर करने में समर्थ है, उसी प्रकार नैतिक, सामाजिक और धार्मिक भावनाओं में एकीकरण कार्य में अलौकिक चमत्कार के बल पर मनुष्य-मात्र को सफल बनाने में निस्सन्देह अव्यर्थ है ; मैंने इस रूप में जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है ।

अपनी कई एक कल्पित भावनाओं के कारण मनुष्य को मनुष्य से भय होने लगा है, संसार का प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को इस प्रकार देख रहा है जिस प्रकार हिंसा करने वाले पशु जंगलों में एक-दूसरे को नित्य देखा करते हैं; जिसका विषम परिणाम यह होता है कि मानव अपने मानव-जीवन की उपयोगिता के सुन्दर आदर्श को भूलकर पशु-जीवन की प्रणाली को ही अपना कर वह काम करने पर तुल जाता है, जो कि आगे चलकर उसी के लिए, उसी के राष्ट्र के लिए, उसी के समाज के लिए, उसी के धर्म के लिए और उसी की सन्तति के लिए न मिटने वाले कलंक का ही रूप धारण कर लेता है ।

अब तक जो कुछ हुआ, उसे भूल कर आगे आने वाले युग में मानव का कलंक मानवता के कार्यों से नष्ट किया जा सके, इस उद्देश्य से 'मेरा राम' प्रकाशित हो रहा है । आशा की जाती है कि इससे मानव-मात्र का उतना हित अवश्य होगा जितना कि इसके हृदयस्थ-कर्त्ता महात्मा गांधी नित्य सोचा करते थे । अस्तु

हर्षवर्द्धन शुक्ल

विषय-सूची

१-राम कौन ? ...	५	१७-रामनाम का मज़ाक	६७
२-मेरा आधार ...	८	१८-रामनाम की शक्ति	७१
३-हृदय में अंकित हुआ रामनाम ...	९	१९-विश्वास-चिकित्सा और रामनाम ...	७६
४-ईश्वर का अर्थ ...	१३	२०-रामनाम की कृपा होगी	८२
५-रामधुन और ताल	१५	२१-अगर हम ईश्वर के बच्चे हैं तो ...	८५
६-ईश्वर और अहिंसा	१८	२२-सबसे अच्छी दवाई राम नाम है ...	८६
७-कुदरती इलाज तो राम नाम ही है ...	१९	२३-अगर आपकी आत्मा मज़बूत है तो	९२
८-मूर्तिपूजा का बेढङ्गा रूप	२९	२४-चोरों के लिये कुदरती इलाज ...	९५
९-ईश्वर की उपासना और सत्याग्रह ...	३१	२५-फिर रामनाम ...	१००
१०-प्रार्थना का रहस्य और रामनाम ...	३७	२६-ईश्वर व्यवित है या ताकत ? ...	१०२
११-स्वर्ग का राज्य या राम- राज्य ...	४१	२७-रामनाम के बारे में भ्रम	१०४
१२-रामनाम यकीनी इमदाद है ...	४७	२८-संगमलित प्रार्थना	१०६
१३-ईश्वर ही हिंसा को रोक सकता है ...	५२	२९-दशरथ नन्दन राम	१०८
१४-ईश्वर में श्रद्धा रखनी चाहिये ...	५४	३०-ईश्वर कहाँ है और कौन है ? ...	११९
१५-प्रार्थना का उद्देश्य	६२	३१-गांधी जी के प्रिय गीत	१२७
१६-मध्यविन्दु ईश्वर ही हो सकता है ...	६४		

मेरा राम

१-राम कौन ?

किसी एक अवसर पर महात्मा गांधी से इस प्रकार का प्रश्न किया गया, “आप कहा करते हैं कि प्रार्थना में प्रयुक्त ‘राम’ का आशय दशरथ के पुत्र राम से नहीं है। आपका आशय “जगन्नियन्ता” से होता है। हमने भली भाँति देखा है कि ‘राम-धुन’ में ‘राजाराम, सीताराम’ ‘राजाराम, सीताराम’ का कीर्तन होता है और जयकार भी ‘सियापति रामचन्द्र की जय’ का लगता है। मैं विनम्र भाव से पूछता हूँ कि यह सियापति राम कौन है ? यह राजाराम कौन है ? क्या ये दशरथ के सुपुत्र राम नहीं हैं ? ऊपर की पंक्तियों का अर्थ तो स्पष्टतया यही लगता है कि प्रार्थना में आराध्य जानकी-पति दशरथ-पुत्र राम ही हैं ?”

गोस्वामो तुलसीदास-रचित राम-चरित-मानस के पाठक समझ गये होंगे कि यह प्रश्न उसी प्रकार का है जिस प्रकार का प्रश्न गरुड़ ने कागभुशुण्ड से, सती और पार्वती जी ने शिव जी से तथा भरद्वाज ने याज्ञवल्क्य से किया था और उन प्रश्नों के उत्तर को लेकर जनता में नित्य राम-चर्चा हुआ करती है।

इसीलिए उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये “ऐसे प्रश्न का उत्तर मैं दे चुका हूँ, मगर इसमें कुछ नया भी है, जो उत्तर की अपेक्षा रखता है। रामधुन में ‘राजाराम’, ‘सीताराम’ रटा जाता है, वह दशरथ-

नन्दन राम नहीं तो कौन हैं ? तुलसीदास जी ने तो इसका उत्तर दिया ही है. तो भी मुझे कहना चाहिए कि मेरी राय कैसे बनी

●राम सच्चिदानन्द दिनेसा । नहीं तहँ मोह निसा लव लेसा ॥
 सहज प्रकाश रूप भगवाना । नहीं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
 हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना । जीव-धर्म अहमिति अभिमाना ॥
 राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानन्द परेस पुराना ॥

× × × ×

निज भ्रम नहीं ससुझहि अज्ञानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी ॥
 जथा गगन भन पटल निहारी । भापेउ भानु कहहिं कुविचारी ॥
 चितव जो लोचन अंगुलि लाये । प्रगट जुगल ससि तेहि के भाये ॥
 उमा राम विषइक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
 विषय करन सुर जीव समेता । सकल एक ते एक सचेता ॥
 सब कर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवध पति सोई ॥
 जगत प्रकास्य प्रकाशक रामू । मायाधीस ज्ञान गुन धामू ॥
 जासु सत्यता से जड़ माया । भास सत्य इव मोह सहाया ॥

× × × ×

आदि अन्त कोउ जासु न पावा । मति अनुमानिनिगम अस गावा ॥
 बिनु पद चलै सुने बिनु काना । कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥
 तनु बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहै घान बिनु बास असेखा ॥
 अस सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहि बरनो ॥

× × × ×

सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर सब उर अन्तरजामी ॥
 चिवसहु जासु नाम नर कहहीं । जन्म अनेक रचित अघ दहहीं ॥
 सादर सुभिरन जे नर करहीं । भव वारिधि गोपद इव तरहीं ॥

(राम-चरितमानस—बालकाण्ड)

है । राम से रामनाम बड़ा ॐ है । हिन्दू-धर्म महासागर है ।

*बन्दौ राम नाम रघुबर के । हेतु कृसानु भानु हिम करके ॥
विधि हरिहर सम वेद प्रान सों । अगुन अनूप सगुन निधान सों ॥
महामंत्र जोह जपत महेसू । कासी मुकुति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदि कवि नाम प्रतापू । भयउ सिद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिव वानी । जपि जेई प्रिय संग भवानी ॥

× × × ×

समुभक्त सरित नाम अरु नामी । प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप होउ ईश उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि सार्धी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू ॥
देखियहि रूप नाम आधीना । रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ॥
रूप विशेष नाम बिनु जाने । करत लगत न परहिं पहिचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे । आवत हृदय सनेह विसेखे ॥

× × × ×

नाम जीह जपि जागहिं जोगी । बिरति विरञ्चि प्रपञ्च वियोगी ॥
ब्रह्म सुखहिं अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लव लाये । होंहि सिद्ध अणिमादिक पाये ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी । भिटहिं कुसङ्कट होंहि सुखारी ॥
राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहूँ चतुर कहुं नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहिं विशेष धारारा ॥
चहुं युग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि विसेष नहि आन उपपाऊ ॥

दोहा--सकल कामना हीन जे, राम भगति रस लीन ।

नाम सुप्रेम पियूस हृद, तिन्हहुं किये मन मीन ॥

अगुन सगुन दोउ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूँ ते । किय जेहि युग निज बस निज बूते ॥

(रामचरित मानस)

उसमें अनेक रत्न भरे हैं। जितने गहरे पानी में जाओ, उतने ज्यादा रत्न मिलते हैं। हिन्दू-धर्म में ईश्वर के अनेक नाम हैं। सैकड़ों लोग राम-कृष्ण को ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हैं, और मानते हैं कि जो राम दशरथ के पुत्र माने जाते हैं, वही ईश्वर के रूप में पृथ्वी पर आये और यह कि उनकी पूजा से आदमी मुक्ति पाता है। ऐसा ही कृष्ण के लिए है। इतिहास, कल्पना और शुद्ध सत्य आपस में इतने ओत-प्रोत हैं कि उन्हें अलग करना क़रीब-क़रीब असंभव है। मैंने अपने लिए सब संज्ञाएँ रक्खी हैं और उन सब में निराकार, सवस्थ राम को ही देखता हूँ। मेरे लिए 'मेरा राम' सीतापति दशरथ-नन्दन कहलाते हुए भी वह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है, जिसका नाम हृदय में होने से सब दुःखों का नाश होता है।

२-मेरा आधार

किसी एक सज्जन ने एक बार महात्मा गांधी से प्रश्न किया, “आप डाक्टरों से निदान क्यों करवाते हैं, वैद्यों से क्यों नहीं?”

इसका उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “क्योंकि डाक्टरों के पास शरीर-शास्त्र का जो ज्ञान है, वह वैद्यों के पास नहीं। वैद्यों का आधार त्रिदोष है। उन्होंने उसकी भी पूरी-पूरी खोज नहीं की है। डाक्टर हमेशा खोज करते रहते हैं, और या तो आगे बढ़ते हैं या पीछे हटते हैं। वे स्थिर नहीं। जो स्थिर हो जाता है, वह जड़ बन जाता है। दुनिया में कोई भी चोख स्थिर नहीं, अकेला ईश्वर स्थिर है, तिस पर वह अस्थिर भी कहलाता है। वह अलौकिक है।

फिर, डाक्टर और वैद्य मेरे मित्र हैं। उनमें डाक्टरों ने

मुझे कभी छोड़ा नहीं। उनमें से एक तो मेरे लिए मरौ सगी लड़की से भी ज्यादा बन गई है। सगी मुझको छोड़ सकती है। यह तो अपनी राज्ञी खुशी से बनी है। यह मुझे कैसे छोड़े ? इसलिए डाक्टर निदान करते हैं। वैद्य खुद जैसा-तैसा डाक्टरी निदान करते हैं या डाक्टर से कराते हैं या कराने की सलाह देते हैं। वैद्यों के पास कुछ दवाइयाँ हैं और वे उनका उपयोग कर लेते हैं। डाक्टर, हकीम और वैद्य तीनों कमाने का धंधा करते हैं। दूसरों का भला करने के लिए के कोई इस धंधे को सीखता नहीं। यह दूसरी बात है कि इनमें से कोई-कोई परोपकार करते हैं। एक कुदरती इलाज का जन्म ही परोपकार में से हुआ है। लेकिन आजकल तो वह भी कमाई का जरिया बन गया है। इस तरह पैसा परमेश्वर बन बैठा है।

आखिर यह सच है कि डाक्टर मित्र मेरा निदान करते हैं। मगर मेरा आधार तो ईश्वर पर ही है, और वही मेरी हर एक साँस का स्वामी है। उसे देना होगा तो वह १२५ साल देगा, और न देना होगा, तो वही आज या कल उठा ले जायगा और डाक्टर मित्र मुँह बाये देखते रह जायँगे।”

३-हृदय में अंकित हुआ राम नाम

“दूसरे से बातचीत करते समय, मस्तिष्क द्वारा कठिन कार्य करते समय अथवा अचानक घबड़ाहट आदि के समय भी क्या हृदय में राम नाम का जप हो सकता है ? अगर ऐसी दशा में भी लोग करते हैं, तो कैसे करते हैं ?”

इस प्रकार के जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों को उपस्थित करने वाले सज्जन को समझाते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “अनुभव कहता

है कि मनुष्य किसी भी हालत में हो, सोता भी क्यों न हो, अगर आदत हो गई है और नाम हृदयस्थ हो गया है, तो जब तक हृदय चलता है तब तक राम नाम हृदय में चलता ही रहना चाहिए। अन्यथा यह कहा जाय कि मनुष्य जो रामनाम लेता है, वह उसके कंठ से ही निकलता है, अथवा कभी-कभी हृदय तक पहुंचता है; लेकिन हृदय पर नाम का साम्राज्य स्थापित नहीं हुआ है। जब नाम ने हृदय का स्वामित्व पाया है तब जप कैसे करते हैं यह सवाल पृछा ही न जाय। क्योंकि जब नाम हृदय में स्थान लेता है तब उच्चारण की आश्यकता ही नहीं है। यह कहना ठोक होगा कि इस तरह रामनाम जिनको हृदयस्थ हुआ है, ऐसे लोग कम होंगे। जो शक्ति राम नाम में मानी गई है* उसके बारे में मुझे कोई शक नहीं है। हर एक आदमी

*दोहा—निरगुन ते इहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार।

कहउँ नाम बड़ राम ते, निज विचार अनुसार ॥

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि सङ्कट किय साधु सुखारी ॥
 नाम सप्रेम जपत अनयासा। भगत होंहि मुद मङ्गल बासा ॥
 राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
 रिषि हित राम सुकेतु सुताकी। सहित सेन सुत कीन्ह बेबाकी ॥
 सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रवि निसि नासा ॥
 भञ्जेउ राम आप भव चापू। भव-भय-भञ्जन नाम प्रतापू ॥
 दण्डक बन प्रभु कीन्ह सुहावन। जनमन अमित नाम किय पावन ॥
 निसिचर निकर दले रघुनन्दन। नाम सकल कलि कलुष निकन्दन ॥

दोहा—सवरी गिद्ध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ।

नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुनगाथ ॥

राम सुकण्ठ विभीषन दोऊ। राखे सदन जान सब कोऊ ॥
 नाम अनेक गरीब निवाजे। लोक वेद वर विरद बिराजे ॥

इच्छामात्र से ही राम नाम को अपने हृदय में अंकित नहीं कर सकेगा। उसमें अनथक परिश्रम की आवश्यकता है, धीरज की भी है। पारस-माण को हासिल करने के लिए धीरज क्यों न हो ? नाम तो उससे भी अधिक है।”

राम भालु कपि कटक बटोरा । सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं । करहु विचार सुजन मन माहीं ॥
राम सकुल रन रावन मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥
राजा राम अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि वर बानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती । बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीती ॥
फिरत सनेह मगन सुख अपने । नाम प्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दोहा—ब्रह्म राम ते नाम बढ़, वरदायक बरदानि ।

रामचरित सत कोटि महं, लिय महेस जिय जानि ॥

नाम प्रसाद सम्भु अविनासी । सहज श्रमझल मझल रासी ॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जग प्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू ॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भगत सिरोमनि भे प्रह्लादू ॥
ध्रुव सगलानि जपेव हरि नामू । पायेउ अचल अनूपम ठामू ॥
सुमिरि पवन सुत पावन नामू । अपने बस करि राखेउ रामू ॥
जपत अजामिल गज गनिकाऊ । भये सुकृत हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहुं कहाँ लागि नाम बढ़ाई । राम न सकहिं राम गुन गाई ॥

दोहा—राम नाम को कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ।

जो सुमिरत भये मांगते, तुलसी तुलसीदास ॥

चहुं युग तीन काल तिहुं लोका । भये नाम जपि जीव विसोका ॥
वेद पुरान सन्त मत एहू । सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मख बिधि दूजे । द्वापर परितोषक प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥

इतना सुन लेने पर भी प्रश्नकर्त्ता ने पुनः प्रश्न किया, “क्या दिमारा की किसी कमजोरी के कारण मन को सन्देह नज़र आते हैं, अथवा क्या निश्चल दशा में पहुँचने से पहले मन के लिए इन हालतों में गुजरना लाज़िमी है? जागृत दशा में भी शान्त मन में स्वप्न के से खेल क्यों होते हैं? अर्थात् जिन घटनाओं का प्रत्यक्ष जीवन की याददाश्त के साथ कभी सम्बन्ध नहीं रहा, उनका दिमारा में आगमन अथवा हृदय में उच्चारण क्यों होने लगता है?”

प्रश्नकर्त्ता के इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “निश्चल दशा में पहुँचने के पहले जिसका बयान आपने किया है, वह क़रीब-क़रीब सबको होना लाज़िमी है। ‘क़रीब-क़रीब’ कहने का मतलब है कि पूर्व जन्म में जिन्होंने साधना की है, लेकिन जो सिद्धार्थ नहीं हुए, उनको इस जन्म में यातना से गुजरना नहीं पड़ेगा। शान्त मन में स्वप्न के-से खेल होते हैं, इसका अर्थ इतना ही है कि मन बाहर से शान्त दोखता है, परंतु वास्तव में वह शान्त नहीं है। प्रत्यक्ष जीवन में जिसका सम्बन्ध नहीं दीखता, मन में उसका संचरण होता है, इसका अर्थ मेरी दृष्टि में यह है कि याददाश्त के अलावा भी बहुत-सी चीज़ें पड़ी हैं जिनका सम्बन्ध रहता ही है।”

नाम काम तरु काल कराला । सुमिरत समन सकल जग जाला ॥
 राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥
 नहि कलि कर्म न भगति बिवेकू । राम नाम अवलम्बन एकू ॥
 कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दोहा—राम नाम नर केसरी, कनक कशिपु कलि कालु ।

जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहि दलि सुरसालु ॥

भाव कुभाव अनख आलसहूँ । नाम जपत मङ्गल दिसि दसहूँ ॥

(रामचरित मानस बालकाण्ड)

प्रश्नकर्त्ता ने पुनः प्रश्न किया, “सेवा-कार्य के कठिन अवसरों पर भगवद्भक्ति के निश्चय नियम नहीं निभ पाते, तो क्या कोई हर्ज होता है ? दोनों में किसको प्रधानता दी जाय, सेवा-कार्य को अथवा माला-जप को ?”

शंका का समाधान करते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “कठिन सेवा-कार्य हो या उससे भी कठिन अवसर हो, तो भी भगवद्भक्ति यानी रामनाम बन्द हो ही नहीं सकता । उसका बाह्यरूप प्रसंग-वशात् बदलता रहेगा । माला छूटने से राम नाम, जो हृदय में अंकित हो चुका है, थोड़े ही छूट सकता है ।”

४-ईश्वर का अर्थ

कोई एक सज्जन महात्मा गांधी की लिखी हुई “गीताबोध” नामक पुस्तक पढ़ रहे थे । क्रमशः पढ़ते हुए जब वे विभूतियोग नामक दसवें अध्याय को पढ़ने लगे तब उनके मन में तरह-तरह की शंकाएँ उपस्थित होने लगीं । अपनी शंकाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने महात्मा गांधी को इस प्रकार का एक पत्र लिखा, “आजकल आपकी लिखी ‘गीताबोध’ पढ़ रहा हूँ और उसे समझने की कोशिश करता हूँ । ‘गीताबोध’ के दसवें अध्याय को पढ़ने के बाद जो सवाल मेरे मनमें उठा है, उसी के सिलसिले में यह खत लिख रहा हूँ । उसमें लिखा गया है कि श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं, “अरे, छल करने वालों का द्यूत भी मुझको समझ (द्यूतं छलयतामस्मि), इस संसार में जो भी कुछ होता है, सो मेरी इजाजत के बिना नहीं हो सकता । भला, बुरा भी तभी होता है, जब मैं होने देता हूँ (यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदह-

मर्जुन । न तदस्ति बिना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥)'' तो क्या भगवान् बुरा भी होने देता है ? और जब यह चीज भगवान् की इजाजत से होती है, तो वह इसका बदला बुराई के रूप में कैसे दे सकता है ? क्या परमात्मा से संसार की उत्पत्ति इसीलिए है ? क्या संसार का समय शान्तिपूर्ण वातावरण में कभी बीत ही नहीं सकता ?''

उक्त पत्र-लेखक के पत्र को पढ़कर महात्मा गांधी ने अपने मिलने वालों से कहा, 'एक पत्र-लेखक ने यह सवाल पूछा है । यह कहना कि बुराई का मालिक भी ईश्वर है, कानों को कठोर लगता है । लेकिन अगर वह अच्छाई का मालिक है, तो बुराई का भी है ही । रावण ने अनहद ताकत दिखाई, सो भी ईश्वर ने दिखाने दी, तभी न ? मेरे खयाल में इस सारी उलझन की जड़ ईश्वर-तत्त्व को न समझने में है ।

ईश्वर कोई पुरुष नहीं, व्यक्ति नहीं ? उसे कोई विशेषण लगाया नहीं जा सकता । ईश्वर खुद ही क्रायदा, क्रायदा बनाने वाला और क्राज्जी है । दुनिया में हमें यह चीज इतनी सुसंगत रीति से कहीं देखने को नहीं मिलती । लेकिन जब कोई आदमी ऐसा करता है, तो हम उसे शाहंशाह नीरो (शैतान) के रूप में देखते हैं । मसलन्, हिन्दुस्तान का बायसराय खुद क्रायदे बनाने वाला, क्रायदा और क्राज्जी है । मनुष्य को यह स्थिति शोभा नहीं देती । लेकिन जिसे हम ईश्वर के रूप में पूजते हैं, उसके लिए तो यह न सिर्फ ज़ेबा है, बल्कि असल में हकीकत भी यही है । अगर हम इस चीज को समझ लें, तो इस खत में जो सवाल उठाया गया है, उसका जवाब मिल जाता है, या यों कहिये कि फिर वह सवाल उठ ही नहीं सकता ।

दुनिया अपना समय शान्तिमय वातावरण में बिता ही नहीं सकती, यह सवाल भी खड़ा नहीं हो सकता । जब दुनिया

चाहेगी तब वातावरण भी शान्तिमय हो जायगा। यह सवाल तो उठना ही न चाहिए कि दुनिया कभी ऐसा चाहेगी या नहीं, या चाहेगी तो कब चाहेगी। ऐसे सवाल उठाना मेरे ख्याल में निठल्लेपन की निशानो है। 'आप भला, तो जग भला' के अनुसार सवाल पूछने वाले खुद हर हालत में शान्ति रख सकें, तो उन्हें समझ लेना चाहिए कि जो काम वे खुद कर सकते हैं, सो सारी दुनिया कर सकेगी। ऐसा न मानने का मतलब होगा कि वह बड़े अभिमानी है।"

५-रामधुन और ताल

एक बार महात्मा गांधी सेवाग्राम से पूना जा रहे थे। रास्ते में एक दिन के लिए बम्बई में ठहर गये। यह घटना उस समय की है जब कि दो बातें उनके दिल में बसी हुई थीं। पहिली बात तो यह थी कि जनता के अहिंसक संगठन के लिए सामुहिक प्रार्थना की साधना की जाय और दूसरी बात यह थी कि अकाल की समस्या हल की जाय। जिस प्रकार महात्मा गांधी बंगाल, आसाम और मद्रास के दौरे में करते आये थे उसी प्रकार बम्बई में उन्होंने ताल के साथ रामधुन को प्रार्थना में दाखिल किया।

सामुहिक रामधुन और ताल का महत्व और अर्थ को समझाते हुए एक बार महात्मा गांधी ने मद्रास में कहा था, "जहाँ तक फौज का सवाल है, दुश्मन को मार डालने के लिए हथियार चलाना सीखने में अनुशासन रहा है। मगर अहिंसा के तरीके में तो अनुशासन इस बात में है कि ज्यादा से ज्यादा ठकसाहट

के रहते भी किसी को बिना मारे, बिना बदला लिये, मरने की कला को अपनाया जाय और समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा की जाय। अगर हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ लोग एक आदमी की तरह, एक आवाज से बोलें, एक साथ चलें और एक साथ काम करें, तो स्वराज्य उनकी हथेली में ही धरा है।

प्रार्थना लोगों को एक साथ रखने वाली सबसे बड़ी ताकत है। वह इन्सानों में आपस की एकता और मेल पैदा करती है। जो आदमी प्रार्थना के जरिये ईश्वर के साथ अपनी एकता को पहचान लेता है, वह सबको अपने जैसा ही मानता है। उस हालत में न कोई ऊंचा होगा, न नीचा, न प्रान्तीयता की संकुचित भावना रहेगी और न आन्ध्र, तामिल, कर्नाटक या मलाबार वालों के बीच भाषा के न-कुछ-से झगड़े होंगे। सबर्णों और हरिजनों, हिन्दुओं और मुसलमानों और पारसी, ईसाई या सिक्खों के बीच द्वेष बढ़ानेवाला भेद-भाव भी न रहेगा। इसी तरह समूह-समूह के बीच या एक ही समूह के सदस्यों के बीच निजी फायदे के लिए या हुकूमत के लिए छीना-झपटी या आपसी झगड़े भी न होंगे।

हमारे अन्दर का प्रकाश बाहर फैलना चाहिए। अगर हम ईश्वर के साथ एकरस हुए हों, तो भीड़ कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उसमें पूरी-पूरी शान्ति और व्यवस्था रह सकती है और कमजोर-से-कमजोर भी पूरी सलामती महसूस कर सकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ईश्वर के साक्षात्कार के फल-स्वरूप मनुष्य को दुनिया के सभी भयों से मुक्त हो जाना चाहिए। राजनीतिक गुलामी और ईश्वर की शरण दोनों बे-मेल चीजें हैं, गुलाम के लिए मोक्ष, मुक्ति या नजात है ही नहीं।”

इसी प्रकार के भावों को लेकर महात्मा गांधी सामुहिक प्रार्थना की साधना में तल्लीन हुए। बम्बई के रूंगटा भवन में

सार्वजनिक प्रार्थना के लिए रामधुन करने लगे। रूंगटा भवन की सभा में कितने ही लोगों ने ताल देने में गड़बड़ी की। यह महात्मा गांधी को पसन्द नहीं आया। उन्होंने उपस्थित जनता को मीठा उलाहना देते हुए समझाया, “बम्बई के रहने वाले संगीत के शौक्तीन हैं। संगीत सीखने के यहाँ कई साधन हैं। इसलिए अगर बालकों को भी ताल देना न आये, तो इसमें मैं उनकी माताओं का ही दोष समझता हूँ।

मैंने आपको अनेक बार कहा है कि अगर हमें आज़ाद होना है, तो हमको हँसते-हँसते फाँसी चढ़ जाने की ताकत हासिल करनी पड़ेगी। मगर हर चीज़ के लिए उसका वक्त होता है। हम हँसने के समय हँसें और गम्भीर होने के समय गम्भीर रहें। बे-वक्त की हँसी असभ्यता समझी जाती है। इसी तरह गम्भीर रहने के समय खिल-खिलाना अशिष्टता का सूचक है।

हम हिन्दू हों या मुसलमान, पारसी हों या यहूदी या सिक्ख, सब एक ही ईश्वर की सन्तान हैं। दिन के चौबीसों घंटे हमको उसका नाम लेना चाहिए। लेकिन अगर ऐसा न कर सकें, तो कम-से-कम प्रार्थना के समय तो सब इकट्ठे होकर उसका नाम लें। सामुहिक प्रार्थना सारी मानव-जाति को एक कुटुम्ब समझने की शिक्षा देने का अच्छे-से-अच्छा साधन है। सामुहिक रामधुन और ताल उसकी बाहरी निशानी है। अगर उनका रूप सिर्फ यांत्रिक न हो, बल्कि उनके जरिये हृदय की एकता की गूँज उठती हो, तो उससे जो ताकत और उसका वातावरण पैदा होता है, उसको शब्दों द्वारा नहीं, बल्कि अनुभव से ही समझा जा सकता है।

जब हम पुलिस और फौज में भरती होते हैं, तो हमको क़्वायद सिखाई जाती है। हथियार चलाने की शिक्षा देना फौजी अनुशासन का ज़रूरी हिस्सा समझा जाता है। इसका मकसद

दुश्मन को मारने की लियाकत हासिल करना होता है। कौजी क्रायद में हुक्म के मुताबिक कूच करना, सामुहिक तरीके से, ज़रा भी आवाज किये बिना, ताल के साथ धिलना-डुलना आदि बातें शामिल होती हैं। इसी तरह अहिंसक संगठन में सामुहिक रूप से एक हृदय और एक तार होकर रामधुन और ताल लगाना जरूरी होता है। यह सलाह तभी फायदेमन्द साबित होगी, जब हम केवल बुद्धि से ही नहीं, बल्कि हृदय से भी इसको मानेंगे। कोरी, सूखी बुद्धि हमको बहुत दूर नहीं ले जायगी।”

६-ईश्वर और अहिंसा

महात्मा गाँधी को सुझाते हुए किसी सज्जन ने यह आग्रह किया, “आत्मकथा को जहाँ से आपने छोड़ा है, वहाँ से आगे शुरू कर दें और अहिंसा का शास्त्र भी लिखें या किसी से लिखवायें।”

इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए महात्मा गाँधी ने इस प्रकार कहा था, “आत्मकथा तो मैंने लिखी ही नहीं। ‘सत्य के प्रयोग’ नाम की एक लेख-माला लिखी है और एक किताब को शकल में छपी है। प्रयोगों की उस माला को पूरी किये पच्चीस साल हो गये। उसके बाद क्या किया, क्या सोचा, सो सिलसिले में दिया नहीं गया है। यह सब लिखना मुझे अच्छा लगेगा, लेकिन इसका दार-मदार फुरसत पर है। कठिन परिस्थिति में कर्तव्य समझ कर “हरिजन” शुरू किया है। उसका काम मुश्किल से कर पाता हूँ। ऐसी हालत में सत्य के जो प्रयोग हुए हैं, उनको सोच निकालने के लिए जैसी फुरसत चाहिए, वह नहीं मिल रही। लेकिन अगर भगवान उन्हें लिखवाना चाहेगा, तो वह रास्ता भी सुझायेगा।

अहिंसा का शास्त्र लिखना मेरे लिए नामुमकिन है। मैं शास्त्रकार नहीं। मैं तो कर्मी—काम करने वाला—हूँ। जैसा मुझे आता है, वैसा कर्म धर्म समझ कर करता चलता हूँ। इसलिए मेरा सारा काम सेवा-भाव से प्रेरित होता है। उसमें से शास्त्र की रचना की जा सकती हो, तो भले की जाय। X X X X संसार को शास्त्र की भूख नहीं। सच्चे कर्म की है और हमेशा रहेगा। X X X इसका सार यह निकलता है कि किलहाल ऐसे (अहिंसा) के शास्त्र की ख़तरत नहीं। मेरे जीते-जी जो लिखा जायगा, वह अधूरा होगा। अगर उसका लिखा जाना मुमकिन हो, तो भले वह मेरे मरने पर लिखा जाय। और लिखा गया, तो भी मैं चेतावनी दिये देता हूँ कि उसमें पूर्ण अहिंसा के दर्शन नहीं हो सकेंगे। ईश्वर का पूरा-पूरा वर्णन अभी तक कोई नहीं कर सका। यही अहिंसा के लिए भी कहा जा सकता है। मैं खुद जिसे आज मानूँ या करूँ उसे कल मानूँगा या करूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं कर सकता। यह काम त्रिकालदर्शी भगवान् का है। देहधारी मनुष्य तो सदा-सर्वदा अपूर्ण ही है। उसे भगवान् की उपमा चाहे दी जाय, पर वह भगवान् तो हरगिज नहीं। भगवान् अदृश्य है, अदृष्ट है। इसलिए जिसे हम सन्त पुरुष मानते हैं, उसके वचनों को और आचरण का समझें, और जो चोख हमारे दिल में बस जाय, उसके अनुसार अपना आचरण बनायें। शास्त्र और क्या करेगा?

७—कुदरती इलाज तो रामनाम ही है

प्राकृतिक चिकित्सा या कुदरती इलाज के सम्बन्ध में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी ने इस प्रकार कहा

था, “कुदरती इलाज या उपचार का अर्थ है ऐसे उपचार या इलाज जो मनुष्य के लिए योग्य हों। मनुष्य यानी मनुष्य-मात्र। मनुष्य में मनुष्य का शरीर तो है, लेकिन उसमें मन और आत्मा भी है। इसलिए सच्चा कुदरती इलाज तो रामनाम ही है। इसी लिए रामबाण शब्द निकला है। रामनाम ही रामबाण इलाज है। मनुष्य के लिए कुदरत ने उसी को योग्य माना है। कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से रामनाम ले, तो व्याधि नष्ट होनी चाहिए। रामनाम यानी ईश्वर, खुदा, अल्लाह, गॉड। ईश्वर के अनेक नाम हैं। उनमें से जो जिसे ठीक लगे, उसे वह ले, लेकिन उसमें हार्दिक श्रद्धा हो और श्रद्धा के साथ प्रयत्न हो। वह कैसे ?

तो जिस चीज का मनुष्य पुतला बना है, उसी से इलाज ढूँढ़े। पुतला पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायु का बना है। इन पांच तत्वों से जो मिल सके, सो ले। उसके साथ रामनाम चलता रहे। नतीजा यह आता है कि इतना होते हुए भी शरीर का नाश हो, तो होने दे और हृष-पूर्वक शरीर छोड़ दे। दुनिया में ऐसा कोई इलाज नहीं निकला है, जिससे शरीर अमर बन सके। अमर तो आत्मा ही है। उसे कोई मार नहीं सकता। उसके लिए शुद्ध शरीर पैदा करने का प्रयत्न सब करें। उसी प्रयत्न में कुदरती इलाज अपने आप मर्यादित हो जाता है। दुनिया के असंख्य लोग दूसरा कर भी नहीं सकते। और जिसे असंख्य नहीं कर सकते, उसे थोड़े क्यों करें ?

महात्मा गांधी की इस विचार-धारा से आश्चर्य-चकित होकर जब लोग तरह-तरह के प्रश्न करने लगे तब उन सब का उत्तर देने की इच्छा से उन्होंने कहा था, “ऐसे सवाल पूछे जा रहे हैं, क्या मेरे पास काम कम था ? क्या मैं बूढ़ा नहीं हो गया हूँ ? क्या कोई नये काम की मुझसे आशा कर सकते हैं ? ये सब

सवाल किये जाने लायक हैं। मेरे लिए भी सोचने लायक हैं। लेकिन मुझे भीतर से एक ही जवाब मिलता है। भीतर बैठा हुआ ईश्वर कहता है; 'दूसरे कुछ भी कहें, तुम्हें उससे क्या? डाक्टर दीनशा जैसा साथी मैंने तुम्हें दिया है। तुम दोनों एक-दूसरे को पहचानते हो। तुम्हें अपनी ताकत पर एतबार है। बरसों कुदरती इलाज तेरा शौक रहा है। तेरे पास इतनी पूँजी है। उसे छिपाकर तू चोर बनेगा क्या? तेरे लिए यह अच्छा नहीं होगा। ईशोपनिषद् का पहला मंत्र याद कर। जो तेरे पास है, उसे तू दे दे। तेरे पास तेरा है क्या? जो तू अपना समझता था वह तेरा था नहीं, और है नहीं। सब मेरा है। यह जो तेरे पास बाकी है वह भी तू मेरे लोगों को दे दे। ऐसा करने से तेरे दूसरे काम में हर्ज नहीं होगा। शर्त यह है कि तू सब कुछ अनासक्त होकर करेगा। तूने १२५ वर्ष तक ज़िन्दा रहने की इच्छा की है। इच्छा पूरी हो या न हो, तुम्हें क्या? तुम्हें अपना धर्म समझना है। उसका पालन किया कर और जीवन आनन्द से चलाता जा।' .

ऐसी बात मेरे कानों में गूँज रही है। इस देहात में आज मेरा तीसरा दिन है। मरीज आते रहते हैं। बढ़ते जाते हैं। वे खुश रहते हैं। मैं भी उनकी सेवा करके खुश रहता हूँ, यहाँ के लोग साथ दे रहे हैं। मैं जानता हूँ कि अगर लोगों के हृदय में मैं प्रवेश कर सकूँगा, तो दर्द का नाश होगा ही। इस देहात को और देहातियों को साफ बनाना है। ऐसा कुछ न बन पाये तो मुझे क्या? मैं तो हाकिम के हुक्म का ताबेदार हूँ।”

कुदरती इलाज के सम्बन्ध में जब वैद्यराज श्री गणेशशास्त्री जोशी ने महात्मा गाँधी से बातें की और चार मंत्र लिखकर दिये तब प्रसन्नता प्रकट करते हुए महात्मा गाँधी ने इस आशय का एक लेख प्रकाशित किया था, “यह देखकर कि कुदरती इलाजों

मैं मैंने राम नाम को रोग मिटाने वाला माना है और इस सम्बन्ध में कुछ लिखा भी है, वैद्यराज श्री गणेशशास्त्री मुभसे कहते हैं कि इसके सम्बन्ध का और इससे मिलता-जुलता साहित्य आयुर्वेद में ठीक-ठीक पाया जाता है। रोग को मिटाने में कुदरती इलाज का अपना बड़ा स्थान है और उसमें भी रामनाम विशेष है। यह मानना चाहिए कि जिन दिनों चरक, वाग्भट वगैरह ने लिखा था, उन दिनों ईश्वर को रामनाम के रूप में पहचानने की रूढ़ि पड़ी नहीं थी। यह विष्णु के नाम की महिमा थी। मैंने तो बचपन से रामनाम के जरिये ही ईश्वर को भजा है। लेकिन मैं जानता हूँ कि ईश्वर को ॐ के नाम से भजो या संस्कृत, प्राकृत से लेकर इस देश की या दूसरे देश की किसी भी भाषा के नाम से उसको जपो, परिणाम एक ही होता है। ईश्वर को नाम की जरूरत नहीं। वह और उसका कायदा दोनों एक ही हैं। इसलिए ईश्वरी नियमों का पालन ही ईश्वर का जप है। अतएव केवल तात्त्विक दृष्टि से देखें, तो जो ईश्वर की नीति के साथ तदाकार हो गया है, उसे जप की जरूरत नहीं। अथवा जिसके लिए जप या नाम का उच्चारण साँस-उसाँस की तरह स्वाभाविक हो गया है, वह ईश्वरमय बन चुका है, यानी ईश्वर की नीति को वह सहज ही पहचान लेता है, और सहज भाव से उसका पालन करता है। जो इस तरह बरतता है, उसके लिए दूसरी दवा की जरूरत क्या ?

ऐसा होने पर भी जो दवाओं की दवा है, यानी राजा दवा है, उसी को हम कम-से-कम पहचानते हैं। जो पहचानते हैं, वे उसे भजते नहीं, और जो भजते हैं, वे सिर्फ ज्ञान से भजते हैं, दिल से नहीं। इस कारण वे तोते के स्वभाव की नक़ल भर करते हैं, अपने स्वभाव का अनुसरण नहीं। इसलिए वे सब ईश्वर को “सर्व रोग हारी” के रूप में नहीं पहचानते।

पहचानें भी कैसे ? यह दवा न तो वैद्य उन्हें देते हैं, न हकीम और न डाक्टर । खुद वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों को भी इस पर आस्था नहीं । यदि वे बीमारों को घर बैठे गंगा-सी यह दवा दें, तो उनका धन्धा कैसे चले ? इसलिए उनकी दृष्टि में तो उनकी पुड़िया और शीशी ही रामबाण दवा है । इस दवा से उनका पेट भरता है और रोगी को हाथों हाथ फल भी देखने को मिलता है । “फलों फलों ने मुझको चूरन दिया और मैं अच्छा हो गया”, कुछ लोग ऐसा कहने वाले निकल आते हैं और वैद्य का व्यापार चल पड़ता है ।

वैद्यों और डाक्टरों के रामनाम रटने की सलाह देने से रोगी का दिलिहर दूर नहीं होता । जब वैद्य खुद उसके चमत्कार को जानता है, तभी रोगी को भी उसके चमत्कार का पता चल सकता है । रामनाम पोथी का बैंगन नहीं, वह तो अनुभव की प्रसादी है । जिसने उसका अनुभव प्राप्त किया है, वही यह दवा दे सकता है, दूसरा नहीं ।

वैद्यराज ने मुझे चार मंत्र लिखकर दिये हैं । उनमें चरक ऋषि वाला मंत्र सीधा और सरल है । उसका अर्थ यों है:— चराचर के स्वामी विष्णु के हजार नामों में से एक का भी जप करने से सब रोग शान्त होते हैं ।

विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचर-पतिं विभुम् ।

स्तुवन्नाम सहस्रेण ज्वरान् सर्वान् व्यपोहति ॥

(चरक चिकित्सा अ० ३—श्लोक ३११)

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के नवीन विचारों पर अनेक विचारशील व्यक्ति आश्चर्य करने लगे और कहने लगे कि महात्मा गाँधी का इस प्रकार रामनाम के प्रति विश्वास क्यों होने लगा है ? क्या यह सत्य है कि रामनाम से बढ़ कर संसार में लोक-कल्याण के लिए और कोई दूसरी रामबाण दवा नहीं

है। महात्मा गाँधी तो सत्य के पुजारी, सत्य के प्रचारक और सत्य के ही स्वरूप हैं। वे कभी अनर्गल विचार प्रकट नहीं करेंगे। वे चाहते हैं कि प्रत्येक तत्त्व को बुद्धि से समझ लेना चाहिए। “दया और निर्दयता” से सम्बन्ध रखने वाले विचारों को प्रकट करते हुए भी उन्होंने ऐसा ही कहा था अर्थात् उनके कहने का आशय यह था कि अहिंसा की शक्ति को बुद्धि से जान लेना चाहिए। जब वे जीवन के हर एक विषय अथवा उसके तत्त्व को बुद्धि से जान लेने का उपदेश करते हैं तब रामनाम पर भी उनका वही उपदेश स्वीकार कर लेना चाहिए।

इसमें सन्देह नहीं कि वे अपने विचारों पर अटल रहते हैं और इसीलिए कि वे जो कुछ कहते हैं उस पर पहले से ही पूर्ण रूप से मनन कर लेते हैं। देखिये न, कि अहिंसा की शक्ति को उन्होंने किस प्रकार दृढ़ता-पूर्ण भावना के साथ समझा है तभी तो उस पर जोर देते हुए इस प्रकार कहा है :—

“दया की निर्दयता के सामने, अहिंसा की हिंसा के सामने, प्रेम की द्वेष के सामने, और सत्य की झूठ के सामने ही परीक्षा हो सकती है। यह बात सही हो, तो यह कहना शलत होगा कि खूनी के सामने अहिंसा बेकार है। हाँ, यों कह सकते हैं कि खूनी के सामने अहिंसा का प्रयोग करना अपनी जान देना है। लेकिन इसी में अहिंसा की परीक्षा है। विशेषता इसकी यह है कि जो लाचारी से मर जाता है, वह अहिंसा की परीक्षा में पास नहीं होता। जो मरते हुए भी खूनी पर क्रोध नहीं करता, और मन में उसके लिए भी ईश्वर से क्षमा माँगता है, वही अहिंसक है। ईसा मसीह के बारे में इतिहास यही कहता है। जिन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया, मरते-मरते भी उसने उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की; ‘हे ईश्वर ! जिन्होंने मुझे सूली पर चढ़ाया है, उन्हें तू माफ़ करना।’ ऐसी दूसरी मिसाल सब धर्मों में मिल

सकती हैं। लेकिन क्राइस्ट की यह बात सारे संसार में मशहूर है।

यह एक अलग बात है कि ऊपर बताई हुई हद तक हमारी अहिंसा न पहुँची हो। अपनी कमजोरी के कारण या इसलिए कि हमें अनुभव नहीं है, हम अहिंसा की भव्यता को नीचे न उतारें। यह ठीक नहीं होगा। हमारी समझ ही उल्टी हो, तो हम उसकी आखिरी चोटी तक नहीं पहुँच सकते। इसलिए अहिंसा की शक्ति को बुद्धि से जान लेना जरूरी है।”

जब महात्मा गाँधी की धारणा उनके अपने प्रत्येक विचार में इतनी दृढ़ है, तो क्या रामनाम के सम्बन्ध में दृढ़ न होगी? अवश्य होगी। अतएव उन्हीं से पत्र-व्यवहार कर शंकाओं का समाधान कर लेना चाहिए। ऐसा विचार निश्चय कर लेने के बाद नौजवानों के एक अध्यापक ने महात्मा गाँधी के पास इस आशय का एक पत्र लिखा —

(259)

“आप जो भी कुछ लिखते हैं, मैं बड़े चाव से उसका हर एक लफ्ज पढ़ता हूँ। ‘हरिजन’ का नया अंक मिलने पर जब तक उसे पूरा न पढ़ लूँ, मैं रुक नहीं सकता। नतीजा इसका यह होता है कि मेरे अन्दर एक अजीब खुशी पैदा हो जाती है, जो चाहती है कि मैं जिसकी पूजा करूँ वह मेरे तौर पर पूर्ण हो। कोई भी ऐसी चीज़ जिस पर विश्वास न जमे, मुझे बेचैन कर देती है। हाल ही आपने लिखा है कि कुदरती उपचार में रामनाम शर्तिया इलाज है। यह पढ़ कर तो मैं बिलकुल भ्रम में पड़ गया हूँ। आज के नौजवान अपनी सहनशीलता की वजह से आपकी बहुत-सी बातों का विरोध करना पसंद नहीं करते। वे सोचते हैं; “गांधी जी ने हमको इतनी सारी चीज़ें सिखाई हैं, हमें इतना ऊँचा उठाया है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे, इससे भी बढ़कर उन्होंने हमें स्वराज्य के नज़दीक पहुँचा दिया।

है, इसलिए रामनाम की उनकी इस भक्त को हमें बरदाश्त कर लेना चाहिए।'

"दूसरी चीजों के साथ आपने कहा है, "कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से रामनाम लें, तो व्याधि नष्ट होनी चाहिए।"

'सो जिस चीज का मनुष्य पुतला बना है, उसी से इलाज दूँ दे'। पुतला पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायु का बना है। इन पाँच तत्त्वों से जो मिल सके सो लें।'

.....और मेरा दावा है कि शारीरिक रोगों को दूर करने के लिए भी रामनाम सबसे बढ़िया इलाज है।'

'पहले पहल जब कुदरती उपचार में आपने इस चीज को दाखिल किया, तो मैंने समझा कि आप श्रद्धा के आधार पर चलने वाले मानसिक उपचार (साइको-थेरेपी)* अथवा क्रिश्चियन-साइन्स† को ही दूसरे लफ्जों में रख रहे हैं। उपचार की हर एक प्रणाली में इनका अपना स्थान होता है। ऊपर के अपने पहले उद्धरण की मैंने इसी मानी में व्याख्या की। ऊपर दिये हुए वाक्य को समझना कठिन है। आखिरकार इन पाँच महा-भूतों के बिना, जिनका जिक्र करते हुए आप कहते हैं कि सिर्फ वही उपचार के साधन होने चाहिए, दवाइयों का बनाना भी तो नामुमकिन है।

*साइको-थेरेपी—(मानसिक बिचार) मन के विश्लेषण और इच्छा-शक्ति की सहायता से कुछ शारीरिक और मानसिक बीमारियों को जड़ से मिटाने का शास्त्र।

†क्रिश्चियन सायन्स—श्रद्धा द्वारा की जाने वाली एक चिकित्सा का नाम। ईशु के स्पर्श से श्रद्धालु लोग चंगे हो जाते थे। नये करार में इसका जिक्र मिलता है। इसी पर 'फेथ हीलिङ्ग' रचा गया है। ख्याल यह है कि श्रद्धा से बीमारी दूर हो सकती है।

अगर आप श्रद्धा पर जोर देते हैं, तो मेरा कोई भगड़ा नहीं। रोगी के लिए जरूरी है कि वह अच्छा होने के लिए श्रद्धा भी रखे। लेकिन यह मान लेना मुश्किल है कि सिर्फ श्रद्धा से हमारे शारीरिक रोग भी दूर हो जायेंगे। दो साल पहले मेरी छोटी लड़की को 'इन्फेण्टाइल पैरेलिसिस' हो गया था। अगर आज के नये तरीकों से उसका इलाज न किया जाता, तो बेचारी हमेशा के लिए पंगु हो जाती। आप मानेंगे कि एक ढाई साल के बच्चे को 'इन्फेण्टाइल पैरेलिसिस' से मुक्त होने के लिए राम-नाम का जप बताकर हम उसकी मदद नहीं कर सकते और न तो एक माता को अपने बच्चे के लिए अकेले एक रामनाम का ही जप करने को आप राज़ी कर सकते हैं।

“२४ मार्च (सन् १९४६) के अंक में आपने चरक का जो प्रमाण दिया है, उससे मुझे कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता; क्योंकि आप ही ने मुझे सिखाया है कि कोई चीज़ कितनी ही पुरानी या प्रामाणिक क्यों न हो, अगर दिल को न जँचे, तो उसे नहीं मानना चाहिए।”

इस पत्र के आशय को समझ कर महात्मा गांधी ने अपने विचारों को इन शब्दों में प्रकट किया :—

“नौ जवानों के एक अध्यापक इस तरह लिखते हैं। विद्यार्थी-संसार का प्रिय बनने के लिए मैं उत्सुक तो हूँ, लेकिन मेरी उत्सुकता की अपनी मर्यादा है। एक बात तो यह है कि मुझे बाक्री दुनिया के साथ, जो दर असल बहुत बड़ी है; उन्हें भी खुश करना चाहिए। लेकिन एक लोक-सेवक को कभी भी किसी एक व्यक्ति या वर्ग के ऐशों का पोषण करके अपने को गिराना नहीं चाहिए।

जिन लोगों की तरफ से ये प्रश्नकर्ता लिख रहे हैं, अगर वे सचमुच यह सोचते हैं कि मैंने कोई ऐसा काम किया है, जिसकी

वजह से हिन्दुस्तान अनुमान से कहीं ज्यादा ऊँचाई पर पहुँच गया है, तो जिसे वे मेरी भक्त कहते हैं, उसे सहन कर लेना ही काफ़ी नहीं, बल्कि उन्हें उससे थोड़ा और आगे बढ़ना चाहिए। सहन कर लेने से ही उनका या मेरा कोई फ़ायदा नहीं होगा। इससे उनमें मुस्ती और मुझमें मूठा आत्म-विश्वास आसानी से बढ़ सकता है। किसी भी 'भक्त' को नामंजूर करने से पहले उम पर अच्छी तरह उन्हें सोच लेना चाहिए। भक्ती आदमी हमेशा घृणा के लायक नहीं होते। अपनी भक्त के कारण ही एक ज़माने में लोगों को फाँसी के तख्ते पर चढ़ना पड़ा है।

रामनाम में फ़ेथ-हीलिंग और क्रिश्चियन-सायन्स के गुण होते हुए भी वह उनसे बिल्कुल अलग है। रामनाम लेना तो उस सच्चाई का, जिसके लिए वह लिया जाता है, एक नमूना मात्र है। जिस वक्त कोई आदमी बुद्धि-पूर्वक अपने अन्दर ईश्वर का दर्शन करता है, उसी वक्त वह अपनी शारीरिक, मानसिक और नैतिक सब व्याधियों से छूट जाता है। यह कह कर कि हमें प्रत्यक्ष जीवन में कोई ऐसा आदमी नहीं मिलता, हम इस बयान की सच्चाई को मूठा नहीं ठहरा सकते। हाँ, जिन लोगों को ईश्वर-विश्वास नहीं, उनके लिए बेशक मेरी दलील बेकार है।

क्रिश्चियन साइन्टिस्ट, फ़ेथ-हीलिंग और साइको-थेरेपिस्ट अगर चाहें तो रामनाम में छिपी सच्चाई की गवाही दे सकते हैं। मैं दलील देकर पाठकों को ज्यादा नहीं बता सकता। जिसने कभी चीनी खाई नहीं, उसे कैसे समझाएँ कि चीनी मीठी होती है? उसे तो चीनी चखने के लिए ही कह सकते हैं।

इस पुण्य नाम का हृदय से जप करने के लिए जो जरूरी शर्तें हैं, उन्हें मैं यहाँ नहीं दोहराऊँगा।

चरक का प्रमाण उन्हीं लोगों के लिए फ़ायदेमन्द है, जो रामनाम में श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। दूसरे लोगों को हक़ है

कि वे उस पर विचार न करें।

बच्चे ग़ैर ज़िम्मेदार होते हैं। रामनाम उनके लिए बेशक नहीं है। वे तो माँ-बाप की दया पर जीने वाले बेबस जीव हैं। इससे हमें पता चलता है कि माँ-बाप की बच्चों के और समाज के प्रति कितनी भारी ज़िम्मेदारी है। मैं उन माँ-बापों को जानता हूँ जिन्होंने अपने बच्चों के रोगों के बारे में लापरवाही की है और यहाँ तक समझ लिया है कि उनके रामनाम लेने से ही वे अच्छे हो जायेंगे।

आखिर में सब दवाइयाँ पंच महाभूतों से बनी हैं, यह दलील देना विचारों की अराजकता जाहिर करता है। मैंने सिर्फ़ इस-लिए उसकी तरफ़ इशारा किया है कि वह दूर हो जाय।”

— — —

८—मूर्ति-पूजा का बेढंगा रूप

किसी एक व्याक्त ने, जिसे महात्मा गांधी के प्रति अटूट श्रद्धा थी, महात्मा गांधी के नाम का एक मंदिर बनवाया और उसमें महात्मा गाँधी की मूर्ति को स्थापित करके उसे राम और कृष्ण की मूर्तियों के समान पूजने लगा। धीरे-धीरे यह समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। किसी सज्जन ने उस पत्र की कतरन महात्मा गांधी के पास भेज दी। उस कतरन के समाचार को पढ़ कर महात्मा गांधी ने इस प्रकार अपने विचार प्रकट किये—

“एक भाई ने मुझे अखबार की एक कतरन भेज है। उसमें खबर है कि मेरे नाम का एक मंदिर बनवाया गया है और उसमें मेरी मूर्ति की पूजा की जाती है।

इसे मैं मूर्ति-पूजा का बेढंगा रूप मानता हूँ। जिसने यह मंदिर बनवाया, उसने अपने पैसे बर्बाद किये, गाँव के भोले लोगों

को गलत रास्ता दिखाया और मेरे जीवन का गलत खाका खींच कर मेरा अपमान किया। इससे पूजा का अर्थ सिद्ध नहीं होता, उल्टे, अनर्थ होता है। अपने गुज़ारे के लिए या स्वराज्य के लिए यज्ञ के रूप में कातना ही मेरे विचार में सच्ची चरखा पूजा है।”

तोते की तरह गोता का पारायण करने के बदले उसके उपदेश के अनुसार आचरण करना सच्ची गीता-पूजा है। गीता-पाठ भी उसी हद तक मुनासिब माना जायगा, जिस हद तक वह गीता के उपदेश के अनुसार आचरण करने में मददगार हो। मनुष्य की कमजोरी का नहीं, बल्कि उसके गुणों का अनुकरण ही उसकी सच्ची पूजा है।

जिन्दा आदमी की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने से हम हिन्दू धर्म को पतन की आखिरी सीढ़ी पर पहुँचा देते हैं। मौत से पहले किसी आदमी को पूरी तरह अच्छा नहीं कहा जा सकता और मौत के बाद भी जिसे उस आदमी में आरोपित गुणों में विश्वास होगा, वही उसे अच्छा कहेगा। सच तो यह है कि अकेला एक ईश्वर ही मनुष्य के हृदय को जानता है। इसलिए किसो जिन्दा या मरे हुए आदमी को पूजने के बदले जो पूर्ण है और सत्य स्वरूप है, उस ईश्वर को पूजने और उसी का भजन करने में सुरक्षितता है।

यहाँ यह सवाल जरूर उठ सकता है कि फोटो रखना भी पूजा का ही एक प्रकार है या नहीं? इसके बारे में मैं पहले लिख चुका हूँ। फोटो रखने का रिवाज भी खर्चीला तो है, मगर उसे निर्दोष समझ कर मैं अब तक उसको बर्दाश्त करता आया हूँ। अगर उसकी वजह से मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीति से मूर्ति-पूजा को तनिक भी बढ़ावा देता होऊँ, तो उसे भी हास्यास्पद और हानि-कारक समझ कर छोड़ दूँगा।

मंदिर के मालिक मूर्ति को हटाकर उस मंदिर में खादी का

केन्द्र खोलें, तो वह सब तरह इष्ट होगा और क्लिष्टाल जो पाप वह कर रहे हैं, उससे बच जायेंगे। उस मकान में गरीब लोग मजदूरी के लिए धुनें और कातें। दूसरे यज्ञ के लिए धुनें और कातें। सब खादी पहनने लगे। यही गीता का कर्मयोग है। जीवन में इसका आचरण करने से गीता की और मेरी सच्ची पूजा की जा सकेगी। दूसरी पूजा हानि-कारक है और इसलिए छोड़ने लायक है।”



६-ईश्वर की उपासना और सत्याग्रह

एक बार बम्बई के शिवाजी पार्क में जिस समय महात्मा गांधी ने प्रवेश किया, देखते हैं कि लाखों की तादाद में जनता उपस्थित है। और वह भी केवल प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिए। ऐसी श्रद्धालु जनता के सामने सामुहिक प्रार्थना में रामधुन के महत्व का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा था—

सामुहिक प्रार्थना में रामधुन का गाया जाना प्रार्थना का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। लाखों करोड़ों के लिए गीता के श्लोकों, कुरान की आयतों और जेन्दअवस्ता के मन्त्रों को समझना और उनका सही-सही पाठ करना कठिन हो सकता है, लेकिन राम नाम या भगवान के नाम को गाने में तो हर कोई शामिल हो सकता है। राम नाम जितना कारगर है उतना ही सादा भी। शर्त यह है कि वह दिल से निकलना चाहिए। इस सादगी में ही महानता और विश्व व्यापकता का रहस्य समाया हुआ है। जिस काम को करोड़ों लोग एक साथ कर सकते हैं, उसमें एक बेजोड़ ताकत पैदा हो जाती है।”

समूह रूप से रामधुन गाने की कोई तालीम आपको पहले से मिली नहीं थी, फिर भी आज आपने जिस कामयाबी के साथ उसे गाकर दिखाया, उसके लिए मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। लेकिन उसमें और भी सुधार किये जा सकते हैं। आपको अपने घरों में भी इसका अभ्यास करना चाहिए। मैं आपसे कहूँगा कि जब रामधुन स्वर और ताल के साथ गाई जाती है, तो स्वर, ताल और विचार तीनों का मेल मिठास और शक्ति का एक ऐसा अमिट वातावरण पैदा करता है, जिसका शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता।

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह की लड़ाई शुरू करने के कुछ ही पहिले मैंने सामुहिक प्रार्थना का यह रिवाज शुरू किया था। उन दिनों अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के सामने एक बड़ा संकट मुँह बाये खड़ा था। इन्सान के किये जितना हो सकता है, सो सब हमने किया। न्याय पाने के सभी तरीकों को आजमाया गया—अस्त्रबारों और सभाओं के जरिये आन्दोलन किया गया, अर्जियाँ भेजी गईं, डेपुटेशन ले जाये गये—लेकिन कोई नतीजा न निकला। उन दिनों दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले हिन्दुस्तानियों में ज़दादातर वे मुठ्ठी भर गिरमिटिया मजदूर थे, जो पढ़ना-लिखना भी नहीं जानते थे और उनके साथ कुछ थोड़े-से 'स्वतंत्र व्यापारी' और फेरीवाले वगैरह लोग थे। वहाँ के हस्सियों और गोरों की बहुत बड़ी तादाद के बीच ये हिन्दुस्तानी क्या करते? गोरे सब तरह के हथियारों से लैस थे। ज़ाहिर था कि अगर हिन्दुस्तानियों को अपनी स्थिति सँभालनी थी, तो उनको अपने लिए ऐसा कोई हथियार तैयार कर लेना ज़रूरी था, जो वहाँ के गोरे बाशिन्दों की ताकत से बिल्कुल अलग ढंग का होते हुए भी उससे बेहद बड़ा-चढ़ा हो। यही वह मौका था, जब मैंने फिनिक्स और टॉल्सटॉय आश्रमों में सामुहिक प्रार्थना को सत्याग्रह या

आत्मबल के हथियार के उपयोग की तालीम के रूप में शुरू किया था ।

सत्याग्रह की जड़ में प्रार्थना है । पाशवी शक्ति के अत्याचारों से बचने के लिए सत्याग्रही ईश्वर पर भरोसा रखता है । ऐसी हालत में आपको हमेशा इस बात का डर क्यों रहना चाहिए कि अंग्रेज या दूसरा कोई आपको धोखा देगा—ठग लेगा ? अगर कोई आपको ठगता है तो नुकसान उसी का है । सत्याग्रह को लड़ाई तो आत्मवीरों के लिए है, डरपोकों या अश्रद्धालुओं के लिए नहीं । सत्याग्रह तो हमको जीने और मरने की कला सिखाता है मनुष्यों की दुनिया में लोगों का पैदा होना और मरना तो लाजिमी है । मनुष्य में पशु से अलग करनेवाली उसकी वह सजग बोशिश है, जिसके जरिये वह अपनी आत्मा का साक्षात्कार किया चाहता है । गीता के दूसरे अध्याय के अठारह श्लोकों में, जो प्रार्थना के समय पढ़े जाते हैं, जीवन की कला का सार समाया हुआ है । भगवान् कृष्ण ने अर्जुन के सवाल का जवाब देते हुए इन श्लोकों में स्थितप्रज्ञ का यानी सत्याग्रही का वर्णन किया है ।

*प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतभृहः ।

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।

नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानि व सर्वशः ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।

जीवन की कला के परिपाक रूप में मरण की कला भी आती है । मनुष्यमात्र को मरना तो है ही । आदमी बिजली के गिरने

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥
 यततोह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
 इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥
 तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
 वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥
 ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गतेषूपजायते ।
 सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
 क्रोधान्भवति संमोहः संमोहात्समृति विभ्रमः ।
 समृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥
 रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
 आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥
 प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योप जायते ।
 प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥
 नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
 न चाभावयतः शान्तिरशास्तर्य कुतः सुखम् ॥
 इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
 तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥
 तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।
 इन्द्रियाणीन्द्रियार्थैर्भ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।
 या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
 यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥
 आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
 तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥
 विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।

से मर सकता है, दिल की धड़कन के रुक जाने से मर सकता है, या साँस रुकने से भी मर सकता है। लेकिन कोई सत्याग्रही अपने लिए ऐसी मौत को न तो कामना करता है, न प्रार्थना। सत्याग्रही के लिए मरने की खूबी—कला—इस बात में है कि वह अपने कर्तव्य का पालन करते हुए हँसते-हँसते मौत का सामना करे। जाहिर है कि बम्बई के लोगों ने अभी इस कला को सीखा नहीं है। अपने दुश्मन को न मारने या उसको चोट न पहुँचाने की चाह रखना ही काफी नहीं है। अगर आपका दुश्मन मारा जा रहा है, और आप चुपचाप, तटस्थ भाव से खड़े, इस चीज को देख रहे हैं, तो कहना होगा कि आप सत्याग्रही नहीं हैं। आपका धर्म है कि आप अपनी जान देकर भी उसे बचायें। अगर हिन्दुस्तान के हजारों लोग इस कला को सीख लें, तो हिन्दुस्तान का सारा नक़्शा ही बदल जाय और फिर किसी को घृणा के साथ अंगुली उठाकर यह कहने की हिम्मत न पड़े कि हिन्दुस्तान की अहिंसा उसकी कमजोरी को ढकने या छिपाने का साधन है। उस हालत में हम लूट-पाट और खून-खराबी वगैरह के लिये गुण्डों को दोष देने की

निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥

एषा ब्राह्मी स्थितः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।

स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

गीता के दूसरे अध्याय के अठारह श्लोक यही हैं जिनका कि उल्लेख ऊपर किया गया है। इन श्लोकों का अर्थ वास्तव में क्या है इसे तो मननशील पाठक ही समझ सकेंगे किन्तु साधारण जनता के बोध को जगाने के लिए हम केवल साधारण शाब्दिक अर्थ दे रहे हैं क्योंकि भावार्थ तो अपने-अपने स्वतंत्र भावों के अनुसार ही सन्तोषजनक हो सकेगा। अस्तु—

कोशिश नहीं करेंगे। बल्कि हम गुण्डों पर भी काबू पा लेंगे और उनको भले आदमी बना देंगे।

हम अपने इतिहास के बहुत नाजुक समय में गुजर रहे हैं। चारों तरफ हम खतरों से घिरे हैं। लेकिन अगर हम सत्याग्रह की शक्ति को, जिससे बढ़कर कोई शक्ति दुनिया में नहीं, ठीक से समझ लें, तो हम अपने संकट को भी सुअवसर में बदल डालें।'

“हे केशव ! समाधि में स्थित स्थिर-बुद्धिवाले पुरुष का क्या लक्षण है ? और स्थिर-बुद्धिवाला पुरुष किस प्रकार बोलता है ? किस प्रकार बैठता है ? और किस प्रकार चलता है ?” अर्जुन द्वारा किये गये इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्रीकृष्ण ने उपर्युक्त अठारह श्लोकों में इस प्रकार कहा—

“हे पार्थ ! (परमानन्द रूप) आत्मा में स्वयं तुष्ट रह कर जिस समय (योगी) मनोगत समस्त कामनाओं का त्याग कर देता है उस समय उसे स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। दुःखों के प्राप्त होने पर जो उद्वेग रहित बना रहता है, सुखों की प्राप्ति के लिए जिसमें किंचिन्मात्र भी स्पृहा नहीं रह गई है और जिसके मन के राग, भय और क्रोध नष्ट हो चुके हैं, ऐसे मुनि को स्थिर बुद्धिवाला कहा जाता है। जो पुरुष सर्वत्र स्नेह-रहित हुआ, उस-उस शुभ तथा अशुभ वस्तु को प्राप्त होकर न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर रहती है। जिस प्रकार कछुआ अपने अङ्गों को समेट लेता है, उसी प्रकार जो पुरुष जब सब ओर से अपनी इन्द्रियों को इन्द्रियों के विषयों से समेट लेता है तब वह पुरुष स्थिर-बुद्धिवाला हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि इन्द्रियों के द्वारा विषयों को न ग्रहण करने वाले पुरुष के केवल विषय ही निवृत्त हो जाते हैं किन्तु राग नहीं निवृत्त होता परन्तु स्थिर-बुद्धि वाले पुरुष का राग भी परमात्मा को साक्षात् करके निवृत्त हो जाता है। और हे अर्जुन ! (यह प्रायः देखा

१०—प्रार्थना का रहस्य और रामनाम

जब महात्मा गांधी से, “क्या दिल में रामनाम रखना काफी नहीं ? उसे ज़बान से बोलने में कुछ है ?” इस प्रकार के प्रश्न किये गये थे तब उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था, “रामनाम लेने

गया है कि) प्रयत्न करते हुए बुद्धिमान् पुरुष के भी मन को यह प्रमथन स्वभाववाली इन्द्रियाँ बलात्कार से हर लेती हैं, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि उन सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण स्थित होवे, क्योंकि जिस पुरुष की इन्द्रियाँ उसके वश में होती हैं, उसकी ही बुद्धि स्थिर होती है। इतना ही नहीं, यदि मन के सहित इन्द्रियाँ को अपने वश में करके मेरे परायण न हो सका तो मन के द्वारा विषयों का चिन्तन करनेवाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है और आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोध से अविवेक अर्थात् मूढ़ भाव उत्पन्न होता है और अविवेक से स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है और स्मृति के भ्रमित हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञान-शक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश होने से यह पुरुष अपने श्रेय साधन से गिर जाता है।

परंतु स्वाधीन अन्तःकरण वाला पुरुष राग-द्वेष से रहित अपने वश में की हुई इन्द्रियों द्वारा विषयों को भोगता हुआ अन्तःकरण की प्रसन्नता अर्थात् स्वच्छता को प्राप्त होता है और उस प्रसन्नता के होने पर ऐसे पुरुष के सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और ऐसे प्रसन्न चित्तवाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छे प्रकार स्थिर हो जाती है।

में खूबी है, ऐसा मैं मानता हूँ। जो आदमी जानता है कि राम सचमुच उसके दिल में है, उसे रामनाम का उच्चारण करने की

और हे अर्जुन ! साधना रहित पुरुष के अन्तःकरण में श्रेष्ठ बुद्धि नहीं होती है और उस अयुक्त के अन्तःकरण में आश्रितिक भाव भी नहीं होता है और बिना आश्रितिक भाव वाले पुरुष को शांति भी नहीं होती, फिर शान्ति रहित पुरुष को सुख कैसे प्राप्त हो सकता है ! क्योंकि जिस प्रकार जल में वायु नाव को हर लेता है उसी प्रकार विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों के बीच में जिस इन्द्रिय के साथ मन रहता है, वह एक ही इन्द्रिय इस अयुक्त पुरुष की बुद्धि को हरण कर लेती है। इसीलिए हे महाबाहो ! जिस पुरुष की इन्द्रियाँ सब प्रकार इन्द्रियों के विषयों से वश में की हुई होती हैं, उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

हे अर्जुन ! सम्पूर्ण भूत प्राणियों के लिए जो रात्रि है उस नित्य शुद्ध बोध स्वरूप परमानन्द में भगवत् को प्राप्त हुआ योगी पुरुष जागता है और जिस नाशवान् क्षण भंगुर सांसारिक सुख में सब भूत प्राणी जागते हैं, तत्त्व को जानने वाले मुनि के लिए वह रात्रि है। और जैसे सभी ओर से परिपूर्ण अचल प्रतिष्ठा वाले समुद्र के प्रति भिन्न-भिन्न नदियों के जल, उसको चलायमान न करते हुए ही समा जाते हैं, वैसे ही जिस स्थिर-बुद्धि पुरुष के प्रति सम्पूर्ण भोग किसी प्रकार का विकार उत्पन्न किये बिना ही समा जाते हैं, वह पुरुष परमशान्ति को प्राप्त होता है, न कि भोगों को चाहने वाला।

क्योंकि जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर, भमता रहित, अहंकार-रहित और स्पृहा रहित हुआ बर्तता है, वह शान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन ! यह ब्रह्म को प्राप्त हुए पुरुष की स्थिति है, इसको प्राप्त होकर वह मोहित नहीं होता है और अन्तकाल में भी इस निष्ठा में स्थित होकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो जाता है।”

जरूरत नहीं, यह मैं क्रबूल कर सकता हूँ। लेकिन ऐसे आदमी को मैं नहीं जानता। इससे उलटा मुझे जाती अनुभव है कि रामनाम के रटने में कुछ चमत्कार है। वह क्यों और कैसे, यह जानने की जरूरत नहीं।”

इसी प्रकार प्रार्थना का रहस्य बतलाते हुए भी उन्होंने कहा था, “अब इसमें कोई शक नहीं मालूम होता कि कुछ ही समय में हिन्दुस्तान राजनीतिक आजादी पा जायगा। इस आजादी में हम प्रार्थना के साथ प्रवेश करें। प्रार्थना फुरसत के वक्त बुढ़िया के दिल-बहलाव की चीज नहीं। अगर उसके रहस्य को ठीक-ठीक समझ लिया जाय और उसका ठीक-ठीक इस्तेमाल किया जाय, तो वह हमको काम करने की अजीब ताकत देती है।

तो अब हम प्रार्थना करें और यह जान लें कि अहिंसा का रहस्य क्या है और उसके जरिये हासिल की गई आजादी को कैसे टिकाया जा सकता है। अगर हमारी अहिंसा कमजोरों की है, तो यह समझ लेना चाहिए कि ऐसी अहिंसा से आजादी टिकाई नहीं जा सकेगी। इसी से यह भी साबित होता है कि एक लम्बे अरसे तक हम हथियारों के जरिये अपनी हिफाजत करने की ताकत नहीं पा सकेंगे। हमारे पास न हथियार हैं और न उनकी जानकारी है। हममें जरूरी अनुशासन भी नहीं। नतीजा यह होगा कि हमको दूसरे राष्ट्र की मदद पर मदार रखना पड़ेगा और सो भी बराबरी के नाते नहीं, बल्कि शिष्य और गुरु के नाते। इस खयाल से कि, ‘हलके दर्जे के’ शब्द कानों को कठोर लगेगा, उसका इस्तेमाल नहीं किया है।

इसलिए साफ तौर पर यह महसूस किया जाना चाहिए कि आजादी हासिल करने की तरह ही उसे कायम रखने के लिए भी अहिंसा का सहारा लिये बिना चारा नहीं। इसका मतलब यह हुआ कि जो अपने को हमारे दुश्मन समझते हैं, उन सबके लिए

हमें अहिंसा का ही इस्तेमाल करना है। जिन्होंने करीब ३० साल तक अहिंसा की तालीम पाई है उनके लिए यह चीज बहुत ज्यादा न होनी चाहिए। अहिंसा का मंत्र है—‘अपनी इज्जत और आजादी के लिए मरो।’ यह नहीं कि ‘जरूरत पड़ने पर मारो और मारते हुए मरो।’ बहादुर सिपाही क्या करता है? वह मौका पड़ने पर ही मारता है और ऐसा करते हुए अपनी जान जोखिम में डालता है। अहिंसा इससे ज्यादा धीरज और त्याग की उम्मीद रखती है। किसी की जान लेते हुए अपनी जान को जोखिम में डालना आसान क्यों मालूम होता है? और क्या वजह है कि बिना मारे मरना दिव्य माना जाय? यह सोचना कि मारने के धन्धे को सीखे बिना मरा नहीं जा सकता, निरा भ्रम है। हम इस भ्रम में न फँसे। बार-बार भ्रम की हो रट लगाये रहने से हम उसमें फँस जाते हैं और उसी को सच समझने लग जाते हैं।

लेकिन टीका करनेवाले या निन्दा करनेवाले यह पूछेंगे कि जब यह चीज इतनी आसान है, तो प्रार्थना को किसलिए बीच में डालते हो? इसका जवाब यही है कि जीवन की अलग-अलग हालातों में और आखिरी हालात में, राष्ट्र की आजादी और इज्जत की रक्षा के लिए अपने आपको मिटा देने की जो भव्य और वीरता-पूर्ण कला हमें सीखनी है, उसके लिए प्रार्थना पहला और आखिरी सबक है।

प्रार्थना के लिए ईश्वर में सजीव श्रद्धा की जरूरत है। बिना ऐसी श्रद्धा के सत्याग्रह के सफल होने की कल्पना नहीं की जा सकती। भगवान् को हम किसी भी नाम से क्यों न पहचानें, उसका रहस्य यह है कि वह और उसका कानून एक ही है।”

जब महात्मा गांधी से, “ईश्वर आदमी के खयाल का पुतला ही है। ईश्वर ने आदमी को नहीं बनाया, आदमी ने ईश्वर को

बनाया है। क्या यह ठीक नहीं ? इस प्रकार का प्रश्न किया गया था, तब उन्होंने ऐसा कहा था, “इसमें सचाई का सिर्फे आभास ही है। ‘बनाना’ और ‘ईश्वर’ इन दो शब्दों के खेल से यह गुमान पैदा किया गया है।

ईश्वर खुद क़ानून है और क़ानून बनानेवाला भी। इसलिए उसको बनाने का सवाल ही नहीं उठता, और फिर एक नार्चाख़ इन्सान के हाथों ! आदमी बन्द बाँध सकता है, लेकिन नदी नहीं पैदा कर सकता। कुरसी बना सकता है मगर लकड़ी नहीं। वह ईश्वर की अनेक कल्पनाएँ कर सकता है। लेकिन जो लकड़ी नदी वगैरह नहीं बना सकता, वह ईश्वर को कैसे बनावेगा ? इसलिए शुद्ध सत्य तो यह है कि ईश्वर ने आदमी को बनाया है। आदमी ने ईश्वर को पैदा किया, यह तो सचाई का आभास ही है। या तो, जो कहना चाहे, वह कह सकता है कि ईश्वर न तो कुछ करता है और न कुछ कराता है। दोनों बातें ईश्वर को लागू होती हैं।”

११-स्वर्ग का राज्य या राम राज्य

अपने मित्रों द्वारा किये गये ‘आज़ादी क्या है’ इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था— “बात के दोहराये जाने का डर होते हुए भी मुझे कहना चाहिए कि मैं तो राम-राज्य का यानी दुनिया में ईश्वर के राज्य का सबाब देखता हूँ— वही आज़ादी है। स्वर्ग में यह राज्य कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता। बहुत दूर की चीज़ जानने की मुझे इच्छा भी नहीं।

अगर वर्तमान दिल को अच्छा लगता हो तो भविष्य उससे

बहुत अलग नहीं हो सकता इसलिए राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक यानी सियासी, माली और इस्लामाकी, तीनों तरह की आजादी ही सच्ची आजादी है। “राजनीतिक” आजादी का मतलब हो यह है कि मुल्क पर ब्रिटिश फौजों की किसी भी शक्त में कोई हुक्मत न रहे।

‘आर्थिक या माली आजादी’ का मतलब ब्रिटिश पूँजी-पतियों और और ब्रिटिश पूँजी के साथ ही उनके प्रतिरूप हिन्दु-स्तानी पूँजीपतियों और उनकी पूँजी से कतई छुटकारा पाना है। दूसरे लफ्जों में छोटे-से-छोटे आदमी को भी यह महसूस करना है कि वह बड़े-से-बड़े आदमी के बराबर है। यह तभी हो सकता है जब पूँजीपति अपने हुनर और अपनी पूँजी में छोटे-से-छोटे और गरीब-से-गरीब को अपना हिस्सेदार बना लें। “नैतिक आजादी” का मतलब मुल्क के लिए रक्खी हुई हथियारबन्द फौजों से छुटकारा पाना है।

राम-राज्य की मेरी कल्पना में ब्रिटिश फौजी हुक्मत की जगह राष्ट्रीय फौजी हुक्मत को बैठा देने की कोई गुस्सायश नहीं। जिस मुल्क में फौजी हुक्मत होती है, फिर वह फौज मुल्क की अपनी ही क्यों न हो, वह मुल्क नैतिक दृष्टि से कभी आजाद नहीं हो सकता, और इसलिए उसके सब से कमजोर कहे जाने वाले बाशिन्दे कभी पूरी तरह से नैतिक उन्नति नहीं कर सकते।”

इसी तरह दिल्ली की प्रार्थना सभाओं में भी उन्होंने कहा था, “अगर करोड़ों की अहिंसक ताकत से स्वराज्य हासिल किया जाने को है, तो उन्हें किसी हद तक अपने अन्दर स्थितप्रज्ञ के गुणों का विकास करना होगा।”

यह आदर्श अकेले ज्ञानियों के लिए नहीं है। यह सब के लिए है—मामूली घर-गृहस्थी वालों के लिए भी। महाभारत में

खुद भगवान श्री कृष्ण को रथ हाँकने वाला सारथी बताया गया है, और उनके शिष्य अर्जुन को, जिसे गीता का उपदेश दिया गया था, अपने विचारों और रहन-सहन में साधारण जन-सा चित्रित किया गया है।

तो फिर स्थितप्रज्ञ की विशेषताएँ क्या हैं ? स्थितप्रज्ञ वह है जो अपनी इन्द्रियों को इन्द्रियार्थों से हटाकर उन्हें आत्मा की ढाल के नीचे छिपा लेता है, जिस तरह कछुआ अपने अंगों को ढाल के नीचे छिपाता है।

जिस आदमी की बुद्धि स्थिर नहीं होती, उसके लिए यह डर रहता है कि वह गुस्से का, विकारों और बुरे विचारों का या गाली-गलौज का शिकार बन जायगा। इसके खिलाफ जिस आदमी को बुद्धि स्थिर होती है, वह स्तुति और निन्दा दोनों को समान भाव से सह लेगा। वह समझ जायगा कि गाली से गाली देने वाले की जवान ही गन्दी होती है, जिसको गाली दी जाती है, उसका कुछ नहीं बिगड़ता। इसलिए स्थिर बुद्धि वाला आदमी कभी किसी का बुरा नहीं चाहेगा। बल्कि आखिरी दम तक अपने दुश्मन के भले के लिए भी भगवान से प्रार्थना करता रहेगा।”

इस तरह कहकर महात्मा गांधी ने उपस्थित लोगों से पूछा, “क्या इस आदर्श का पालन करना बहुत कठिन है ?” और फिर खुद ही जवाब दिया, “नहीं। इसके बरखिलाफ इसमें जो नियम बताये गये हैं वे ही इन्सान की सच्ची शान के मुताबिक हैं।

आज हमारे दिमागों पर भ्रम के जाले छाये हुये हैं। अपनी नासमझी के कारण हम एक-दूसरे से झगड़ते हैं और अपने ही भाई-बन्दों के खिलाफ दंगा-फ़साद करते हैं। ऐसे लोगों को न तो मुक्ति मिल सकती है और न स्वराज्य। अपने ऊपर क़ाबू रखना स्वराज्य की पहली शर्त है।

संस्कृत में होने के कारण गीता के श्लोकों को सही-सही बोलना सब के लिए मुश्किल हो सकता है। लेकिन रामधुन गाने में तो सब कोई शामिल हो सकते हैं। ताल के साथ रामधुन गाना प्रार्थना का सादे-से-सादा रूप है।”

“लेकिन गैर-हिन्दू इसमें कैसे शामिल हो सकते हैं?” इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा गाँधी ने कहा था, “जब कोई यह एतराज पेश करता है कि राम का नाम लेना या रामधुन गाना तो सिर्फ हिन्दुओं के लिए है, तब मुझे मन-ही-मन हँसी आती है। हाँ, ऐसी हालत में मुसलमान उसमें किस तरह शरीक हो सकते हैं? क्या मुसलमानों का भगवान हिन्दुओं, पारसियों या ईसाइयों के भगवान से जुदा है? नहीं, सर्वशक्तिमान, और सर्वव्यापी ईश्वर तो एक ही है। उसके कई नाम हैं और उसका जो नाम हमें सबसे ज्यादा प्यारा होता है उस नाम से हम उसको याद करते हैं।

मेरा राम, हमारी प्रार्थना के समय का राम, वह ऐतिहासिक राम नहीं है, जो दशरथ का पुत्र और अयोध्या का राजा था। वह तो सनातन, अजन्मा और अद्वितीय राम है। मैं उसी की पूजा करता हूँ। उसी की मदद चाहता हूँ। आपको भी यही करना चाहिए। वह सब किसी का है। इसलिए मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों किसी मुसलमान को या दूसरे किसी को उसका नाम लेने में एतराज होना चाहिए? लेकिन यह कोई जरूरी नहीं कि वह रामनाम के रूप में ही भगवान को पहचाने, उसका नाम ले। वह मन-ही-मन अल्लाह या खुदा का नाम भी इस तरह जप सकता है कि जिससे उसमें बेसुरापन न आवे।”

एक दूसरे मौके पर प्रार्थना के समय जो भजन गाया गया था उसको समझाते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था, “इस भजन में हमें यह यक़ीन दिलाया गया है कि भगवान जिसकी रक्षा

करता है, दुनिया कि कोई ताकत उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकती। आज के मौके पर इस भजन का यह सन्देश खास महत्व रखता है, क्योंकि आज सारी दुनिया आपस के झगड़ों में डूबी हुई है। लड़ाई जो भी खत्म हो चुकी है, तो भी जिन कारणों से वह शुरू हुई थी, वे अभी तक बने हुए हैं। इसे शान्ति नहीं कहा जा सकता, यह दूसरी लड़ाई के लिए चुपचाप तैयारी करने का एक तरीका है।

दिल्ली में आज क्या हो रहा है ? लोग एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं, गालियाँ देते हैं और मार-काट की धमकियों से सारी हया जहरीला बन गई है। लेकिन अगर आप में ईश्वर के प्रति श्रद्धा है, तो आप इन तमाम धमकियों और गालियों से घबड़ायेंगे नहीं, बल्कि यह सोचकर बेफ़िकर रहेंगे कि जब तक भगवान् का साया आपके ऊपर है, कोई आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता। कहावत है कि जो अन्दर है उसी की छाया बाहर भी पड़ती है। अगर आप भले हैं तो सारी दुनिया आपके साथ भली रहेगी। इसके खिलाफ अगर आपको किसी को बुरा समझने की ख्वाहिश हुई, तो बहुत मुमकिन है कि बुराई अन्दर ही हो।

अखबारों में खबर छपी थी कि.....ने आमतौर पर हिन्दुओं ने खिलाफ बहुत कुछ बुरा-भला कहा है। इस खबर को भजन के सन्देश पर घटाते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था, “.....के दिल में मेरे लिए बहुत इज्जत है। इसलिए अगर कोई मुझसे आकर कहे कि उन्होंने हिन्दुओं को गाली दी है और उन्हें भला-बुरा कहा है, तो मुझे उस पर यकीन न करना चाहिए और न उनका बुरा ही सोचना चाहिए। कल तक जो आदमी मेरे सगे भाई की तरह था, वह अचानक हिन्दुओं का दुश्मन कैसे बन सकता है ? बल्कि मैं तो यह सोचूँगा कि कुछ हिन्दुओं ने अपने बर्ताव से उनको इस कदर हैरान किया होगा कि वे अपना तौल

खो बैठे होंगे। इसी तरह मुझको पक्का भरोसा है कि अगर वे साहब आज मुझसे आकर मिलें और मैं उनसे पूछूँ कि क्या सचमुच वे यह मानते हैं कि एक ही रात में सारे-के-सारे हिन्दू बुरे बन गये हैं, तो वे उनके अपने मुँह से कहलाई हुई बातों पर हँस देंगे और उन्हें बाहियात कहकर टाल देंगे। हमें न तो किसी का बुरा सोचना चाहिए और न यह शक रखना चाहिए कि कोई हमारा बुरा सोच रहा है। बुरी बातों को सुनने और उन पर भरोसा करने की आदत ईमान की कमी को जाहिर करती है।”

इसी प्रकार प्रार्थना-सभा में महात्मा गांधी का एक प्रवचन यह भी था, “अपने दिल को टटोलते हुए कवि (शायर) अपने आप से पूछता है, ‘भले आदमी, तूने भगवान् का नाम जपना क्यों छोड़ दिया है? तूने गुस्सा नहीं छोड़ा, लालच नहीं छोड़ा; मूठ नहीं छोड़ा, लेकिन तू सच को छोड़ बैठा है। यह कितने दुःख की बात है कि तूने कौड़ी का तो इतना जतन किया और भगवान् के प्रेम रूपी लाल रतन को हाथ से जाने दिया? अरे मूर्ख! तू ने सब तरह का घमंड छोड़कर अपने को अकेले एक भगवान् के भरोसे क्यों नहीं छोड़ दिया?’ इसका यह मतलब नहीं कि अगर आपके पास धन-दौलत है, तो आप उसे फेंक दें, और बाल-बच्चों को घर से बाहर निकाल दें। बात यह है कि आपको इन सब का मोह छोड़ देना चाहिए, यानी इनके लिए मन में कोई लगाव नहीं रखना चाहिए, और अपना सब कुछ ईश्वर को सौंपकर उसकी दी हुई चीजों का इस्तेमाल उसी की सेवा के लिए करना चाहिए। इसका मतलब यह होता है कि अगर हम सब दिल से उसका नाम लें, तो हमको अपने आप अपने मन के विकारों से, मूठ से और बुरे ख्यालों से छुटकारा मिल जाता है।

प्रार्थना के शुरू में हर दिन ईशोपनिषद् का जो पहला श्लोक

पढ़ा जाता है, उसमें हमसे यह कहा गया है कि हम अपना सब कुछ भगवान् के हवाले कर दें और फिर अपनी जरूरत के मुताबिक उसका उपयोग करें। इसमें खास शर्त यह है कि हमें दूसरों की चीज को लालच की निगाह से नहीं देखना चाहिए। इन दो हिदायतों में हिन्दू-धर्म का सारा निचोड़ आ गया है।

सुबह की प्रार्थना में पढ़े जाने वाले एक दूसरे श्लोक में कहा गया है, 'मैं राज्य नहीं चाहता, स्वर्ग भी नहीं चाहता, न मैं मोक्ष या निर्वाण चाहता हूँ। मैं तो सिर्फ यही चाहता हूँ कि जो दुःखों के ताप से तपे हुए हैं, मैं उनके दुःख को दूर कर सकूँ।' यह दुःख जिसम का भी हो सकता है और दिल का या आत्मा का भी। अपने विकारों की गुलामी के कारण होने वाला आत्मा का दुःख कभी-कभी शारीरिक दुःख से भी ज्यादा होता है। लेकिन भगवान् खुद दुःख मिटाने के लिए नहीं आता। वह किसी आदमी को अपना निमित्त बनाता है। इसलिए भगवान् से दूसरों के दुःखों को दूर करने की शक्ति माँगने का मतलब यह होना चाहिए कि हम खुद उसके लिए मेहनत करने को हर तरह तैयार रहें आप देखेंगे कि यह प्रार्थना सब के लिए है। किसी जाति या फिरके तक महदूद नहीं। इसमें सब कोई शामिल हो सकते हैं। यह सारी मनुष्य-जाति के लिए है। इस लिए जिस दिन यह पूरी होगी, उस दिन दुनिया में स्वर्ग का राज्य कायम हो जायगा।'

१२-रामनाम यक्तीनी इमदाद है

यह उन दिनों की बात है जब कि भारत में कैबिनेट मिशन आया हुआ था और इच्छा के न रहते हुए भी महात्मा गांधी को

शिमला जाना पड़ा था। इसलिए शिमला पहुँचते ही उन्होंने प्रार्थना-सभा में इस प्रकार कहा था, “मे नहीं जानता था कि मुझे शिमला आना होगा। मगर जो ईश्वर पर भरोसा रखते हैं उन्हें इस बात की तैयारी रखनी चाहिए कि जहाँ वह भेजेगा, चले जायँगे। आप में से कोई कह नहीं सकता कि कल क्या होगा। हमारे मन की मन ही में रह जाती है। इसलिए सब कुछ ईश्वर पर ही छोड़ दें तो जो होना होगा, होता रहेगा।

कैबिनेट मिशन के बारे में मैं कुछ कहना नहीं चाहता। उनका काम चल रहा है। उसके बारे में आपको जिज्ञासा भी नहीं रखनी चाहिए। कल मैंने दिल्ली में प्रार्थना के बाद कहा था कि कैबिनेट मिशन अपने आप कुछ नहीं कर सकता। जितनी हमारी ताकत है, उतना ही वह कर पायेगा। ज्यादा करेगा, तो अतिरेक (बदहजमी) होगा। हम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। अगर आखिर में कुछ भी न हुआ, तो भी मेरा मन न उन्हें कोसेगा, न गालियाँ देगा, न यह कहेगा कि वे निकम्मे थे। यही कहेगा कि हम कमजोर थे, हम निकम्मे थे। अगर हममें जोर होता, तो उन्हें हमारी बात सुननी ही थी। जोरदार का मतलब यह नहीं कि तलवार हमारे हाथ में हो। बरसों से हम कहते आ रहे हैं कि हम अमन से, शान्ति से स्वराज्य लेंगे। इसका मतलब यह है कि हमें अमन से, शान्ति से, अहिंसा से रहना आना चाहिए।

बहुत लोग मानते हैं कि इस बार तो कैबिनेट मिशन कुछ-न कुछ करके जायगा। इसका मतलब यह है कि अंग्रेजी हुकूमत यहाँ से उठ जायगी। मुझे भी यही उम्मीद है। बाक़ी करना तो ईश्वर के हाथ में है।

अब मैं दूसरी बात पर आऊँ, जो मैं कहना चाहता हूँ। पिछली बार भी मैंने कहा तो था। लेकिन सत्य ऐसी चीज़ है कि

चीख-चीख कर जितनी ही बार उसे क्यों न दोहरायें, उससे थकान नहीं होती, जिस तरह अल्लाह या ईश्वर का नाम रटने से नहीं होती। दम्भी (फरेबी) आदमी भी मुँह से तो ईश्वर का नाम लेते हैं, मगर बगल में छुरी हो, तो वह किस काम का ? अगर हृदय से रामनाम लिया जाय, तो कभी थकान मालूम नहीं होगी। इसलिए मैं जो कुछ आपको कहना चाहता हूँ उसे दोहरा-दोहरा कर भी कहूँ, तो उसमें कोई हर्ज नहीं। उसका असर आप पर होगा।

‘ईशोपनिषद्’ के पहले मंत्र में कहा गया है कि ईश्वर से सारा जगत् आच्छादित (भरा) हुआ है। सब कुछ ईश्वर का ही है, हमारा कुछ नहीं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह एक बार अपना सब कुछ ईश्वर को अर्पण कर दे, और उसके बाद सेवा के लिए जितनी जरूरत हो उतनी मात्रा में ही लेकर उसका उपयोग करे, उससे ज्यादा एक कण भी न ले। दूसरों के धन की इच्छा तक न करे। सेवा के लिए उसे जितना चाहिए, उसको छोड़कर बाक़ी सब को पराया धन समझे। मेरी ही मिसाल लीजिए। मैं इस महल में पड़ा हूँ। इसका मतलब यह नहीं कि चूँकि यह मुझे मिल गया है मैं सारे-का-सारा अपने काम में ले लूँ।

टाल्सटाय ने अपनी एक अमर कहानी में इस सवाल का जवाब दिया है कि आदमी को कितनी जमीन चाहिए। शैतान एक आदमी को फुसलाता है और वरदान देता है कि वह एक प्राँस से दौड़कर जितनी जमीन को घेर ले, उतनी ही उसकी हो जायगी। बेचारा आदमी लालच का मारा आगे दौड़ता ही जाता है। आखिर सूरज के डूबने तक जहाँ से चला था, वहाँ पर वापस पहुँचते ही उसका दम निकल जाता है और उसे दफ़नाने के लिए सिर्फ़ छः फ़ीट जमीन काम आती है। इसी तरह

अगर मैं अपने आपको धोखा देकर यह मानने लगूँ कि मुझे सारे-के-सारे बँगले की जरूरत है, तो मेरा जैसा कोई मूल्य नहीं। सिर्फ़ चलटी खोपड़ी वाला आदमी ही इस मंत्र का यह अर्थ कर सकता है कि बस, एक बार ईश्वर के आगे भोग लगाने के बाद जो चाहो सो हड़प कर जाओ। यह तो मंत्र के असल मानों की हँसी उड़ाना होगा।

नये और चटकीले-भड़कीले कपड़े पहनने के बदले अगर कोई फटे-पुराने भगर मरम्मत किये हुए कपड़े पहने तो वह मुझको ज्यादा अच्छा लगेगा। फटे कपड़े पहनना आलस्य की निशानी है।

इसी तरह अगर कोई आदमी मुझको २५ हजार रुपये की रकम दे देता है और मैं उसको अपने मौज शौक में खर्च कर देता हूँ तो मेरी क्रीमत एक कौड़ी की हो जाती है। मगर सारी रकम के मेरे हाथ में रहने पर भी मैं उसमें से अपनी जरूरत के लिए एक कौड़ी खर्च करूँ तो उसमें मेरी क्रीमत है। तभी यह माना जायगा कि मैं 'ईशोपनिषद्' के मंत्र का मतलब समझा हूँ। इतनी बात आप समझ लें, तो बड़ा काम कर लें।"

इस प्रकार आत्म-निरीक्षण पर विचार करने के बाद महात्मा गांधी ने आत्म-संयम पर भी अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था, "आत्म-संयम के लिए एक भाई ने तीन तरीके बताये हैं, जिनमें दो बाहरी और एक अन्दरूनी है। 'अन्दरूनी' मदद के बारे में वे यों लिखते हैं—

तीसरी चीज़ जो आत्म-संयम में मदद करती है, 'रामनाम' है। इसमें काम-वासना को ईश्वर-दर्शन की पवित्र इच्छा में बदल देने की बहुत ज़रूरत ताकत है। दर असल अनुभव से मुझे लगता है कि करीब-करीब सभी इन्सानों में जो काम-वासना पाई जाती है, वह एक तरह की 'कुण्डलिनी शक्ति' है, जो अपने

आप बढ़ती और विकसित होती रहती है। जिस तरह सृष्टि (खलक) के शुरू से ही इन्सान कुदरत के खिलाफ लड़ता आया है उसी तरह अपनी 'कुण्डलिनी' इस स्वाभाविक गति के खिलाफ भी उसे लड़ना चाहिए, और उसे नीचे की तरफ न जाने देकर ऊपर की ओर ले जाना चाहिए—ऊर्ध्वरेता बनना चाहिए। जहाँ एक बार 'कुण्डलिनी' का ऊपर चलना शुरू हुआ कि वह मस्तिष्क की तरफ चलने लगती है और आदमी धीरे-धीरे ऊर्ध्वरेता बन खुद अपने आप में और अपने चारों तरफ दिखाई देनेवाले दूसरे आदमियों में एक ही ईश्वर को देखने लगता है।'

इसमें कोई शक नहीं कि, 'रामनाम' सबसे ज्यादा यकीनी इमदाद है। अगर दिल से उसका जप किया जाय तो वह हर एक बुरे खयाल को फौरन दूर कर सकता है, और जब बुरा खयाल मिट गया तो उसका बुरा असर होना मुमकिन नहीं। अगर मन कमजोर है तो बाहर की सब इमदाद बेकार है, और मन पवित्र है, तो वह सब गैर जरूरी है। इसका यह मतलब हर्गिज नहीं समझना चाहिए कि एक पवित्र मनवाला आदमी सब तरह की छूट लेते हुए भी बेदारा बचा रह सकता है। ऐसा आदमी खुद ही अपने साथ कोई छूट न लेगा। उसका सारा जीवन ही उसकी अन्दरूनी पवित्रता का सच्चा सबूत होगा। गीता में ठीक ही कहा है कि आदमी का मन ही उसे बनाता है और वही उसे बिगाड़ता भा है। मिल्टन जब यह कहता है कि 'इन्सान का मन ही सब कुछ है, वही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना देता है' तो वह भी इसी विचार की तशरीह या व्याख्या करता है।'

१३—ईश्वर ही हिंसा को रोक सकता है

एक अंग्रेज मिलिटरी अफसर से कोई गांधी जी के अनुयायी मिलने गये थे। उससे बातें करने के बात उन्होंने महात्मा गांधी को जो पत्र लिखा था, वह इस प्रकार का था, “कुछ दिन पहले मैं पूना में एक अंग्रेज मिलिटरी अफसर से मिला था। वह विलायत जा रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि अब हिन्दुस्तान में हिंसा बढ़ रही है और आगे और भी बढ़ेगी। लोग अहिंसा के रास्ते को छोड़ते जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा, ‘हम लोग हिंसा में मानते हैं। हिंसा से हमारा जीवन बँधा पड़ा है। कई गुलाम देशों ने हिंसा के जरिये अपनी आजादी हासिल की है और आजकल वे सुख से दिन बिता रहे हैं। हमने हिंसा को रोकने के लिए अणु-गोले भी निकाला। दुनिया जानती है कि किस तरह थोड़े वक्त के अन्दर ही हमने खूँखार लड़ाई को अणु-गोले की मदद से बन्द कर दिया।’

साहब बहादुर और कहने लगे, ‘हिन्दुस्तान में महात्मा गांधी ने लोगों को अहिंसा का रास्ता बताया है। लेकिन क्या गाँधी जी ने अणु-गोले जैसी कोई चीज निकाली है, जिसका इस्तेमाल करने से लोग फौरन अहिंसा के रास्ते आ जायँ और देश में शान्ति का राज कायम हो जाय ? क्या अब गाँधी जी का अणु-गोला देश को हिंसा के रास्ते जाने से रोक नहीं सकता ?

फिर वह मुझसे बोले, ‘आप अपने गांधी जी से क्यों नहीं कहते कि वे इस वक्त देश पर अपनी शक्ति छोड़ें, जिससे लोग हिंसा के रास्ते को तर्क कर दें और फिर से सब मिलकर अहिंसा

अख्तियार कर लें। मैं तो कहता हूँ कि अगर गांधी जी इस भीषण हिंसा को, जो आज सारे हिन्दुस्तान में फैल रही है, अभी से नहीं रोके'गे, तो बाद में उनको बहुत ही दुःखी होना पड़ेगा और उनका इतने दिनों का काम बर्बाद हो जायगा।'

आशा है आप कृपा कर इन अंग्रेज अफसर की शंका का जवाब देंगे।''

इस पत्र का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने लिखा था, "इस सवाल में काफी विचार-दोष पाता हूँ। अणु-गोले ने हिंसा को नहीं रोका है। लोगों के मन में तो हिंसा भरी ही है और तीसरी लड़ाई की तैयारियाँ होती दिखाई पड़ती हैं। यह कहना फजूल है कि हिंसा से किसी को सुख-चैन मिला है। फिर भी यह कोई नहीं कहता कि हिंसा से कुछ हो ही नहीं सकता।

मैं हिंसा को रोक न सकूँ तो मुझे पछताना पड़ेगा, ऐसी कोई बात अहिंसा में हो ही नहीं सकती। कोई भी आदमी हिंसा को रोक नहीं सकता। ईश्वर ही हिंसा को रोक सकता है। मनुष्य को तो वह निमित्त मात्र बनाता है। हिंसा किसी बाहरी प्रयोग से रोकी नहीं जा सकती। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कोई बाहरी प्रयोग हो नहीं सकता या होता नहीं। बाहरी उपायों के होते हुए भी वह रुकी, तो ईश्वर की कृपा से ही रुकेगी। हाँ, इतना बहूँगा कि ईश्वर की कृपा रुढ़ प्रयोग है। ईश्वर अपने कानून के मुताबिक ही चलता है। इसलिए हिंसा उस कानून के मुताबिक ही रुकेगी।

हम ईश्वर के सब कानूनों को जानते नहीं हैं, न कभी पूरे-पूरे जानेगे। इसलिए जो प्रयत्न हमसे बन सके, सो हम करते रहें। इतना और भी कह दूँ कि मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान में अहिंसा का प्रयोग काफी हद तक सफल हुआ है। मैं मानता हूँ कि सवाल में जो निराशा जाहिर की गई है उसकी कोई ग़ुज़ायिश

नहीं है। आखिर अहिंसा जगत् का एक महान् सिद्धान्त है। उसे कोई मिटा नहीं सकता। मेरे जैसे हजारों के उसपर अमल करते-करते मर जाने से भी वह सिद्धान्त मिट नहीं सकता। मर कर ही अहिंसा का प्रचार बढ़ेगा।”



१४—ईश्वर में श्रद्धा रखनी चाहिए

“सभी प्रार्थना, फिर वह किसी भी ज़बान या किसी भी मज़हब की क्यों न हो, एक ही ईश्वर की की जाती है और वह हर इन्सान को यह सिखाती है कि सब एक ही परिवार के हैं और सब को एक-दूसरे से मुहब्बत करनी चाहिए।” इसे फकीर बाद-शाह खान ने प्रार्थना-सभा में समझाते हुए कहा था और इन्हीं बातों को गुँजाते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था :—

“अपने धर्म या मज़हब को बड़ा और दूसरों के धर्म या मज़हब को छोटा मानना सच्चे धर्म को ग़लत शकल में पेश करना है, उसका मज़ाक उड़ाना है। सभी धर्मों में सब जगह मौजूद एक ही ईश्वर की पूजा करने की बात कही गई है। वह तो पानी की एक बूँद में या धूल के एक ज़र्रे में भी मौजूद है। जो लोग मूरत की या बुत की पूजा करते हैं वे मूर्ति के पत्थर की पूजा नहीं करते, बल्कि वे उसमें रहने वाले ईश्वर को देखने की कोशिश करते हैं। इसी तरह पारसियों को आग की पूजा करने वाला या सूरज को पूजा करने वाला कहना उसका बदनाम करना है।

डाक्टर दिनशा मैहता ने पारसी धर्म का जो मंत्र पढ़ा था, वह हिन्दुओं के गायत्री मंत्र से मिलता है। उसमें ईश्वर की

शुद्ध पूजा ही कही गई है। अलग-अलग मजहब एक ही पेड़ के अलग-अलग पत्तों की तरह हैं। कोई दो पत्ते एक-से नहीं होते। फिर भी उनमें या जिन डालियों में वे लगते हैं, उनके बीच कोई दुश्मनी नहीं होती। इसी तरह ईश्वर की सृष्टि में हमें जो अनेकता दिखाई पड़ती है उसके अन्दर एक एकता रही है।”

यह प्रसंग उस समय का है जब कि कैबिनेट मिशन के और तीन दलों वाली कान्फरेन्स के दूसरे मेम्बरों के शिमला से लौटने पर दिल्ली में अटकल बाजी का पारा चढ़ गया था। लोग कैबिनेट मिशन के जल्दी ही होने वाले ऐलान के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगाने लगे थे। उसका जिक्र करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था :— H 231/G 19m

“दोस्त मुझसे बराबर यह पूछ रहे हैं कि मिशन के पैगाम में क्या-क्या हो सकता है? मैं इसे नहीं जानता, न मैं अटकल लगाता हूँ। उसमें क्या होगा, इसका खयाल करना भी बेकार है। प्रार्थना में यकीन रखने वाला आदमी और कुछ कर ही नहीं सकता। भला-बुरा जो कुछ होगा अगले २६ घंटों के अन्दर आप सबको मालूम हो जायगा। तब आप चाहें, उसे मंजूर करें, चाहे ठुकरा दें। आपको छूट है। H 1247.

बाहर की तरफ देखने के बदले आप अपने को अन्दर से टटोलिए और ईश्वर से पूछिए कि भली-बुरी हर हालत में आपका कर्ज क्या होना चाहिए। फिलहाल तो आपके और मेरे लिए यह जान लेना काफी है कि कैबिनेट मिशन अपना घर-बार छोड़कर यहाँ इतनी दूर इस बात का पता लगाने के लिए आया है कि किस तरह हिन्दुस्तान से ब्रिटेन की हुकूमत उठे और बर्तानिया का आखिरी सिपाही कब हिन्दुस्तान छोड़कर चला जाय। हिन्दुस्तान छोड़ने या न छोड़ने की बात पर गौर करने के लिए वह नहीं आया है।

मिशन के लिए यह जान लेना जरूरी था कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग में मेल पैदा किया जा सकता है या नहीं। अंग्रेजी हुकूमत ने ही इन दोनों को एक-दूसरे से अलग किया था। ऐसी हालत में अगर कैबिनेट मिशन उन्हें मिलाने में नाकाम रहा, तो इसमें अचरज की कोई बात नहीं। ज्यों ही जाहिर तौर पर हिन्दुस्तान से अंग्रेजी हुकूमत उठ जायगी, त्यों ही हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच मेल पैदा हुए बिना न रहेगा। कैबिनेट मिशन को यह देखना है कि कैसे एक मिनट की भी देर किये बिना हिन्दुस्तान छोड़ा जा सकता है।”

इतना ही नहीं, महात्मा गांधी ने यह भी कहा था, “लेकिन मान लीजिए कि इससे बिलकुल उल्टी चीज हो जाती है, तो नुकसान उनका होगा, हमारा नहीं। हमने अपने लिए खुद तकलीफ उठाने का रास्ता चुना है। हम अपनी तकलीफों के जरिये आगे आगे बढ़ते और ऊपर उठते हैं। यह कुदरत का कानून है। जो अपने गन्दे स्वार्थ से या खानदानी हितों से चिपके रहते हैं, नुकसान उठाते हैं। इन्सान इस दुनिया में इसलिए भेजा जाता है कि जरूरत पड़ने पर वह अपनी जान को दाँव पर लगाकर भी अपना फर्ज अदा करे। इसलिए कर्त्तव्य या फर्ज को पूरा करते हुए जो मुसीबतें पेश आएँ उनका हमें दिलेरी के साथ सामना करना चाहिए।

हम सब, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, एक हैं—अखंड हैं। अगर हममें से कोई गलती करता है; तो सब को उसका फल भुगतना पड़ता है। ईश्वर ने इस दुनिया को कुछ इस तरह बनाया है कि यहाँ कोई भी आदमी अपनी अच्छाई या बुराई को अपने तक ही नहीं रख सकता। समूची दुनिया इन्सान के जिस्म की तरह है, जिसके अपने अलग-अलग हिस्से होते हैं। अगर जिस्म के किसी हिस्से में दर्द उठता है, तो सारा जिस्म उसे

महसूस करता है। अगर बदन का कोई हिस्सा सड़ गया है तो वह लाजिमी तौर पर सारे बदन को सड़ा देगा। इसलिए हमें चाहिए कि हम सिर्फ अपनी-ही-अपनी न सोचें। हमको ईश्वर में श्रद्धा (एतकाद) रखनी चाहिए और बेफिक्र बन जाना चाहिए। हमारी तकदीर हमारे ही हाथ में है, और हम ही उसे बना या बिगाड़ सकते हैं।

आप अपने को दूसरों की बातों में बहा न दीजिए। और पहले से कोई खयाल बनाकर न रखिए, बल्कि मिशन की ओर से जो दस्तावेज पेश हो उसको आप खुद ध्यान से पढ़िये और फिर उस पर अपनी राय कायम कीजिए।

अखबारों से राय उधार लेने की आदत को मैं अच्छा नहीं समझता। अखबार तो हकीकतों को समझने और उन पर गौर करने के लिए हैं। हमें इसका खयाल रखना चाहिए कि कहीं वे आजादी के साथ सोचने की हमारी आदत को मिटा न डालें। याद रखिए कि अँग्रेजी जवान एक ऐसी जवान है, जिस पर पूरा काबू पाना मुश्किल है। मेरी ही मिसाल लीजिए। मैं अँग्रेजी बोलने वालों के बीच करीब २० साल तक रहा हूँ। फिर भी मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मुझे उस पर पूरा काबू हासिल है। इसलिए मिशन की दरखवास्तों वाले दस्तावेज को आप हिन्दुस्तानी में पढ़िए, ताकि आप उसके सही-सही मानों को ठीक से समझ सकें।

मिशन का ऐलान आपको पसन्द पड़े, चाहे न पड़े, इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान की तवारीख में वह एक बड़ी मार्के की चीज होगी। इसलिए यह जरूरी है कि उस पर बहुत गहराई से गौर किया जाय। प्रार्थना में श्रद्धा रखने वालों के नाते हमारा आपका यह फर्ज है कि हम-आप अपने को पूरी तरह ईश्वर के हाथों में छोड़ दें और उससे प्रार्थना करें कि वह हमें रोशनी

बख्ते और इस कदर शुद्ध बनावे कि जिससे हम सब दस्तावेज को सही तौर से समझ सकें।”

जब १८ मई सन् १९४६ ई० को कैबिनेट मिशन का ऐलान छपा और उस दस्तावेज की जाँच पड़ताल करने का समय आया तब उसके पहले ही प्रार्थना-सभा में श्रीमती सुचेता कृपलानी ने एक भजन गाया था। उसको अपने प्रवचन का आधार बनाकर महात्मा गांधी ने उसमें सुभाषे आदर्श की रोशनी में कैबिनेट मिशन के ऐलान की जाँच-पड़ताल शुरू की थी। भजन में एक ऐसे देश का जिक्र था जहाँ न दुःख-शोक है, न आफत-मुसीबत। सवाल यह था कि कैबिनेट मिशन का ऐलान हमको कहाँ तक इस आदर्श के नजदीक ले जाना चाहता है? महात्मा गांधी ने कहा था,

“कवि कहता है, हम एक ऐसे मुल्क के रहने वाले हैं, जहाँ न दुःख-शोक है, न आफत-मुसीबत। इस दुनिया में ऐसा मुल्क कहाँ पाया जा सकता है? मैं बहुत घूमा भटका हूँ, लेकिन मैं कबूल करता हूँ कि मुझे अभी तक ऐसा मुल्क कहीं नहीं मिला। आगे चलकर कवि ने इस आदर्श को पाने की शर्तें बयान की हैं। हर आदमी खुद तो उन शर्तों का आसानी से पालन कर सकता है, क्योंकि जो आदमी हकीकत में और सचमुच ही दिल का साफ-पाक है, उसके लिए तो न कहीं दुःख शोक है, न आफत-मुसीबत। लेकिन करोड़ों के लिए इस हालत की पहुँचना या पाना मुश्किल है। फिर भी हम चाहते तो हैं कि हमारा हिन्दु-स्तान ऐसा ही एक मुल्क बने।”

चूँकि महात्मा गांधी पहले लोगों से कह चुके थे कि वे कैबिनेट मिशन के बयान को देखने पर दूसरे लोगों की गाय का खयाल न करते हुए स्वतन्त्र रीति से उनकी जाँच-पड़ताल करें। वे उस मुल्क के नुक्ते-निगाह से उसे जाँचे, जिसमें न दुःख-शोक

होगा, न आक्रत मुसीबत। इसीलिए उन्होंने कहा था, “मैं इस बारे में अपने खयाल आपको सुनाऊँगा। लेकिन अगर मेरी बातें आपको न जँचें, तो मैं आपसे यह न कहूँगा कि आप उन्हें मानें या उन पर अमल करें। ऐसा करना तो मेरी अपनी ही बात को काटना होगा। हर एक मर्द और औरत को खुद अपने लिए सोचना चाहिए। आप दूसरों की राय को अपनी कसौटी पर कसिए और जिसे आप हज़म कर सकें, उसे अपनाइए।

कल रात को जैसे ही मिशन का एेलान मेरे हाथ में पड़ा, मैं उसको सरसरी निगाह देख गया। आज सुबह मैंने उसे गौर के साथ पढ़ा। वह कोई फैसला नहीं है। मिशन ने और वाइसराय ने दोनों दलों को एक जगह लाने की कोशिश की थी। वे उनमें कोई समझौता नहीं करा सके। इसलिए उन्होंने मुल्क से यह सिफ़ारिश की है कि उनकी राय में कान्स्टिट्यूएण्ट एसेम्बली (विधान-परिषद्) के लिए किन बातों को कबूल करना मुनासिब होगा। इस एसेम्बली को हक़ होगा कि वह इन सिफ़ारिशों को बदले, नामंजूर करे या इन्हें सुधारे। उनकी सिफ़ारिशों में ‘ले लो या छोड़ दो’-जैसी कोई बात नहीं है।

अगर उसमें किसी तरह की पाबन्दियाँ हुईं, तो कान्स्टिट्यूएण्ट एसेम्बली सार्वभौम सत्तावाली वह संस्था न रह जायगी, जिसे आज़ाद हिन्दुस्तान का विधान बनाने की पूरी स्वतंत्रता हो। मिसाल के तौर पर मिशन ने सेण्टर या केंद्र के लिए कुछ विषय सुझाये हैं। एसेम्बली को हक़ होगा कि वह मुसलमानों और ग़ैर-मुसलमानों की अलग-अलग कसरत राय से इनमें कुछ विषय बढ़ाये या घटा भी दे। साथ ही एसेम्बली उन भेदों को भी मिटा सकती है जिन्हें मिशन को मजबूरन मानना पड़ा है। यही बात सूबों को अलग-अलग गिरोह में बाँटने के बारे में भी है।

अगर सूबे चाहें तो वे गिरोहबन्दी के इस खयाल को ही ठुकरा सकते हैं। गिरोहबन्दी के खयाल को मंजूर कर लेने पर भी किसी सूबे को किसी एक गिरोह में अपनी मर्जी के खिलाफ शामिल होने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। अपनी बात को समझाने के लिए सिर्फ़ ये दो मिसालें मैंने आपके सामने रखीं। मिशन के ऐलान में दूसरी भी ऐसी काबिल-एतराज या काबिल सुधार बहुत-सी बातें हो सकती हैं, लेकिन मैंने उन सब का यहाँ जिक्र नहीं किया है।

मिशन के ऐलान को इस तरह समझने पर, जो मेरे खयाल में उसे समझने का सही तरीका है, मुझे लगता है कि मिशन ने हमारे सामने एक ऐसी चीज़ पेश की है, जिस पर वह हर तरह नाज़ कर सकता है।

कैबिनेट मिशन के ऐलान के ही सिलसिले में महात्मा गांधी ने यह भी कहा था, “हममें कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि अंग्रेज़ कभी कोई सही काम कर ही नहीं सकते। मैं उनकी इस बात को नहीं मानता। ईश्वर से डरकर चलने का जितना दावा हम अपने लिए करते हैं, कैबिनेट मिशन और बाइसराय भी उतने ही ईश्वर से डरनेवाले हैं। जब तक कोई आदमी अपनी बात का कच्चा या मूठा साबित न हो जाय, उस पर पहले से शक करने लगता है, इन्सान के नाते हमारी शान के खिलाफ़ हैं। स्व० चार्ली एण्डरूज़ पूरे पत्रके अंग्रेज़ थे। उन्होंने अपने आपको हिन्दुस्तान की सेवा में खपा दिया। उनके देश के हर आदमी पर पहले से शक करना बहुत बड़ी ग़लती होगी। अंग्रेज़ी हुकूमत ने हिन्दुस्तान को कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचाया हो, अगर मिशन का बयान सच्चा है, और मैं मानता हूँ कि वह सच्चा है, तो वह एक ऐसे क़र्ज़ को चुकाने के लिए है, जो उनकी राय में ब्रिटेन पर हिन्दुस्तान का है। और वह यह है

कि वे हिन्दुस्तान की पीठ पर से उतर जाँय, यानी हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाँय। इसमें वह बीज मौजूद है, जो हमारे मुल्क को एक ऐसे मुल्क में बदल सकता है, जहाँ न दुःख-शोक होंगे और न आफत-मुसीबत।

(लेकिन इस वक्त सवाल यह हो सकता है कि) जो हिन्दुस्तान आज दुःख-दर्द और आफत-मुसीबत का घर बना हुआ है, उसको आप लोग भजन में कहे गये आदर्श देश में कैसे बदल सकेंगे ? इस सवाल का जवाब आपको अभी-अभी गाये गये पेड़ोंवाले भजन से मिलेगा। इस भजन में हमसे कहा गया है कि हम इन पेड़ों से सबक सीखें।

ये सूरज की तेज धूप में तपते हैं और अपना आसरा लेने वालों को छाँह देते हैं। जो इन पर पत्थर फेंकते हैं उनके लिए ये अपने फल गिरा देते हैं। यह मञ्चो सखावत या दानशीलता है। भजन में कहा गया है कि ऐसी दानशीलता या सखावत सीखने के लिए हमें हरिजनों के पास जाना चाहिए। आज समाज ने हरिजनों को गन्दगी और गिरो हुई हालत में रख छोड़ा है। यह उनके लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए शर्मिन्दा होने की बात है।

समाज ने उनको अछूत माना है और उन्हें गन्दी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर किया है। और फिर भी वे हैं कि बहुत कलील तनख्वाह लेकर वे समाज को इतनी वेश-कीमती और अनमोल सेवा करते रहते हैं। अगर वे चाहते तो ज्यादा फायदे-मन्द पेशे अखितयार कर सकते थे, जैसा कि उनमें से कुछ ने किया भी है। लेकिन उनकी बहुत बड़ी तादाद ने ऐसा नहीं किया, यह उनके लिए शोभा की बात है। अगर अपनी अज्ञान और पिछड़ी हुई हालत के बावजूद वे सेवा को ऐसी स्पिरिट दिखा सकते हैं, तो आपही कहिए कि सवर्ण कहे जाने वालों को निस्वार्थ सेवा और त्याग की कितनी ज्यादा स्पिरिट दिखानी चाहिए।”

कैबिनेट मिशन के ऐलान को महात्मा गांधी ने एक ऐसा प्रॉमिसरी नोट कहा था, जिसकी कीमत उसके सच्चे और सिकरने लायक होने में है। इसीलिए उन्होंने कहा था, “प्रॉमिसरी नोट पर लिखा गया वादा पूरा न किया जाय, तो उसकी कोई कीमत नहीं रह जाती और वह फाड़कर रही की टोकरी में फेंकने के काबिल ही रह जाता है। मेरे लिए सच ही सब कुछ है। मैं सचाई को छोड़कर स्वराज्य लेना भी कबूल नहीं करूँगा। क्यों कि इस तरह का स्वराज्य एक धोखा होगा। मैं चाहता और मानता हूँ और आप से यह भी कहता हूँ, कि आप चाहिए और मनाइए कि कैबिनेट मिशन के ऐलान पर पूरा-पूरा अमल किया जायगा, और ईश्वर मिशन के मेम्बरों को अपने प्रॉमिसरी नोट का भुगतान करने में उसी तरह मदद देगा जिस तरह पुराने जमाने में उसने अपने भक्तों को मदद दी थी।”

१५—प्रार्थना का उद्देश्य

“प्रार्थना या नमाज का एक ही मकसद है और वह यह है कि हम अपने-आप को तमाम गन्दगी और कमीनेपन से बरी कर ले ताकि हम दुनिया के तमाम इन्सानों के साथ सारे मानव परिवार के साथ, अपनी एकता के बन्धन को महसूस कर सकें। बदकिस्मती से आज लोग अपनी इस असली एकता को भूल गये हैं और आपस में अदावत रखने वाले गिरोहों में बँट गये हैं। यह सब एक दुःखदायी मोह का नतीजा है। प्रार्थना की मदद से हमें इस काबिल बनना है कि हम किसी एक कौम या फिरके की नहीं, बल्कि खुदा के समूचे खलक की खिदमत कर सकें। खुदा ने इसीलिए हमको इस दुनिया में भेजा है।”

फकीर बादशाह खान ने दूसरी बार प्रार्थना सभा में इस तरह प्रार्थना के मतलब और उसकी अहमियत को समझाया था और इसी का समर्थन करते हुए महात्मा गांधी ने समझाया था—

“अगर आपने बादशाह खान की बातों को गौर से सुना है और समझा है तो आप जान सकेंगे कि प्रार्थना का मतलब ईश्वर को खुश करना नहीं है। क्योंकि उसे हमारी प्रार्थना या तारीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं। प्रार्थना तो हम अपने-आपको साफ़-पाक बनाने के लिए करते हैं। ईश्वर सब कहीं है। वह विश्व के ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है। आत्म-शुद्धि का यानी अपने-आप को साफ़-पाक बनाने का तरीका यह है कि हम ईश्वर की मौजूदगी को अपने-अन्दर गहराई से महसूस करें। इस तरह जो ताक़त हमें मिलती है उससे बढ़कर दूसरी कोई ताक़त नहीं।

आपको इतनी बड़ी तादाद में प्रार्थना में हाज़िर रहते देखकर मुझे खुशी होती है। लेकिन अगर मुझे पता चला कि आप यहाँ सिर्फ़ तमाशा देखने के ख़याल से आते हैं या मेरे राजनीतिक (सयासी) ख़याल सुनने को आते हैं, जो कि और भी बुरी चीज़ है, तो मुझे दुःख होगा। वैसे नियम तो यह होना चाहिए कि राजनीति किसी भी तरह प्रार्थना पर हावी न हो पाये—उसमें दखल न दें पाये। फिर भी मैं प्रार्थना के बाद की अपनी बातचीत में राजनीतिक मसलों का ज़िक्र किये बिना रह नहीं सकता, उसे टाल नहीं सकता, क्योंकि जिन्दगी को इस तरह अलग-अलग खानों में बाँटा नहीं जा सकता। ईश्वर की मौजूदगी का तो हमें अपनी जिन्दगी के हर पहलू में महसूस करना है।

अगर आप यह सोचते हैं कि प्रार्थना की जगह से जाने के तुरन्त बाद आप किसी भी तरह रह और बरत सकते हैं, तो आपका प्रार्थना में हाज़िर रहना बेकार है। अगर प्रार्थना में आपकी दिलचस्पी सच्ची है, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि आज

की तरह कल भी आप इतना ही बड़ी तादाद में शरीक होंगे।”

१६—मध्यविंदु ईश्वर ही हो सकता है

कुदरती इलाज (उपचार) के कार्यों को सफल बनाने के लिए जब महात्मा गांधी कांचन गाँव नामक स्थान में गये हुए थे तब उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट करते हुए लिखा था,

“हिन्दुस्तान के देहात में कुदरती उपचार कैसे चल सकता है, कांचन गाँव उसका एक नमूना बन सकेगा, इस उम्मीद से और कांचन-निवासियों के कहने से मैं वहाँ चला गया, और काम शुरू किया। ग्राम-वासियों ने मदद की। वहाँ जो जमीन मिलने वाली थी और मकान बनाने वाले थे, सो तो कुछ हो नहीं सका है। देहातियों ने पैसे तो दिये हैं, लेकिन पैसे देने से काम नहीं निपटता है। लोगों को जमीन ढूँढ़नी चाहिए, मकान बनाने में मदद करनी चाहिए। लोगों का इस काम में रस लेना पैसे देने से ज्यादा जरूरी है।

लेकिन जो मैं लिखना चाहता हूँ सो तो दूसरी चीज है। वहाँ के सेवक मुझे लिखते हैं कि कांचन-वासी कुदरती उपचार को समझने लगे हैं और उसकी कदर करते हैं। सेवकों को इतना भरोसा ही गया है कि मैं जून महीने तक भी कांचन गाँव में न पहुँचूँ, तो कोई फिकर नहीं। वे कहते हैं कि कांचन गाँव में लोगों की तरफ से ऐसा सुन्दर साथ मिल रहा है कि पंचगनी-महाबलेश्वर से उतर कर ही कांचन जाऊँ, तो भी कोई हर्ज नहीं। यह सब सुनकर मुझे अच्छा लगता है, और इससे ऐसा अनुमान

किया जा सकता है कि दूसरे देहात भी कुदरती उपचार की कदर करेंगे।

कुदरती उपचार के दो पहलू हैं : एक ईश्वर की शक्ति यानी रामनामस्मृति से दर्द मिटाना और दूसरे, ऐसे उपाय करना कि दर्द पैदा ही न हो सके। मेरे साथी लिखते हैं कि कांचन गाँव के

पाठकों के हितार्थ वेदव्यास-रचित श्री रामाष्टक स्तोत्र दिया जा रहा है। आशा है, इसके लिए पाठक क्षमा करेंगे:-

भजे विशेष सुन्दरं समस्त पाप-खंडनम् ।
 स्वभक्त-चित्त - रंजनं सदैव राममद्वयम् ॥
 जटा - कलाप-शोभितं समस्त पाप-नाशनम् ।
 स्वभक्त-भीति - भंजनं भजेह राममद्वयम् ॥
 निज - स्वरूप - बोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
 समंशिवं निरंजनं भजेह राममद्वयम् ॥
 सह प्रपञ्च-कल्पितं ह्यनीमरूप वास्तवम् ।
 निराकृतिं निरामयं भजेह राममद्वयम् ॥
 निष्प्रपञ्च-निर्विकल्प - निर्मलं निरामयम् ।
 चिदेकरूप - सततं भजेह राममद्वयम् ॥
 भवाब्धि - पोत-रूपकं ह्यशेष-देह - कल्पितम् ।
 गुणाकरं कृपाकरं भजेह राममद्वयम् ॥
 महासुवाक्य बोधकैर्विराजमान वाक्पदैः ।
 परब्रह्म व्यापकं भजेह राममद्वयम् ॥
 शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
 विराजमान दैशिकं भजेह राममद्वयम् ॥
 रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं ।
 व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।
 विद्यां श्रियं विपुलं सौख्यमनन्त कीर्तिं
 संप्राप्य देह बिलये लभते च मोक्षम् ॥

लोग गाँव को साफ रखने में मदद देते हैं। जिस जगह शरीर-सफाई घर-सफाई और ग्राम-सफाई हो, युक्ताहार हो और योग्य व्यायाम हो वहाँ कस-से-कम बीमारी होती है। और अगर चित्त-शुद्धि भी हो, तो कहा जा सकता है कि बीमारी असम्भव यानी नामुमकिन हो जाती है। रामनाम के बिना चित्त-शुद्धि नहीं हो

श्री शिव जी ने कहा, “जिस श्री रामहृदय को स्वयं श्री रामचन्द्र ने अपने भक्त हनुमान जी को बतलाया था उसी को मैं कह रहा हूँ:-

आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो दृश्यते महान् ।
जलाशये महाकाशस्तदवच्छिन्न एव हि ॥
प्रतिबिम्बाख्यमपरं दृश्यते त्रिविधं नभः ।
बुद्ध्यवच्छिन्नं चतन्यमेकं पूर्णमथापरम् ॥
आभासस्त्वपरं बिम्बभूतमेवं त्रिधा चित्तिः ।
साभास बुद्धेः कर्तृत्वविच्छिन्नेऽविकारिणि ॥
सान्निध्यारोप्यते भ्रान्त्या जीवत्वं च तथाऽबुधैः ।
आभासस्तुमृषाबुद्धिरविद्या कार्यमुच्यते ॥
अविच्छिन्नं तु यद्ब्रह्म विच्छेदस्तु विकल्पितः ।
अविच्छिन्नस्य पूर्णं एकत्वं प्रतिपाद्यते ॥
तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्च साभासभ्याहमा तथा ।
ऐक्यज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनो ॥
तदाविद्या स्वकार्यैश्च नश्यत्येव न संशयः ।
एतद्विशय मद्भक्तो मद्भावोयोपपद्यते ॥
मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्र-गतेषु मुख्यताम् ।
न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात्तेषां जन्मशतैरपि ॥
इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो ।
मयैव साक्षात्कथितं तवानघ ॥
मद्भक्ति-हीनाय शठाय न त्वया ।
दातव्यं मैन्द्रादपि राज्यतोऽधिकम् ॥

सकती । अगर देहात वाले इतनी बात समझ जायँ तो वैद्य, हकीम या डाक्टर की जरूरत न रह जाय ।

कांचन गाँव में गायें नाम को ही हैं । इसे मैं कम-नसीबी मानता हूँ । कुछ भैंसे हैं, लेकिन मेरे पास जितने प्रमाण हैं वे बताते हैं कि गाय सब से ज्यादा उपयोगी प्राणी है । गाय का दूध भी खाने में आरोग्यप्रद है और गाय का जो उपयोग किया जा सकता है वह भैंस का कभी नहीं किया जा सकता । मरीजों के लिए तो वैद्य लोग गाय के दूध का ही उपयोग बतलाते हैं । इसलिए मैं उम्मीद रखूँगा कि कांचन-वासी उरुली में गायों का एक जूथ रखेंगे जिससे सब लोगों को गाय का ताजा और साफ दूध मिल सके । सेहत अच्छी रखने के लिए दूध की बहुत ज्यादा जरूरत रहती है ।

मकान जितनी जल्दी बन सके उतना ही अच्छा है । एक बात तो यह है कि श्री दातार के बंगले का उपयोग कहाँ तक करना ठीक होगा, और दूसरी व ज्यादा महत्त्व की बात यह है कि जब तक मकान नहीं बनता तब तक उपचार आसानी से किये नहीं जा सकते । कभी-कभी मरीजों को उपचार-गृह में रखना भी जरूरी हो जाता है । मैं आशा यह रखूँगा कि कांचन ग्राम सब तरह से आदर्श गाँव बने । कुदरती उपचार के गर्भ में यह बात रही है कि मानव-जीवन की आदर्श रचना में देहात की या शहर को आदर्श रचना आ ही जाती है और उसका मध्य-बिन्दु तो ईश्वर ही हो सकता है ।”

१७-रामनाम का मञ्जाक

कुदरती उपचार से सम्बन्ध रखने वाले लेखों को पढ़कर कुछ लोगों ने शंका उठाते हुए महात्मा गांधी से इस प्रकार के

प्रश्न किये, “जब आप गरीब आदिमियों से जुबार की ‘भाखरी’ छोड़कर मोसंबी का रस या दूसरे पल्ल और दूध लेने को कहते हैं, तो यह गरीबी का उपहास करने जैसा लगता है। मैंने देखा है कि गरीब देहाती अपनी तंगदस्ती छिपाने के लिए ‘भाखरी’ खाकर भी हमसे कहते थे कि उन्होंने दूध पिया है। इन गरीब आदिमियों के लिए तो जीवन का मतलब दिन-रात काम में जुटे रह कर किसी तरह अपने बच्चों का और अपना पेट भर लेना ही है। उन्हें अपने जान की इतनी पर्वाह नहीं होती जितनी अपने खेत और बच्चों की। कई देहातियों ने मुझे बतलाया है कि वे जमींदार और साहूकार के नौकरों की गाली और लात घूँसे सहने की बनिबस्त खुशार से मर जाना ज्यादा पसंद करते हैं। देहातियों की आज की माली हालत को देख कर मैं कह सकता हूँ कि कुदरती इलाज सिर्फ उन लोगों के लिए है, जिनके पास पैसा है और वक्त है, उन गरीबों के लिए नहीं, जो एक घंटे की भी देर कर दें, तो उन्हें मजदूरी न मिले और उनको व उनके बाल-बच्चों को फाका करना पड़ जाय।

अगर वाकई आप कुदरती इलाज के जरिये गरीब देहातियों की सेवा करना चाहते हैं, तो आपको ऐसे उपचार-गृह खोलने चाहिए, जहाँ रोगियों के रहने की व्यवस्था हो, उन्हें खाने-पीने को रस और दूध मिल सके और ओढ़ने-बिछाने को साफ कपड़े मिलें। यही नहीं, बल्कि अगर रोगी कमाने वाला आदमी है, तो जितना वह रोज़ कमाता है, कम-से-कम उतने पैसे भी उसके घर वालों को मिलने चाहिए।

जैसा कि आप कहते हैं, कुदरती इलाज जीवन बिताने का एक नया ढंग है, तो क्या इलाज के साथ ही वैसा जीवन बिताने की तालीम और उसको अमल में लाने के साधन भी उन्हें देने की जरूरत नहीं है?”

इन सब प्रश्नों का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने अपना विचार इस प्रकार प्रकट किया था, “यह शंका उठाकर सवाल पूछने वाले अपना अज्ञान जाहिर करते हैं। मैंने जो लिखा है, उसे विचार-पूर्वक पढ़ने की कोशिश तक नहीं की गई है। कुदरती उपचार के गर्भ में यह बात रही है कि उसमें कम-से-कम खर्च और कम-से-कम व्यवसाय होना चाहिए।

कुदरती उपचार का आदर्श ही यह है कि जहाँ तक संभव हो, उसके साधन ऐसे होने चाहिए कि उपचार देहात में ही हो सके। जो साधन नहीं हैं, वे पैदा किये जाने चाहिए। कुदरती उपचार में जीवन-परिवर्तन की बात आती है। यह कोई बैद की दी हुई पुष्टिया लेने की बात नहीं है और न अस्पताल जाकर मुफ्त दवा लेने या उसमें रहने की बात है। जो मुफ्त दवा लेता है, वह भिन्न बनता है। जो कुदरती उपचार करता है वह कभी भी भिन्न नहीं बनता। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता है और अच्छा बनने का उपाय खुद ही कर लेता है।

वह अपने शरीर में से जहर निकालकर ऐसी कोशिश करता है कि जिससे दुबारा बीमार न पड़ सके। और कुदरती इलाज में मध्यबिन्दु तो रामनाम ही है, न ? रामनाम से आदमी सुरक्षित बनता है। शर्त यह है कि नाम भीतर से निकलना चाहिए। और रामनाम के भीतर से निकलने के लिए नियम पालन जरूरी हो जाता है। उस हालत में मनुष्य रोग-रहित होता है। इनमें न कष्ट की बात है, न खर्च की।

मोसंबी खाना उपचार का अनिवार्य अंग नहीं। पथ्य खाना-युक्ताहार लेना—अवश्य अनिवार्य अंग है। हमारे देहात हमारी तरह ही कंगाल हैं। देहात में साग-सब्जी, फल दूध वगैरह पैदा करना कुदरती इलाज का खास अङ्ग है। इसमें जो बक्त खर्च होता है, वह व्यर्थ तो है ही नहीं। बल्कि उससे सभी देहातियों

को और अखिरकार सारे हिन्दुस्तान को लाभ होता है। यह बात ठीक है कि देहात में और शहरों में भी ऐसे उपचार-गृह होने चाहिए। ईश्वर की कृपा होगी, तो सब हो जायगा। हर एक व्यक्ति का काम तो यह है कि अपना फर्ज अदा करे और फल ईश्वर पर छोड़ दे।”

रामनाम का मञ्जाक किस तरह हमारे देश में किया जाता है ; इसका उल्लेख करते हुए किसी सज्जन ने महात्मा गांधी को इस प्रकार लिखा था, “आप जानते हैं कि आज हम इतने जाहिल हो गये हैं कि जो चीज हमें अच्छी लगती है या जिस महापुरुष को हम मानते हैं, उसकी आत्मा को उसके सिद्धान्तों को, न लेकर हम उसके भौतिक शरीर की पूजा करने लगते हैं। राम लीला, कृष्णलीला और हाल में ही बना गांधी-मन्दिर इसके जिन्दा प्रमाण है। बनारस का रामनाम बैंक और रामनाम छपा कपड़ा पहनना या शरीर पर रामनाम लिखकर घूमना ‘रामनाम’ का मञ्जाक और हमारा पतन नहीं है तो क्या है ? ऐसी हालत में ‘रामनाम’ का प्रचार करके क्या आप इन ढोंगियों के हाथ में पत्थर नहीं दे रहे हैं ? अन्तर प्रेरणा से निकला हुआ ‘रामनाम’ ही रामबाण हो सकता है। और मैं मानता हूँ कि ऐसी अन्तर प्रेरणा सच्ची धार्मिक शिक्षा से ही मिलेगी।”

इसका उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, “यह ठीक कहा है। आजकल हमारे अन्दर इतना वहम फैला हुआ है। और इतना दम्भ चलता है कि सही चीज करने से भी डरना पड़ना है। लेकिन इस तरह डरते रहने से तो सचको भी छिपाना पड़ सकता है। इसलिए सुनहला कानून तो यही है कि जिसे हम सही समझें, उसे निडर होकर करें। दम्भ और मूढ़ तो जगत् में चलता ही रहेगा। हमारे सही चीज करने से वह कुछ कम ही होगा, बढ़ कभी नहीं सकता। यह ध्यान रहे कि जब चारों

ओर मूठ चलता हो, तब हम भी उसी में फँस कर अपने को धोखा न दें। अपनी शिथिलता के कारण हम अनजाने भी ऐसी गलती न करें। हर हालत में सावधान रहना तो कर्त्तव्य ही है। सत्य का पुजारी दूसरा कुछ कर ही नहीं सकता। रामनाम जैसी रामबाण औषध लेने में सतत जागृति न हो, तो रामनाम फोकट जाय और हम बहुत से वहमों में एक और वहम बढ़ा दें।”

— — —

१८-रामनाम की शक्ति

कैबिनेट मिशन के ऐलान के बाद का करीब-करीब सारा बक्त वर्किङ्ग कमेटी के साथ की चर्चाओं में ही बीतने लगा था फिर भी महात्मा गांधी ने राम-नाम को नहीं भुलाया था। जिस प्रकार वे प्राथना सभाएँ किया करते थे, उसी प्रकार बराबर करते रहे। इन्हीं दिनों की एक प्रार्थना-सभा में ओखला के बालिका-श्रम की कुछ हरिजन लड़कियों ने प्रार्थना के वक्त जो भजन गाया था उसमें कहा गया था कि चूँकि भगवान् सब का उद्धार करनेवाला है, पतित उधारन है, इसलिए किसी दिन वह हमारा भी उद्धार करेगा।

इस पर महात्मा गांधी ने कहा था, “मुक्ति या नञ्जात का का पुराना खयाल आनेवाली जिन्दगी में मुक्ति पाने का है। लेकिन मैं तो आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अगर हम मुक्ति की ज़रूरी शर्तों को पूरा करें, तो भजन में जिस मुक्ति का वादा किया गया है, वह हमें यही और आज ही मिल सकती है। वे

शर्तें ये हैं—(१) अपनी आत्म-शुद्धि करना और (२) ईश्वर के कानून को मानना ।

यह सोचना फ़जूल है और हमें गिराने वाला है कि हमारी आनेवाली ज़िन्दगी में ईश्वर मुक्ति देनेवाले की हैसियत से हमको बचाकर अपने बिरद को सँभालेगा जब कि इस ज़िन्दगी में हम अपने सिर पाप के बोझ को लादते चले जायेंगे । जो व्यापारी अपने भोले-भाले और नासमझ ग्राहकों को धोखा देता है और मूठ बोलता है, उसे अपने उद्धार की कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए—वह रख नहीं सकता ।

कहा जाता है कि जो खुद अच्छा है उसके लिए सारी दुनिया अच्छी बन जाती है । जहाँ तक एक आदमी का सवाल है, यह बात सच है । लेकिन भलाई या अच्छाई तभी बा-असर बनती है, जब वह बुराई के मुकाबले में बरती जाती है । अगर आप सिर्फ़ भलाई करते हैं, तो वह एक सौदा हो जाता है और उसमें कोई खासियत नहीं रहती । लेकिन आप बुराई के बदले में भलाई करते हैं, तो वह एक नज़ात बख़्शनेवाली ताक़त बन जाती है । उसके सामने बुराई ख़त्म हो जाती है और वह बरफ़ की गेंद की तरह अपने क्रद और चाल में इस हद तक बढ़ती चली जाती है कि फिर कोई उसे रोक नहीं सकता ।

यह तो एक आदमी के उद्धार की बात हुई । लेकिन हिन्दुस्तान के जैसा एक गुलाम मुल्क अपने को गुलामी से किस तरह छुड़ा सकता है ? (इस प्रश्न को स्वयं महात्मा गांधी ने उठाया था और स्वयं उसका उत्तर देते हुए कहा था) गुलामी की बजह से गुलाम क़ौमों में जो बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं, वे ही मुल्क को गुलाम बनाये रखती हैं । इसलिए अपने-आपको सुधारने का रास्ता ही गुलाम मुल्क को उसकी गुलामी से छुड़ाने का रास्ता

भी है। आने वाले जीवन में मुक्ति पाने की उम्मीद से अपनी मुक्ति के दिन को आगे ठेलते रहना फ़ज़ूल है।

अगर आप यहाँ, इस जीवन में, मुक्ति पाने में नाकाम रहे हैं तो बहुत मुमकिन है कि वहाँ भी वह आपके हाथ से सटक जाय। इसलिए हमें अपने दिल के अन्दर से टटोलना चाहिए और उसे सब तरह की गन्दगी से बरी करना चाहिए। अगर हम अपने छोटे-छोटे भगड़ों को और दुश्मनियों को भुला दें और सब तरह के कौमी तफ़रकों व छोटे-छोटे भेद-भावों को ठुकरा दें, तो पर-देशी फौजों के लिए यहाँ कोई काम ही न रह जाय, और किसी की यह ताक़त न रहे कि वह एक दिन के लिए भी हमको गुलामी में रख सके।”

“सब से ऊँची प्रेम-सगाई” ऐसा भजन जब प्रार्थना-सभा में गाया गया तब उस पर महात्मा गांधी ने कहा था, “इस भजन में कवि ने प्रेम के बन्धन की या अहिंसा की महिमा गाई है। प्रेम से बढ़कर ऊँचा और मजबूत दूसरा कोई बन्धन नहीं। सुदामा के प्रेम के वश होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने एक मैले चिथड़े में बँधे टूटे चावलों को बड़े शौक से खाया था और दुर्योधन के अनूठे और जायकेदार फलों को छोड़कर उन्होंने विदुर के घर का साग-पात खाना पसन्द किया था। इसी तरह अर्जुन की प्रेम भरी भक्ति के वश होकर श्रीकृष्ण अपने ऊँचे शाही पद को भूल गये और उन्होंने अर्जुन के सारथी का काम करना क़बूल किया।

कहा जाता है कि महाभारत की लड़ाई में अर्जुन अपने गाण्डीव के बल पर नहीं, बल्कि ख़ासकर रथ हाँकने श्रीकृष्ण की कुशलता के कारण ही विजय हासिल कर सके थे। प्रेम की सेवा से बढ़कर ऊँची दूसरी कोई सेवा नहीं, जो आदमी आदमी की कर सके। ऐसी सेवा अपने लिए बदले में कुछ नहीं चाहती। जब प्रेम बदले की या मुआवजे की उम्मीद रखता है, तो वह एक

गन्दा सौदा बन जाता है—अपनी ऊँची जगह से गिर जाता है। लेकिन सहज प्रेम के साथ की गई सेवा आदमी को शुद्ध बनाती और ऊँचा उठाती है।

× × × अगर लोग सच्चाई का बेजा इस्तेमाल करते हैं और धोखे-धड़ी से काम लेते हैं तो मैं उसकी परवाह क्यों करूँ? जब तक मुझे अपनी सच्चाई का पक्का भरोसा है, मैं इस डर से कि लोग उसे गलत समझेंगे या उसका गलत इस्तेमाल करेंगे, उसका ऐलान करने से रुक कैसे सकता हूँ? इस दुनिया में ऐसा कोई नहीं है, जिसने पूरी-पूरी सच्चाई को जाना हो। यह तो अकेले एक ईश्वर का ही विशेषण है। हम सब तो सिर्फ सापेक्ष सत्य को ही जानते हैं। इसलिए जिसे हम जानते हैं उसी के मुताबिक अपता बरताव रख सकते हैं। इस तरह सच्चाई का पालन करने से कोई कभी गुमराह नहीं हो सकता।

इसे महात्मा गांधी ने एक ऐसे पत्र के जवाब में कहा था जिसमें लिखा था, “कुछ लोग अन्धविश्वास की वजह से कपड़ों पर रामनाम छपवा लेते हैं; और उन्हें अपने बदन पर, खासकर छाती पर पहनते आढ़ते हैं। दूसरे कुछ लोग कागज़ के टुकड़ों पर बारीक हरूफों में करोड़ों की तादाद में रामनाम लिखते हैं और उन्हें काट-काट कर उनकी छोटी-छोटी गोलियाँ इस खयाल से निगल जाते हैं कि इस तरह वे यह दावा कर सकेंगे कि रामनाम उनके दिल में छप गया है।” इसी प्रकार जब एक दूसरे भाई ने महात्मा गांधी से पूछा था कि क्या उन्होंने रामनाम को सब तरह की बीमारियों का एक ही रामबाण इलाज कहा है? और क्या उनके ये राम ईश्वर के अवतार और अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे? और जब कुछ ऐसे भी लोग पाये गये जो मानते थे कि गांधी जी खुद भुलावे में पड़े हुए हैं और

अंधविश्वासों से भरे इस देश के हज़ारों अन्धविश्वासों में एक और अन्धविश्वास बढ़ाकर दूसरों को भी भुलावे में डालने की कोशिश कर रहे हैं।

इन्हीं सब बातों पर महात्मा गांधी ने कहा था, “जिस राम-नाम को मैं सब बीमारियों की रामबाण दवा कहता हूँ, वह राम न तो ऐतिहासिक या तबारीखी राम है, और न उन लोगों का राम है, जो उसका इस्तेमाल जादू-टोने के लिए करते हैं। सब रोगों की रामबाण दवा के रूप में मैं जिस राम का नाम सुभाता हूँ, वह तो खुद ईश्वर ही है, जिसके नाम का जप करके मत्तों ने शुद्धि और शान्ति पाई है और मेरा यह दावा है कि राम-नाम सभी बीमारियों की, फिर वे तन की हों, मन की हों या रूहानी हों, एक ही अचूक दवा है।

इसमें शक नहीं कि डॉक्टरों या बैदों से शरीर की बीमारियों का इलाज कराया जा सकता है। लेकिन राम-नाम तो आदमी को खुद ही अपना बैद या डॉक्टर बना देता है और उसे अपने को अन्दर से नीरोग बनाने की संजीवनी हासिल करा देता है। जब कोई बीमारी इस हद तक पहुँच जाती है कि उसे मिटाना मुमकिन नहीं रहता, उस वक्त भी राम-नाम आदमी को उसे शान्त और स्वस्थ भाव से सह लेने की ताक़त देता है।

जिस आदमी को राम-नाम में श्रद्धा है, वह जैसे-तैसे अपनी जिन्दगी के दिन बढ़ाने के लिए नामी-गरामी डाक्टरों और वैद्यों के दर की खाक नहीं छानेगा और वहाँ से वहाँ मारा-ढकेला नहीं फिरेगा। राम-नाम डॉक्टरों और वैद्यों के बिना भी अपना काम चला सकनेवाला बनाने की चीज़ है। राम-नाम में श्रद्धा रखने वाले के लिए वही उसकी पहली और आखिरी दवा है।

मनुष्य का भौतिक शरीर तो आखिर एक दिन मिटने ही वाला है। उसका स्वभाव ही है कि वह हमेशा के लिए रह ही

नहीं सकता, और तिस पर भी लोग अपने अन्दर रहनेवाली अमर आत्मा को भुलाकर उसी का ज्यादा प्यार-दुलार करते हैं। राम-नाम में श्रद्धा रखनेवाला आदमी अपने शरीर को ऐसे झूठे लाड़ नहीं लड़ायेगा, बल्कि उसे ईश्वर की सेवा करने का एक जरिया-भर समझेगा। उसको इस तरह का माकूल जरिया बनाने के लिए राम-नाम से बढ़कर दूसरी कोई चीज नहीं। राम-नाम को हृदय में अंकित करने के लिए अनन्त धीरज की, बे-इन्तिहा सब्र की, जरूरत है। इसमें जुग के जुग लग सकते हैं, लेकिन यह कोशिश करने जैसी है। इसमें कामयाबी भी भगवान् की कृपा से ही मिल सकती है।

जब तक आदमी अपने अन्दर और बाहर सचाई, ईमानदारी और पाक़ीजगी या पवित्रता के गुणों को नहीं बढ़ाता, उसके दिल से राम-नाम नहीं निकल सकता। हम लोग रोज शाम की प्रार्थना में स्थितप्रज्ञ का यानी साबित-अक़ल इन्सान का बयान करनेवाले श्लोक पढ़ते हैं। हममें हर एक आदमी साबित-अक़ल या स्थितप्रज्ञ बन सकता है, बशर्ते कि वह अपनी इन्द्रियों को अपने क़ाबू में रक्खे और जीवन को सेवामय बनाने के लिए ही खाये, पीये और मौज-शौक़ या हँसी-विनोद करे। मसलन् अपने विचारों पर अगर आपका कोई क़ाबू नहीं है और अगर आप एक तंग-अँघेरी कोठरी में उसकी तमाम खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द करके सोने में कोई हर्ज़ नहीं महसूस करते और गन्दी हवा लेते हैं या गन्दा पानी पीते हैं तो, मैं कहूँगा कि आपका राम-नाम लेना बेकार है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि चूँकि आप जितने चाहिए उतने पवित्र नहीं हैं, इसलिए आपको राम-नाम लेना छोड़ देना चाहिए। क्योंकि पवित्रता या पाक़ीजगी हासिल करने के लिए भी राम-नाम लेना मुफ़ीद है। जो आदमी दिल से राम-नाम

लेता है, वह आसानी से अपने-आप पर काबू रख सकता है और 'डिसिप्लिन' या अनुशासन में रह सकता है। उसके लिए तन्दुरुस्ती और संकाई के कानूनों का पालन करना सहल हो जायगा। उसकी जिन्दगी सहज भाव से बीत सकेगी—उसमें कोई विषमता न होगी। वह किसी को सताना या दुःख पहुँचाना पसन्द नहीं करेगा।

दूसरों के दुःखों को मिटाने के लिए, उन्हें राहत पहुँचाने के लिए खुद तकलीफ उठा लेना उसकी आदत में आ जायगा और उसको हमेशा के लिए एक अमिट सुख का लाभ मिलेगा—उसका मन एक शाश्वत और अमर सुख से भर जायगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप लगे रहिए और जब तक काम करते हैं, तब तक सारा समय मन ही मन राम-नाम लेते रहिए। इस तरह करने से एक दिन ऐसा भी आयेगा कि जब राम-नाम आपका सोते-जागते का साथी बन जायगा और उस हालत में आप ईश्वर की कृपा से तन, मन और आत्मा से पूरे-पूरे स्वस्थ और तन्दुरुस्त बन जायँगे।

आप सब मेरे साथ राम-नाम लेने या रामनाम लेना सीखने के लिए रोज़-ब-रोज़ इन प्रार्थना-सभाओं में आते रहे हैं। लेकिन राम-नाम सिर्फ़ ज़बान से नहीं सिखाया जा सकता। मुँह से निकले बोल के मुकाबले दिल का ख़ामोश ख़याल या मौन विचार कहीं ज्यादा ताक़त रखता है। एक सच्चा विचार सारी दुनिया पर छा सकता है—उसे प्रभावित कर सकता है। वह कभी बेकार नहीं जाता। विचार या ख़याल को बोल या काम का जामा पहनाने की कोशिश ही उसकी ताक़त को महदूद कर देती है। ऐसा कौन है जो अपने विचार या ख़याल को शब्द या कार्य में पूरी तरह प्रकट करने में कामयाब हुआ हो ?

आप यह पूछ सकते हैं कि अगर ऐसा है, तो फिर आदमी हमेशा के लिए मौन ही क्यों न ले ले ? उसूल तो यह मुमकिन है, लेकिन जिन शर्तों के मुताबिक मौन-विचार पूरी तरह क्रिया की जगह ले सकते हैं, उन शर्तों को पूरा करना बहुत मुश्किल है। मैं खुद अपने विचारों पर इस तरह का पूरा-पूरा काबू पा लेने का कोई दावा अपने लिए नहीं कर सकता। मैं अपने मन से बे-मतलब और बेकार के खयालों को पूरी-पूरी तरह दूर नहीं रख सकता। इस हालत को पाने या इस तक पहुँचने के लिए तो अनन्त धीरज जागृति और तपश्चर्या की जरूरत है। ;

कल जब मैंने आपसे यह कहा था कि राम-नाम की शक्ति का कोई पार नहीं है, तब मैं किसी आलंकारिक भाषा में नहीं बोल रहा था, बल्कि मैं सचमुच यही कहना भी चाहता था। मगर इस चीज को महसूस करने के लिए बिल्कुल शुद्ध और पवित्र हृदय से राम-नाम का निकलना जरूरी है। मैं खुद इस हालत को पाने की कोशिश में लगा हुआ हूँ। मेरे दिल में तो इसकी एक तस्वीर खिंच गई है, लेकिन मैं इसे पूरी तरह अमल में ला नहीं सका हूँ। जब वह हालत पैदा हो जायगी, तब तो रामनाम रटना भी जरूरी न रह जायगा।

“मुझे उम्मीद है कि मेरी गैर हाजिरी में भी आप अपने घरों में अलग-अलग और एक साथ बैठकर रामनाम लेते रहेंगे। सब के साथ मिल कर, मजमें की शकल में। प्रार्थना करने का राज या रहस्य यह है कि उसका एक-दूसरे पर जो शान्त प्रभाव पड़ता है, वह आध्यात्मिक उन्नति रुहानी तरक्की की राह में मददगार हो सकता है।”

१६-विश्वास-चिकित्सा और रामनाम

किसी सज्जन ने महात्मा गांधी को इस प्रकार का एक पत्र लिखा था, “मैंने १७-३-४६ के ‘हरिजन’ में आपका लेख “जब जागे तभी सबेरा पढ़ा’ है। क्या आपका कुदरती इलाज और विश्वासी-चिकित्सा कुछ मिलती-जुलती चीजें हैं? बेशक मरीज को इलाज में श्रद्धा (एतक्काद) तो होनी ही चाहिए, लेकिन कई ऐसे इलाज हैं, जो सिर्फ विश्वास से ही रोगी को अच्छा कर देते हैं, जैसे, माता (चेचक), पेट का दर्द बगैरह बीमारियों के।

शायद आप जानते हों, माता का, खासकर दक्षिण प्रान्तों में कोई इलाज नहीं किया जाता। इसे सिर्फ ईश्वर की माया मान लिया जाता है। हम मरिअम्मा देवी की पूजा करते हैं। बहुत-से लोग तिरुपति में देवी की मिन्नते मानते हैं। बहुत-से रोगी अच्छे हो जाते हैं। यह चीज एक करामात-सी लगती है। जहाँ तक पेट दर्द की बात है बहुत से लोग तिरुपति में देवी की मिन्नते मानते हैं। अच्छे होने पर उसकी मूर्ति के हाथ पाँव धोते हैं। और दूसरी मानी हुई मिन्नतों को पूरा करते हैं। मेरी ही माँ की मिसाल लीजिए। उनको पेट में दर्द रहता था। पर तिरुपति ही आने के बाद उनकी वह तकलीफ दूर हो गई।

कृपा करके इस बात पर रोशनी डालिए और यह भी कहिए कि कुदरती इलाज पर भी लोग ऐसी ही विश्वास क्यों न रखें? इससे डाक्टरों का बार बार का खर्च बच जायगा, क्योंकि जैसा कि चासर कहता है, डाक्टर का तो काम ही है कि वह दवाई बेचने वाले से मिलकर बीमार को हमेशा बीमार बनाये रखे।”

इन मिसालों पर बोलते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, “जो मिसालें ऊपर दी गई हैं, वे न तो कुदरती इलाज की ही हैं, और न ही ‘रामनाम’ की, जिसको मैंने इसमें शामिल किया है। पर उनसे यह पता जरूर चलता है कि कुदरत बहुत से रोगियों को बिना किसी इलाज के भी अच्छा कर देती है। मिसालें यह भी दिखाती हैं कि हिन्दुस्तान में वहम हमारी जिन्दगी का कितना बड़ा हिस्सा बन गया है। कुदरती इलाज का मध्य-बिन्दु (मर-क-जी नुक्ता) यानी राम-नाम तो वहम का दुश्मन है। जो बुराई करने के लिए भिक्कते नहीं, वे रामनाम का नाजायज फायदा उठावेंगे। पर वे तो हर चीज या हर उसूल के साथ ऐसा ही करेंगे। खाली जबान से रामनाम रटने से इलाज का कोई लेन-देन नहीं।

अगर मैं ठीक समझा हूँ, तो जैसा कि लेखक ने बताया है, विश्वास-चिकित्सा में यह माना जाता है कि रोगी अन्ध-विश्वास से अच्छा हो जाता है। यह मानना तो जिन्दा खुदा के नाम की हँसी उड़ाना है। रामनाम सिर्फ कल्पना (तखैयुल) की चीज नहीं, उसे तो दिल से निकलना है। परमात्मा में ज्ञान के साथ विश्वास हो और उसके साथ साथ कुदरत के नियमों (कानूनों) का पालन किया जाय, तभी किसी दूसरी मदद के बिना रोगी बिलकुल अच्छा हो सकता है। उसूल यह है कि शरीर की सेहत तभी बिलकुल अच्छी हो सकती है, जब मन की सेहत पूरी-पूरी ठीक हो। और मन पूरा-पूरा ठीक तभी होता है जब दिल पूरा-पूरा ठीक हो। यह वह दिल नहीं, जिसे डाक्टर टोटियों से देखते हैं, बल्कि वह दिल है, जो ईश्वर का घर है।

कहा जाता है कि अगर कोई अपने अन्दर परमात्मा को पहचान ले, तो एक भी गन्दा या फजूल खयाल मन में नहीं आ सकता। जहाँ विचार शुद्ध हों वहाँ बीमारी आ ही नहीं सकती

ऐसी हालत को पहुँचना शायद कठिन हो। पर इस बात को समझ लेना सेहत की पहली सीढ़ी है, समझने के साथ-साथ कोशिश भी करना। जब किसी के जीवन में यह बुनियादी तबदीली (परिवर्तन) आती है, तो उसके लिए स्वाभाविक (फितरती) हो जाता है कि वह उसके साथ-साथ क्रुदरत के उन तमाम कानूनों का पालन भी करे, जो आज तक मनुष्य ने ढूँढ़ निकाला है। जब तक उनमें वेपर्वाही की जाय, तब तक कोई यह नहीं कह सकता कि उसका हृदय पवित्र है।

यह कहना गलत न होगा कि अगर किसी का हृदय पवित्र है, तो उसकी सेहत राम-नाम न लेते हुए भी उतनी ही अच्छी रह सकती है बात सिर्फ यह है कि सिवा राम-नाम के पवित्रता पाने का और कोई तरीका मुझे मालूम नहीं। दुनिया में हर जगह पुराने ऋषि भी इसी रास्ते पर चले हैं। और वे तो खुदा के बन्दे थे, कोई वहमी या ढोंगी आदमी नहीं।

अगर इसी का नाम 'क्रिश्चियन सायन्स' है तो मुझे कुछ कहना नहीं। मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि राम-नाम मेरी ही शोध (दरियाफ्त) है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, राम-नाम तो ईसाई धर्म से भी पुराना है।

एक भाई पूछते हैं कि क्या राम नाम में जरूरी (शस्त्र-क्रिया) इलाज की इजाजत नहीं? क्यों नहीं? एक टॉग अगर हादसे (दुर्घटना) में कट गई है, तो राम-नाम उसे थोड़े ही वापस ला सकता है। लेकिन बहुत-सी हालतों में आपरेशन जरूरी नहीं होता। मगर जहाँ जरूरी हो, वहाँ करवा लेना चाहिए। सिर्फ इतनी बात है कि अगर खुदा के किसी बन्दे का हाथ-पाँव जाता रहा, तो वह इसकी चिन्ता नहीं करेगा। राम-नाम कोई अटकल पक़्चू तजवीज़ नहीं है, न ही कोई काम चलाऊ चीज़।”

२०—रामनाम की कृपा होगी तो

धर्म और अधर्म का विवेक करते हुए किसी सज्जन ने महात्मा गांधी को लिखा था, “५ मई (सन् १९४६) के ‘हरिजन बन्धु’ में आपने लिखा है कि आपकी अहिंसा में भयानक प्राणियों को, मसलन् शेर, भेड़िया, साँप, बिच्छू वगैरह को मार डालने की गुञ्जाइश है।

‘आप कुत्तों वगैरह को खाना नहीं देते।’ गुजराती समाज के अलावा और भी बहुत से लोग हैं, जो जानवरों को खिलाना पुण्य समझते हैं। आजकल जब कि खुराक की इतनी तंगी है, ऐसा खयाल नामुनासिब हो सकता है। मगर इतनी बात तो है कि ये जानवर (कुत्ते वगैरह) आदमी की काफ़ी सेवा करते हैं। इन्हें खिलाकर इनसे काम लिया जा सकता है।

आपने डरबन से स्व० श्री रामचन्द्र भाई को २७ सवाल पूछे थे। उनमें एक सवाल यह भी था कि जब साँप काटने आये तो क्या किया जाय? उन्होंने जवाब दिया था कि आत्मार्थी साँप को नहीं मारेगा। साँप काटे, तो उसे काटने देगा। मगर अबकी तो आप दूसरी ही बात कह रहे हैं। ऐसा क्यों?”

इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने लिखा था, “इस बारे में मैं काफ़ी लिख चुका हूँ। उन दिनों सवाल पागल कुत्तों को मारने का था। काफ़ी चर्चा हुई थी। मगर मालूम होता है कि वह सब भूल गई है।

मैं जिस अहिंसा का पुजारी हूँ, वह निरी जीव-दया ही नहीं है। जैन-धर्म में जीव-दया पर खूब बजन दिया गया है। वह समझ में आता है, मगर उसका यह मतलब हर्गिज नहीं कि

इन्सान को छोड़कर हैवानों पर दया की जाय। मैं मानता हूँ कि जहाँ जानवरों पर दया करने की बात लिखी है, वहाँ मनुष्य पर दया करने की बात तो मान ही ली गई है। ऐसा करने में हृद छूट गई है और अमल में तो जीव-दया ने टेढ़ा रूप ही लिया है। जीव-दया के नाम पर अनर्थ हो रहा है। बहुत से लोग चींटियों को आटा डालकर सन्तोष मानते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो आजकल की जीव-दया में जान ही नहीं रही। धर्म के नाम पर अधर्म चल रहा है, पाखण्ड फैल रहा है।

अहिंसा सबसे ऊँचा धर्म है। वह बहादुरों का धर्म है, कायरों का कभी नहीं। दूसरे मारें, हिंसा करें और हम उससे फायदा उठाएँ और मानें कि हमने धर्म का पालन किया है, तो यह अपने आपको धोखा देना नहीं हुआ, तो और क्या हुआ ?

जिस गाँव में रोज बाघ आता है, वहाँ नाम का अहिंसा-वादी नहीं रहेगा। वह तो वहाँ से भाग जायगा और जब कोई दूसरा आदमी उस बाघ को मार डालेगा तब वापस आकर अपने घर-बार पर कब्ज़ा करेगा। यह अहिंसा नहीं है। यह तो डरपोर की हिंसा है। बाघ को मारने वाले ने कुछ बहादुरी तो दिखाई, मगर जो दूसरे की हिंसा से लाभ उठाता है, वह कायर है। वह कभी अहिंसा को पहचान नहीं सकता।

देहधारी को कुछ-न-कुछ हिंसा तो करनी ही पड़ती है। असल धर्म एक होते हुए भी उसके बारे में हर एक की समझ अलग-अलग होती है। इसलिए सब अपनी शक्ति और समझ के मुताबिक उस पर चलते हैं। एक का धर्म दूसरे के लिए अधर्म हो सकता है। मांस खाना मेरे लिए अधर्म है, मगर जो मांस पर ही पला है, जिसने मांस खाने में कभी बुराई नहीं मानी, वह मुझे देखकर मांस छोड़ दे, तो उसके लिए वह अधर्म होगा।

मुझे खेती करनी हो, जङ्गल में रहना हो, तो खेती के लिए लाजिमी (अनिवार्य) हिंसा मुझको करनी ही पड़ेगी। बंदरों, परिन्दों और ऐसे जन्तुओं को जो फसल खा जाते हैं, खुद मारना होगा, या कोई ऐसा आदमी रखना होगा, जो उन्हें मारे। दोनों एक ही चीज है। जब अकाल सामने हो, तब अहिंसा के नाम पर फसल को उजड़ने देना मैं तो पाप ही समझता हूँ। पाप और पुण्य स्वतंत्र चीजे नहीं हैं। एक ही चीज एक समय पाप और दूसरे समय पुण्य हो सकती है। आदमी को शास्त्र-रूपी कुएं में डूब नहीं जाना है, बल्कि गोता खोर बनकर शास्त्र रूपी समुद्र में से मोती निकालने हैं। इसलिए कदम-कदम पर आदमी को हिंसा और अहिंसा का विवेक (तमीज) करना होता है। इसमें न शर्म की गुंजायश है, न डर की।

“हरिनों मारन छे शुरानों, नहिं कायरनु’ काम जोने” (हरि का रास्ता बहादुरों का है, डरपोकों का उसमें कोई काम नहीं।)

आखिर श्री रामचन्द्र भाई ने तो यह लिखा था कि अगर मुझमें शक्ति हो और मैं आत्मा को पहचानना चाहता होऊँ, तो साँप के काटने आने पर मुझे चाहिए कि मैं उसे काटने दूँ। मैंने तो उसका खत मिलने से पहले या बाद में आज तक कभी साँप को मारा ही नहीं, इसे मैं अपनी बहादुरी नहीं समझता। मेरा आदर्श तो यह है कि मैं साँप और बिच्छू से बेधड़क खेल सकूँ। मगर आज तो मेरा यह एक मनोरथ ही है। मैं नहीं जानता कि यह मनोरथ कभी फलेगा या नहीं और अगर फला तो कब ?

मैंने अपने आदमियों को सब जगह साँप और बिच्छू मारने दिये हैं। मैं चाहता तो उन्हें रोक सकता था। मगर रोकता कैसे ? इन जानवरों को अपने हाथ में पकड़ कर दूसरों को निडर

बनाने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। न होने की मुझे शर्म थी। मगर वह मेरे या उनके किस काम की ?

रामनाम की कृपा होगी, तो मुझे आशा करनी चाहिए, कि किसी रोज ऐसा करने की हिम्मत आ जायगी। मगर तब तक मैं तो ऊपर बताया हुआ धर्म ही जानता हूँ। धर्म भी तजबे से सीखा जाता है, कोरी पंडिताई से नहीं।”



२१—अगर हम ईश्वर के बच्चे हैं तो

भारतवर्ष की सभी संस्थाओं और उनके कार्य-कर्त्ताओं के प्रति देश की रक्षा के उद्देश्य से महात्मा गांधी ने इस प्रकार कहा था, “कुछ पंडित उसे अनजाना कहते हैं, कुछ कहते हैं, जाना नहीं जा सकता। दूसरे उसे ‘नेति-नेति’ (यह नहीं, यह नहीं) कहते हैं। इस वक्त हमारे मतलब के लिए ‘अनजाना’ काफी है।

कल (६ जून सन् १९४६) जब प्रार्थना में मैंने लोगों से दो शब्द कहे, तो यही कह सका कि जितनी शक्ति हमें वह अज्ञात (अनजाना) दे सकता है, और जहाँ तक वह रास्ता दिखा सकता है उसके लिए हम उससे प्रार्थना करें, और उसी पर भरोसा रखें। हिन्दुस्तान के सामने आज एक बड़ा नाटक खेला जा रहा है। उसमें हर एक पार्टी के रास्ते में बड़ी मुश्किलें हैं। उन्हें इसी ‘अनजाने’ पर भरोसा रखना चाहिए। वह इन्सान की अकल को चक्कर में डाल सकता है और उसकी नाचीज तज-बीजों को एक पल में उलट-पुलट कर सकता है। ब्रिटिश पार्टी इस ‘अनजाने’ ईश्वर पर विश्वास रखने का दावा करती है। मुस्लिम लीग का भी यही कहना है। वह बड़े जोश से ‘अज्ञा-हो-

अकबर' के नारे लगाती है। कांग्रेस के पास इस किस्म का कोई एक नारा नहीं हो सकता। पर अगर वह सारे हिन्दुस्तान की नुमाइन्दा बनना चाहती है तो वह ईश्वर पर विश्वास रखने वाले करोड़ों की भी नुमाइन्दा है, चाहे वे खुदा के घर के किसी भी हिस्से के रहने वाले हों।

मैं हमेशा आशावादी रहा हूँ। फिर भी यह लिखते वक्त मैं पक्की तरह से नहीं कह सकता कि कम-से-कम सियासी (राजनीतिक) बोली में यह चीज महफूज (सुरक्षित) है। इसलिए मैं यही कह सकता हूँ कि अगर सब पार्टियों की पूरी-पूरी और सच्ची कोशिश के होते हुए भी ऐसी चीज हो गई जो गैर महफूज (असुरक्षित) है, तो मैं उनसे कहूँगा कि वे भी मेरे साथ मिलकर कहें कि जो हुआ, सो अच्छा हुआ। इस गैरमहफूज चीज में ही हमारी हिकाजत थी।

अगर हम सब ईश्वर के बच्चे हैं, और हैं, चाहे हम मानें या न मानें, तो हमारा फर्ज हो जाता है कि जो कुछ भी हो, उससे घबराहट में न पड़ें। और उत्साह (जोश) और आत्म-विश्वास से (अपने पर भरोसा रखते हुए) अगले कदम की तैयारी करें, चाहे वह कदम कुछ भी हो। शर्त सिर्फ यह है कि हर एक पार्टी ईमानदारी के साथ सारे हिन्दुस्तान की भलाई की पूरी कोशिश करे, क्योंकि हमारी बाजी वही है, दूसरी नहीं।”

२२—सब से अच्छी दवाइँ रामनाम है

श्री फ्राइडमन ने महात्मा गांधी के पास नीचे दिये गये सन्देश को भेजा था। श्री फ्राइडमन को जनता ज्यादातर श्री

भारतानन्द के नाम से जानती है। यद्यपि अपने इस सन्देश को उन्होंने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण समझा था फिर भी महात्मा गांधी इस पर मोहित नहीं हुए थे क्योंकि इसका कोई विशेष प्रभाव महात्मा गांधी के विचारों पर नहीं पड़ा था। अपने सन्देश में भारतानन्द ने यह लिखा था—

“आप सत्य और अहिंसा पर इतना जोर देते हैं, इसीलिए मैं आपकी तरफ इतनी दूर से खिंचा चला आया हूँ। लेकिन मैंने यह महसूस किया है कि अहिंसक बनने के लिए सिर्फ सत्य और अहिंसा की इच्छा (ख्वाहिश) काफी नहीं। इसलिए मुझे लगा कि सिर्फ अहिंसा का प्रचार करना काफी नहीं होगा। कोई ऐसा रास्ता चाहिए, जिससे लोग फिर नये सिरे से अपने आपको नई शकल में ढाल सकें।

सिर्फ अहिंसा के उसूल पर मोहित हो जानें और अहिंसक होने की इच्छा करने से आदमी सच्चा अहिंसक (अदमत्शब्द-दुदवाला) नहीं बन सकता। हमारे मन की अनजानी तहें आसानी से अकल का कहना नहीं मानती और जब मन का जाना हुआ हिस्सा एक खयाल में डूब ही जाय, तो भी हो सकता है कि उसका अनजाने मन पर कुछ असर न हो। उस पर जल्दी से असर न होने के कारण हैं, हमारी छिपी ख्वाहिशें और डर, जो अपने से उलटे विचारों को बेदार (जाग्रत) होने नहीं देते। जब तक अनजाना मन साफ न किया जाय और छिपी रुकावटें हटाई न जायें, तब तक मनुष्य का असली रूप, जो कि अक्लमन्द और रहमदिल (दयालु) है, बाहर नहीं आ सकता।

इसलिए यह जरूरी है कि जो सच्चे दिल से अहिंसा की तलाश में है उनको बताया जाय कि किस तरह मन के अन्दर सत्य और अहिंसा के रास्ते में छिपी रुकावटों को दूर किया

जाय, ताकि सत्य और अहिंसा दिल में अपने-आप टिकाऊ और असर-कारी रूप में जम जाँय ।

प्रार्थना और उद्योग (दस्तकारी) वगैरह जैसी बाहरी चीजें सचाई ओर रहमदिली को पाने का कोई अच्छा तरीका नहीं । मनुष्य-जाति का सारा इतिहास (तवारीख) इस बात की गवाही देता है । ठीक दिशा (तरफ) में कोशिश करने पर ही इन्सान अपने-आप को नये सिरे से ढाल सकता है । नेक इरादे ही काफ़ी नहीं नहीं, ठीक तरीकों की भी जरूरत होती है । खुशकिस्मती से ऐसे तरीके मालूम हैं । आजमाकर देखा जा चुका है कि वे ठीक, काबिल और मनुष्य के मन से हमरंग (एक रंगवाले) हैं । बेशक, इन पर अमल बहुत कम करते हैं । मेरा मतलब सावधानी के तरीके से है, जिसकी महात्मा बुद्ध ने बहुत तारीफ़ की है और कहा है कि कोई तरीका इससे ज्यादा कारगर (काम आने वाला) नहीं । महात्मा बुद्ध बहुत संजीदा (गंभीर) और कम बोलनेवाले (मितभाषी) मनुष्य थे । फिर भी वे यहाँ तक कहते हैं कि इस तरीके से आदमी सात दिन में कमाल के दर्जे (सम्पूर्णता) तक पहुँच सकता है ।

शायद आपने सावधानी के अमल (साधना) के बारे में न पढ़ा हो, इसलिए थोड़े में उसका हाल लिखता हूँ ।

जो आदमी इस साधना को अपनाये, उसे चाहिए कि हमेशा चीजों को ध्यान से देखता रहे, आँख और कान खुले रखे, और अपने खयालों और जज्बों (विचारों और भावनाओं) से अच्छी तरह वाकिफ़ रहे । यह भी जाने कि उसका शरीर उन्हें किस तरह जाहिर (प्रकट) करता है । मनुष्य को चाहिए कि वह छान-बीन की आदत रखे, और जाग्रत और चौकन्ना रहे । लेकिन यह जरूरी है कि उसकी जानकारी पर उसके निजी खयालों और विचारों का रंग न चढ़े । उसे चाहिए कि वह अलग-अलग रहे,

न फैसला दे, न किसी को बुरा-भला कहे। सिर्फ सचेत रहे, और कुछ नहीं। अगर हम अपने साँस लेने को ध्यान से देखें, तो यह बात भट्ट समझ में आ जायगी। क्योंकि इस क्रिया या अमल के साथ कोई इच्छाएँ और डर लगे हुए नहीं होते, इसलिए आप इसे बगैर लगाव के देख सकते हैं।

अगर एक मनुष्य लगातार इस चीज को बड़े ध्यान से देखने लग जाय कि उसका मन और उसके जञ्जात (भावनाएँ) किस तरह काम करते हैं और किस तरह वे शरीर (जिस्म) के जरिये जाहिर होते हैं बड़ी जल्दी उसमें परिवर्तन (अन्दरूनी तबदीली) होना शुरू हो जाता है। मन बिलकुल साफ और शफ़काक (पारदर्शक) हो जाता है; मानो बिलकुल खाली हो गया हो। यों, जाना मन साफ़ हुआ कि उसमें अनजाने मन की घुंडियाँ नज़र आने लगती हैं। आगाही की रोशनी में वे पिघल कर ख़त्म हो जाती हैं, और उनकी जगह अनजाने मन की और ज्यादा नीचे की, और, और भी पहुँच से बाहर की तहों को भरने और इस तरह ख़त्म होने का मौक़ा मिलता है।

अगर यह सारी क्रिया (अमल) ठीक ढंग से की जाय, तो इसमें कोई मेहनत नहीं पड़ती। बेहद खुशी होती है और ऐसा लगता है, मानों सारे बन्धनों से छुटकारा मिल गया हो। दिन-ब-दिन आदमी ज्यादा अक़लमन्द और रहमदिल होता जाता है और उसकी अक़ल और रहम दिली कोई उसके अपने ऊपर जबर्दस्ती लादी हुई चीज़ नहीं होती, बल्कि खुद-ब-खुद फटती है। इसलिए ये ख़ुवियाँ टिकाऊ होती हैं, क्योंकि मन की अनजानी तह में कोई ऐसी चीज़ नहीं होती, जो इनके रास्ते में रुका-बट डाले।

यह साबित करने के लिए कि अगले ज़माने के लोग सावधानी के तरीक़े से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे, मैंने जान-बूझकर

पच्छिम की और हिन्दुस्तान की मानो हुई किताबों के हवाले नहीं दिये। यह तरीका इतना सादा है, और इसकी खूरी इतनी आसानी से आदमी अपने-आप आजमा सकता है कि इसको सनद की जरूरत नहीं। आप आसानी से इसको अपने ऊपर आजमा सकते हैं। एक हफ्ते में आपको यकीन हो जायगा कि महात्मा बुद्ध ने हमें अपने आपको नये ढंग से हमेशा के लिए सत्य रूप बनाने की गरज से एक ऐसा कारगर साधन दे दिया है, जिसकी कोई मिसाल नहीं।

जब तक हम व्यक्तिगतरूप या इनफिरादी हैसियत से सच्चे और अहिंसक न हो जायें तब तक दुनिया में सत्य और अहिंसा की उम्मीद फजूल है। इसलिए यह निहायत जरूरी है कि हम खुद सच्चे और अहिंसक बनें। इसके लिए एक ऐसा रास्ता है, जिसकी बड़ों ने तारीफ की है और जिसे बहुत लोगों ने आजमा कर देख भो लिया है कि वह रास्ता कारगर, सीधा, सच्चा और सही है। आप दोस्तों की ऐसी छोटी-छोटी टुकड़ियों में इसे बार-बार आजमाइए, जो इस पर पूरे ध्यान से चले और बाद में अपना-अपना तजरबा एक-दूसरे से मिलायें। नतीजे आप अपने-आप देख लेंगे। इसकी दुरुस्ती उतनी ही अच्छी तरह से जाँची जा सकती है जितनी कि एक सायन्स के प्रयोग की।

एक और पहलू भी देखने का है। आपको बहुत से ईमानदार और मुस्तैद (तत्पर) लोग मिले होंगे, जो इस बुनियाद पर झूठ और बेरहमी की हिमायत करते हैं कि उनसे काम ज्यादा अच्छा और जल्दी निकलता है। उनके तरीके नफरत और बेवकूफी या दलील के रूप में होते हैं। अगर आप उनको सावधानी सिखा देंगे, तो वे इस नफरत और बेवकूफी की जड़ें अपने-आप देख लेंगे। मूढ़ (कुन्द-जिह्न) और बेरहम आदमी को भी सावधानी का रास्ता अकृमन्द और रहमदिल बना देगा, क्योंकि वह मूढ़ता

(कुन्द-जिहनी) और बेरहमी की जड़ ही काट देगा। और वे हैं वृष्णा (ख्वाहिशों) और उससे पैदा हुए डर।

मेहरबानों करके इस सन्देश (पैग़ाम) की कीमत का फैसला सन्देश लानेवाले की कीमत से न कीजिए। यह सन्देश बड़े भड़े तरीक़े से आप तक पहुँचाया जा रहा है, फिर भी आपके काम के लिए बहुत अहमियत (महत्त्व) रखता है।”

इस सन्देश पर महात्मा गांधी ने केवल यही लिखा था, “ऊपर का सन्देश श्री फ़ाइडमन ने लिखकर भेजा है, जिनको जनता ज्यादातर श्री भारतानन्द के नाम से जानती है। जो भी इसकी कीमत हो, मैंने इसको यहाँ नक़ल कर दिया है। मैं इस पर मोहित नहीं हो गया हूँ। बहुत-से दूसरे इलाजों की तरह इसने मुझ पर कोई ख़ास असर नहीं किया। अगर यह ७ दिन में हो जाने वाला काम है, तो क्या बजह है कि आज दुनिया में इसके इतने कम गवाह पाये जाते हैं? मदद के रूप में यह तरीक़ा आम इस्तेमाल होता है। और दूसरे इलाजों की तरह इसका भी अपना स्थान (जगह) है, चाहे इसको सावधानी कहो, जाग्रति कहो या ध्यान कहो। यह प्रार्थना, माला या दूसरी बाहरी साधना या तपस्या की जगह नहीं ले सकता, उनके साथ-साथ चल सकता है। अगर दिखावे के लिए न की जाय, तो इन साधनाओं की अपनी जगह है। असल में प्रार्थना तो सिर्फ़ भीतर की बात है।

जिन्होंने राम-नाम का तिलश्म दूँढ़ पाया, वे सावधान तो थे ही। पर उन्होंने अनुभव (तजरबा) किया कि सत्य और अहिंसा पर अमल करने के लिए जितनी दवाइयाँ हैं, उनमें से सबसे अच्छी दवाई राम-नाम है।”

२३—अगर आपको आत्मा मजबूत है तो

आज़ाद हिन्द फौज के एक कप्तान महात्मा गांधी से मिलने गये थे। जाते ही उन्होंने कहा, “हमें एक मौका दीजिए। अब हम क्या करें? आप हमसे क्या उम्मीद रखते हैं?”

उन्हें जवाब देते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “आप लोगों ने लड़ाई के मैदान में जो हिम्मत और बहादुरी दिखाई, वही अब यहाँ दिखाइए। आज़ाद हिन्द फौज के लोगों में पूरा-पूरा इत्तहाद या एका था। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, सभी कौम के लोग सगे भाई की तरह रहते थे। आप में न कोई ऊँचा था और न कोई नीचा। कोई अछूत भी न था। एकता की इस भावना को आप यहाँ भी बरत कर दिखाइए, गोकि मुझे डर है कि यहाँ आप इसमें कामयाब नहीं होंगे।”

इस बात को मानते हुए आज़ाद हिन्द फौजवाले ने कहा, “जी हाँ, आप सच कहते हैं। जब तक यहाँ ब्रिटिशों को हुकूमत मौजूद है, तक तक हम लोग एक नहीं हो सकते।”

इस पर उन्हें समझाते हुए महात्मा-गांधी ने कहा, “सो सच है, लेकिन ब्रिटिश हुकूमत के मौजूद होते हुए भी यहाँ उसे छोड़कर बहुत से ऐसे काम हैं जो करने लायक हैं। मैं अपनी राखी खुशी से भंगी बना हूँ। इससे मुझे कौन रोक सकता है? शाह-नवाज़ पहले हिन्दुस्तानी हैं और आखिर में भी हिन्दुस्तानी हैं। उनके दिल में यह खयाल ही नहीं है कि वे किसी ख़ास क़ौम के हैं। इस तरह अपने हिन्दुस्तानी होने का खयाल रखने से उन्हें कौन रोक सकता है? इक़तीक़त यह है कि वे जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ अपने हिन्दू दोस्तों के घर ही ठहरते हैं। फिर भी वे इस

बात को समझ गये हैं कि हिन्दुस्तान के बाहर उन्होंने जो काम-याबी हासिल की थी, वह यहाँ आसानी से नहीं मिल सकेगी। आज़ाद हिन्द फ़ौज के लोग वापस अपने घर पहुँचने के बाद अपने आसपास की हवा से प्रभावित हो जाते हैं और बाहर जो कुछ सीखे थे, उसे भूल जाते हैं। ऐसी हालत में उनके विचारों और भावनाओं यानी ख़यालों और ज़ज्बों को पुराने ढर्रे पर चढ़ने से रोकने का काम मुश्किल है।

इसके साथ ही आपका यह उम्मीद रखना भी मुनासिब न होगा कि हिन्दुस्तान आप पर लाखों रुपया खर्च करे। आपको इटली के सरदार गैरी बाल्डी के सिपाहियों की तरह बनना होगा। गैरी बाल्डी ने उनसे कहा था, “मेरे पास आपको देने के लिए और कुछ नहीं, सिर्फ़, आँसू और मज्दूरी है।” जब लड़ाई के मैदान में लड़ने का काम न होता, तब वे सिपाही अपनी खेती-बारी करके अपना गुजारा किया करते थे। उन्हें कोई तनखाह नहीं देता था उड़ाऊ बनकर पानी की तरह पैसा बहाने वाले ब्रिटिश लोगों ने आपको तालीम दी है। अगर आपने यह उम्मीद रखली होगी कि आपको ब्रिटिश हुकूमत की तरह हिन्दुस्तान वाले भी बिकटोरिया क्रॉस (एक तरह का बिल्ला जो फ़ौजी-लोगों को बहादुरी के खास काम करने पर दिया जाता है और जिसके साथ बिल्ला पाने वाले को जिन्दगी भर के लिए साल भर का खर्च हर साल दिया जाता है) या ऐसे ही दूसरे इनाम देंगे, तो वह बेकार होगी। हिन्दुस्तान के करोड़ों भूखों मरने वाले लोगों के बस की यह बात नहीं। आपको उनके साथ एक होकर उनकी सेवा करनी होगी। आज एक मामूली हिन्दुस्तानी फ़ौजी आदमी को देखकर काँप उठता है। फ़ौजी आदमी गुण्ठों का-सा बर्ताव करता है और उसकी मनमानी के खिलाफ़ कहीं कोई इन्साफ़ नहीं मिलता। आपको अपने बर्ताव से यह साबित कर देना है

कि आप उनके दोस्त हैं और उनकी सेवा करने वाले हैं, जिससे वे आपका डर न रखें।”

आज़ाद हिन्द फौज के कप्तान ने बीच ही में कहा, “जिस तरह हम हिन्दुस्तान के बाहर आम लोगों के साथ दोस्ती रखते थे और उनकी मदद करते थे, उसी तरह यहाँ भी करते हैं।

इस पर महात्मा गांधी ने कहा, “यह अच्छी बात है। लेकिन मुझे आप से यह कहना चाहिए कि आज़ाद हिन्द फौज के लोगों को काबू में रखने का काम आपके बड़े अफसरों को मुश्किल मालूम होने लगा है। आप लोगों में आपस-आपस की नफरत बढ़ी है। और हलकी ईर्ष्या या जलन पैदा होने लगी है। यह खयाल जोर पकड़ने लगा है कि ‘उसे फलों चोरी मिली और मुझे क्यों नहीं?’ जब आप परदेस में थे, तब हालत कुछ और थी। वहाँ आपके समर्थ नेता जी बोस आपकी पीठ पर थे। हम दोनों में गहरी ना-इत्तफाकी थी, फिर भी उनकी जलती हुई देशभक्ति, उनकी हिम्मत और सूझ और नये-नये साधन खड़े कर लेने की उनकी ताकत पर मैं आशिक था।”

आज़ाद हिन्द फौज के कप्तान ने फिर कहा, “आपके लिए उनके दिल में जो गहरी मुहब्बत और इज्जत थी, उसका खयाल आपको नहीं आ सकता।” इसके बाद उन्होंने फिर पूछा, “आजादी के लिए आगे जा लड़ाई छिड़ेगी, उसमें हम लोग किस तरह अपना हिस्सा अदा करें।

उन्हें जवाब देते हुए महात्मा गांधी ने कहा, “आजादी की लड़ाई आज भी चल रही है। वह कभी रुकी नहीं। लेकिन जब तक मेरी चलेगी, तब तक वह अहिंसक रहेगी। पिछले २५ बरसों में आम लोगों ने अहिंसा की तालीम को ठीक-ठीक हजम किया है। लोग अब यह समझ चुके हैं कि अहिंसा के हथियार से बच्चे औरते, और अपाहिज बूढ़े भी बड़ी-से-बड़ी ताकतवाली सर-

कार का सामना कामयाबी के साथ कर सकते हैं। अगर आपकी आत्मा या आपकी भावना मजबूत है, तो अकेले शरीर की ताकत की कमी से कोई मुश्किल पेश नहीं होती। इसके खिलाफ मैंने देखा है कि दक्षिण अफ्रीका में भीम-जैसे डील-डौलवाले जुलू लोग एक गोरे बच्चे से डरकर थरथर काँप उठते थे। गोरे सिपाही जुलू लोगों की भोपड़ियोंवाली वस्तियों में घुस जाते थे और औरतों मर्दों और बच्चों को बिछौने में सोई हुई हालत में ही मार डालते थे। जबर्दस्त डीलडौल वाले जुलू में भी ऐसे मौके पर सामना करने की ताकत नहीं रहती थी। और उसके शरीर की ताकत से उसकी आत्मा की या बदला लेने की भावना की दृढ़ता की खामी पूरी नहीं होती थी।”

२४—चोरों के लिए कुदरती इलाज

यह उस दिन का प्रसंग है जिस दिन लोकमान्य तिलक की २५ वीं बरसी थी। इस बरसी ने पुरानी यादों को बहुत जोर से जगा दिया था। शाम की प्रार्थना के बाद महात्मा गांधी ने बताया था कि किस तरह टेलीफोन से इस दुःखद संवाद को सुनकर वे लोकमान्य की स्मशान यात्रा में हाजिर रहने के लिए पहुँचे थे। स्मशान-यात्रा के जबर्दस्ती जुलूस में जितने हिन्दू थे, उतने ही मुसलमान और पारसी भी थे। उस जबर्दस्त भीड़ की धक्का-धुक्की में महात्मा गांधी खुद हो फँस गये थे और बड़ी मुश्किल से उसमें से निकल पाये थे। उन दिनों हमारे देश का आतावरण कौमी कड़वाहट के खयालों से जहरीला नहीं

बना था। उसके बाद तो बहुत-सी घटनाएँ घट गईं, लेकिन लोकमान्य की याद और लोगों के दिल में उनकी मुहब्बत व्यों की व्यों ताजी बनी रही। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है वैसे-वैसे उनकी लोकप्रियता उलटी बढ़ती जाती है। लोकमान्य का शरीर नष्ट हो चुका है, लेकिन वे तो अब भी हमारे साथ ही हैं। 'स्व-राज्य हमारा जन्मसिद्ध हक है' यह मंत्र उन्होंने ही हमको दिया है। वह सबका समान रूप से जन्मसिद्ध हक है। जिस तरह पूरे में से पूरा ले लेने से पूरा बाकी रहता है, उसी तरह वह अखूट है। उसे बाँटने से भी वह कम नहीं होता। इस प्रकार के विचार प्रकट करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था,

सच है कि आज लोकमान्य के नाम से मनमाने काम किये जाते हैं। यह दुनिया का रिवाज है। दैवी वस्तु का दुरुपयोग कहाँ नहीं होता? मगर बुराई तो बुरा करनेवाले के पास ही रहती है। उससे दैवी वस्तु का अंजस या तेज कम नहीं होता।”

इसके बाद महात्मा गांधी ने कहा था कि हिन्दुस्तान अपने इस जन्म सिद्ध हक को अनकरीब हो हासिल करने वाला है। ऐसा कहकर उन्होंने यह भी कहा था, “मेरी राय में मेरी कल्पना का स्वराज क्रायम करने के लिए कुदरती इलाज एक महत्त्व की चीज है। स्वराज हासिल करने से पहले हमें अपनी तीन तरह की यानी शरीर की, मन की और आत्मा की शुद्धि कर लेनी चाहिए।

ऊपर की बात कहते हुए महात्मा गांधी ने शायद ही यह सोचा होगा कि २४ घंटे के अन्दर ही उन्हें इस उसूल पर अमल करने का मौका मिल जायगा। दूसरे ही दिन एक देहाती आई महात्मा गांधी के सामने लाये गये। उनके घर में

चोरी हो गई थी और चोर जेवर वगैरह चुराकर ले गये थे । चोरों ने इन भाई को कुछ चोट भी पहुँचाई थी । महात्मा गांधी ने लोगों से कहा था कि इसके तीन रास्ते या इलाज हो सकते हैं ।

पहला इलाज यह है कि पीढ़ियों पुराने रिवाज के मुताबिक पुलिस को इसकी ख़बर दी जाय । अक्सर होता यह है कि इसकी वजह से पुलिस को रिश्वत लेने का एक और मौक़ा मिल जाता है, लेकिन जिसके घर चोरी हुई होती है, उसे तो इससे कोई राहत नहीं मिलती ।

दूसरा रास्ता हाथ-पर-हाथ धरकर बैठने और जो हुआ है, उसे सह लेने का है । आम तौर पर गाँववाले इसी का इस्तेमाल करते हैं । यह चीज़ निन्दनीय है, क्योंकि इसकी जड़ में डर-पोकपन रहा है । जब तक कायरता रहेगी, तब तक जुर्म फूलते-फूलते ही रहेंगे । इससे भी बुरी बात तो यह है कि इस तरह हाथ-पर-हाथ धर कर बैठे रहने से हम खुद भी इस जुर्म के तरफ़दार बनते हैं ।

तीसरा इलाज या रास्ता शुद्ध सत्याग्रह का है, और मैं आप से इसकी सिफ़ारिश करता हूँ । इससे यह समझ लेना ज़रूरी है कि हम चोरों और गुनहगारों को भी अपने भाई-बहन की तरह मानें और समझें कि गुनाह भी उनको लगा हुआ एक मर्ज़ या रोग ही है और हमें उनका यह मर्ज़ मिटाना है ।

चोरों या गुनहगारों पर नाराज़ होने और उन्हें सज़ा दिलाने की कोशिश करने के बदले आपको यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि किन कारणों से वे गुनाह या जुर्म करने के लिए आमदा हुए ? मसलन्, आपको चाहिए कि आप उन्हें कोई रोज़गार-धन्धा सिखा दें और उनके लिए ईमानदारी के साथ

अपनी रोज़ी कमाने के जरिये मुहैया कर दें। और, इस तरह उनके जीवन को बदलने की कोशिश करें।

आपको समझना चाहिए कि चोर या गुनहगार आपसे अलग किसी और क्रिस्म का प्राणी नहीं होता। असलियत यह है कि अगर आप अपने दिल को अन्दर से टटोलें और अपनी आत्मा की बारीकी के साथ जाँच करें, तो आपको मालूम होगा कि आपके और उनके बीच फ़र्क सिर्फ़ कम या ज्यादा मिक़दार का ही है। दूसरों का खून चूस कर या इसी तरह के दूसरे जरियों से अमीर बने हुए मालदार लोग गिरहकटों, सेंध लगाकर चीरी करने वाले चोरों के मुकाबले लूट-खसोट के मा ले में कुछ कम गुनहगार नहीं होते। फ़र्क यही है कि अमीर या मालदार लोग अपनी इज्जत की आड़ में रहकर क़ानूनी सज़ाओं से बच निकलते हैं।

इस तरह के बिचारों को समझाते हुए महात्मा गांधी ने यह भी कहा था, “सच तो यह है कि अपनी ज़रूरत से ज्यादा धन या दौलत इकट्ठा करना चोरी ही है। अगर दौलत का समझदारी भरा इन्तज़ाम किया जाय और पूरी तरह न्याय या इन्साफ़ की नींव पर समाज की इमारत खड़ी की जाय तो चोरी का कोई मौक़ा ही पेश न आये और समाज में कोई चोर पैदा ही न हो।

मेरी कल्पना के स्वराज्य में चोर या गुनहगार न होंगे। अगर हुए, तो वह स्वराज नाम का ही स्वराज होगा। गुनहगारी एक समाजी बीमारी की निशानी है। मेरी कल्पना के कुदरती इलाज में शरीर, मन और आत्मा के तिहरे रोगों को मिटाने के इलाज शामिल हैं। इसलिए आप लोगों को सिर्फ़ शरीर की बीमारियाँ दूर करके ही सन्तोष नहीं मानना चाहिए। आपके काम में मन और आत्मा की बीमारियों को मिटाने का काम भी

शामिल होना चाहिए, जिससे आपके अन्दर पूरी-पूरी सामाजिक शान्ति कायम हो सके ।

गुनहगारों के साथ पेश आने के लिए कुदरती इलाज का यानी सत्याग्रह का जो तरीका मैंने सुझाया है, उसे आप अपनाएँ, तो आप किसी जर्म या गुनाह के खिलाफ हाथ-पैर जोड़कर बुध-चाप बैठ ही न सके । अकेला एक पूर्ण पुरुष ही अपने-आप में डूब कर जी सकता है और दुनिया की तमाम फिकरों और जिम्मेदारियों से पूरी तरह दूर रह सकता है । लेकिन इस तरह की पूर्णता का दावा कौन कर सकता है ? तजरबेकार खेवनहार और मल्लाह बीच समन्दर में एकाएक दीख पड़नेवाली शान्ति को फिकर की नजर से देखते हैं, क्योंकि पूरी-पूरी शान्ति या खामोशी समन्दर की अपनी असली तासोर नहीं । जीवन के समन्दर का भी यही हाल है । अक्सर उसमें आने वाले तूफान की आगाही रहती है ।

इसलिए सत्याग्रहो न तो किसी तरह का बैर भँजायेगा और न गुनहगार के ताबे होगा । बल्कि वह तो अपने को सुधारकर गुनहगार को भी सुधारेगा । वह एक ही वक्त में दो घोड़ों पर सवार नहीं होगा, यानी एक तरफ सत्याग्रह के कानून पर अमल करने का ढोंग और साथ ही पुलिस की मदद लेने का काम वह नहीं करेगा । पहली चीज पर अमल करने के लिए उसको दूसरी चीज का त्याग करना होगा । यह दूसरी बात है कि गुनहगार खुद ही अपने को पुलिस के हवाले करना पसन्द करे । अगर उसी वक्त आप भी पुलिस के पास जाने और उसके खिलाफ रिपोर्ट करने को तैयार हो जाँय, तो आपको उसके दिल को छूने की और उसका विश्वास पाने की उम्मीद न रखनी चाहिए । यह तो बड़ी-से-बड़ी दगाबाजी हुई । सुधारक कभी रिपोर्टर या खुफिया बनकर अपना काम नहीं कर सकता ।

अपने सामने गुनाह कबूल करनेवाले आदमी के खिलाफ गवाही देने के लिए कोई भी पुलिस अफसर सत्याग्रही को मजबूर नहीं कर सकता। सत्याग्रही किसी भी हालत में विश्वासघात या दगाबाजी का जुर्म नहीं करता।”

— — —

२५—फिर रामनाम

किसी एक सज्जन ने अपने किसी मित्र को लिखा, “वह (महात्मा गांधी) हिन्दुस्तान-प्रेमी हैं। पर यह बात समझ में नहीं आती कि हर रोज खुले में प्रार्थना करके और ‘राम-नाम’ (राम से मतलब हिन्दू देवता) की धुन लगाकर अपने मुल्क के दूसरे मजहबवालों का दिल वे क्यों दुखाते हैं? उन्हें यह समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान में बहुत-से मजहब हैं और अगर वह जनता (अवाम) में हिन्दू देवताओं का हवाला देकर बोलेंगे, तो पुराने खयाल के लोगों को गलतफहमी होगी। और मुस्लिम लीग की यह भी शिकायत है—रामराज (राम का राज) कायम करना उनका एक प्रिय जुमला है। एक सच्चे मुसलमान को यह कैसा लगेगा ?

इसी को उन सज्जन ने महात्मा गांधी के पास भेज दिया था और साथ ही साथ जवाब भी माँगा था। जवाब देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, “हजारवीं दफा फिर दुहराना पड़ता है कि राम-नाम परमात्मा के कई नामों में से एक है। उसी प्रार्थना में कुरानशरीफ की आयतें और ज़िन्द अवस्ता के श्लोक भी गाये जाते हैं। सबे मुसलमानों ने तो, क्योंकि वे सबे हैं,

रामनाम होने को कभी बुरा नहीं माना। रामनाम कोई फजूल रट नहीं है। मेरे और लाखों हिन्दुओं के नजदीक तो यह सर्व-व्यापी (हर जगह मौजूद) परमात्मा को पुकारने का एक ढंग बनाया गया है। राम के पीछे जो 'नाम' है वह सब से ज्यादा महत्त्व (अहमियत) का हिस्सा है। उसका मतलब है, ऐतिहासिक राम के बिना नाम। कुछ भी हो, मेरे इस खुल्लमखुल्ला कहने से कि मैं इस धरम का हूँ, किसी को दुःख क्यों हो? खासकर मुस्लिम लीग को? इन सभाओं में आने के लिए किसी को मजबूर नहीं किया जाता और अगर कोई आ भी गया तो लाजिमी (अनिवार्य) नहीं कि वह रामधुन में शामिल हो। आने वालों से तो सिर्फ यही आशा की जाती है कि वे प्रार्थना की शान्ति भंग न करें और अगर उसके किसी हिस्से में वे नहीं भी मानते, तो भी उसे बर्दाश्त करें।

'रामराज' के जुमले के बारे में—मैं इसका मतलब कई दफा बता चुका हूँ। उसके बाद किसी को इसके इस्तेमाल से दुःख नहीं होना चाहिए। यह एक आसान और मतलब से भरा जुमला है और इसका मतलब दूसरा कोई भी जुमला करोड़ों को नहीं समझा सकता। जब मैं सरहद्दी सूबा (सीमा-प्रान्त) में जाता हूँ और मेरे सुननेवाले ज्यादा मुसलमान होते हैं, तो मैं इसे खुदाई राज कहता हूँ। ईसाई सुनने वाले हों तो मैं उसे दुनिया में गाद की टुकूमत कहूँगा। अगर मैं कोई और तरीका अख्तियार करूँ, तो वह अपने-आप को दबाना होगा और धोखेबाजी होगी।"

ठीक इसी प्रकार एक दूसरे सज्जन ने महात्मा गांधी से लिख कर प्रश्न किया था, "आप कहते हैं कि नियम (कानून) यह होना चाहिए कि प्रार्थना के वक्त हर एक आदमी आखें बन्द करके बैठे और ईश्वर के सिवा दूसरी किसी चीज का खयाल न करें।

लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि हम किस तरह और किस शक्त में ईश्वर का ध्यान करें ?”

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने समझाया था, “ध्यान करने का सच्चा रास्ता यह है कि हम अपनी भक्ति के विषय को छोड़कर बाकी सब ओर से मन की आँखों और कानों को खींच लें। इसलिए प्रार्थना के दर्मियान आँखें बंद कर लेने से हमें इस तरह के ध्यान में मदद मिलेगी। कुदरती तौर से ईश्वर के बारे के इन्सान के खयाल की कोई हद होती है। इस लिए हर एक आदमी को ईश्वर का उसी शक्त में ध्यान करना चाहिए, जो उसे सबसे ज्यादा रुचे, बशर्ते कि वह खयाल پاک (पवित्र) और ऊँचा उठाने वाला हो।

२६—ईश्वर व्यक्ति है या ताकत ?

बड़ोदा से किसी सज्जन ने महात्मा गांधी के पास पत्र लिखकर प्रश्न किया था, “आप हमें भगवान् से यह प्रार्थना करने के लिए कहते हैं कि वह दक्षिण अफ्रीका के गोरों को अच्छी अकल दे और वहाँ के हिन्दुस्तानियों को अपने मकसद पर डटे रहने की हिम्मत और ताकत दे। इस तरह की प्रार्थना तो किसी शक्त से ही की जा सकती है। अगर भगवान सब जगह मौजूद रहने वाला और सब से बड़ी ताकत है, तो उससे प्रार्थना करने से क्या फायदा ? वह तो अपना काम करता ही रहता है।”

* इसका उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, “इस मज्ज-मून पर मैं पहले लिख चुका हूँ। लेकिन किसी-न-किसी भाषा में यह सवाल बारबार दुहराया जाता है। इसलिए इसको और

ज्यादा समझाने से, मुमकिन है किसी को मदद मिले। मेरे विचार से राम, रहमान, अहुरमज्द, ईश्वर या कृष्ण ये सब इन्सान के रखे हुए उसी एक ताकत के नाम हैं, जो सब से बड़ी ताकत है।

अधूरा होते हुए भी आदमी पूर्णता के लिए लगातार कोशिश करे, यह उसके लिए कुदरती बात है। इस कोशिश में वह खयाली पुलाव भी पकाने लगता है। और, जिस तरह एक बच्चा उठने की कोशिश करता है, बारबार गिरता है और आखिरकार चलना सीख जाता है, उसी तरह आदमी, अपनी समूची अकल के बावजूद, अनादि (जिसकी शुरुआत नहीं है) और अनन्त (जिसका खातमा नहीं है) ईश्वर के मुकाबले एक बच्चा ही है। ऊपर से यह बात बे सिर पैर की लगे, लेकिन दरसल वह बिल्कुल सच है।

आदमी अपनी टूटी-फूटी भाषा में ही ईश्वर का बखान कर सकता है। सच पूछा जाय तो उस ताकत का, जिसे हम ईश्वर कहते हैं, बखान नहीं किया जा सकता। न ही उस ताकत को आदमी से अपना बखान कराने की कोई जरूरत है। आदमी को कोई ऐसा साधन चाहिए, जिससे वह समन्दर से भी बड़ी उस ताकत का बखान कर सके। अगर यह दलील ठीक है, तो यह पूछना जरूरी नहीं कि हम उसकी प्रार्थना क्यों करें? आदमी अपनी बुद्धि के दायरे में ही ईश्वर की कल्पना कर सकता है। अगर ईश्वर समन्दर के मानिन्द बड़ा और बेहद है, तो आदमी-जैसी एक छोटी-सी बूँद उसकी कल्पना कैसे कर सकती है? समन्दर में डूब कर ही आदमी समन्दर की जानकारी पा सकता है। लेकिन यह तजरबा बयान के बाहर की बात है।

महम ब्लावाट्स्की की भाषा में प्रार्थना में आदमी अपनी महान् शक्ति की ही पूजा करता है। सभी प्रार्थना वही कर सकता है, जिसे यह विश्वास हो कि ईश्वर उसके भीतर मौजूद है। जिसे यह विश्वास नहीं, उसे प्रार्थना करने की जरूरत नहीं। भगवान् उससे नाराज न होगा। लेकिन मैं अपने जाती तजरबे से यह कह सकता हूँ कि जो प्रार्थना नहीं करता, वह नुकसान में रहता है। तब फिर यह तो सवाल ही नहीं उठता कि एक आदमी ईश्वर को व्यक्ति (फ़र्द) मानकर उसकी पूजा करता है और दूसरा उसे शक्ति (ताक़त) मानकर पूजता है। दोनों अपनी अपनी निगाह से ठीक ही करते हैं।

यह कोई नहीं जानता, शायद कभी जान भी न सके, कि प्रार्थना करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? आदर्श हमेशा आदर्श ही बना रहेगा। हमें सिर्फ यही याद रखना चाहिए कि ईश्वर सारी ताक़तों की एक ताक़त है। दूसरी सब ताक़तें जड़ हैं। लेकिन ईश्वर एक जीती-जागती ताक़त या स्प्रिट है जो सब जगह मौजूद है, सब को अपने में समाये है और इसलिए आदमी की समझ से परे है।”

२७—रामनाम के बारे में भ्रम

शंका उपस्थित करते हुए किसी सज्जन ने महात्मा गांधी को लिखा था, “आपने राम-नाम से मलेरिया का इलाज सुझाया है। मेरी मुश्किल यह है कि जिस्मानी बीमारियों के लिए रुहानी ताक़त पर भरोसा करना मेरी समझ से बाहर है। मैं पक्की

तरह से यह भी नहीं जानता कि आया मुझे अच्छा होने का हक भी है या नहीं। और क्या ऐसे वक्त जब मेरे देश वाले इतने दुःख में पड़े हैं, मेरा अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना करना ठीक होगा? जिस दिन मैं राम-नाम समझ जाऊँगा, उस दिन मैं उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करूँगा, नहीं तो मैं अपने-आपको आज से ज्यादा खुदगरज महसूस करूँगा।”

इस शंका का समाधान करते हुए महात्मा गांधी ने इस प्रकार के विचार प्रकट किये थे, “मैं मानता हूँ कि यह दोस्त सत्य के भच्चे तलाश करने वाले हैं। उनकी इस मुश्किल की खुल्लमखुल्ला चर्चा मैंने इसलिए की है कि उन जैसे बहुतों की मुश्किलें इसी किस्म की हैं।

दूसरी ताकतों की तरह रूहानी ताकत भी मनुष्य की सेवा के लिए है। सदियों से थोड़ी-बहुत सफलता के साथ शारीरिक (जिस्मानी) रोगों को ठीक करने के लिए उसका उपयोग होता रहा है। इस बात को छोड़ भी दें, तो भी अगर जिस्मानी बीमारियों के इलाज के लिए कामयाबी के साथ उसका इस्तेमाल हो सकता हो, तो उसका उपयोग न करना सख्त गलती है। क्योंकि आदमी माहा भी है और रूह भी। और, इन दोनों का एक-दूसरे पर असर होता है।

अगर आप मलेरिया से बचने के लिए कुनैन लेते हैं और इस बात का खयाल भी नहीं करते कि करोड़ों को कुनैन नहीं मिलती तो आप उस इलाज से क्यों इनकार करते हैं, जो आपके अंदर है? क्या सिर्फ इसलिए कि करोड़ों अपनी जहालत की वजह से उसका इस्तेमाल नहीं करते? अगर करोड़ों अनजान हों, या हो सकता है, जान-बूझकर भी गन्दे रहें, तो गन्दा और बीमार रहकर आप उन्हीं करोड़ों की सेवा का फर्ज भी अपने ऊपर नहीं ले सकेंगे, और यह बात तो पक्की है कि आत्मा का रोगी या गन्दा होना

(उसे अच्छी और साफ़ रखने से इनकार करना) बीमार और गन्दा शरीर रखने से भी बुरा है ।

मुक्ति का अर्थ यही है कि आदमी हर तरह से अच्छा रहे । फिर आप अच्छे क्यों न रहें । अगर अच्छे रहेंगे, तो दूसरों को अच्छा रहने का रास्ता दिखा सकेंगे, और इससे भी बढ़कर अच्छा होने के कारण आप दूसरों की सेवा कर सकेंगे । लेकिन अगर आप अच्छे होने के लिए पेनिसिलिन लेते हैं, हालाँकि आप जानते हैं कि दूसरों को वह नहीं मिल सकती, तो जरूर आप सरासर खुदगारब बनते हैं ।

मुझे खत लिखनेवाले इन दोस्त की दलील में जो गड़बड़ी है, वह साफ़ है । हाँ, यह जरूर है कि कुनैन की गोली या गोलियाँ खा लेना राम-नाम के उपयोग के ज्ञान को पाने से ज्यादा आसान है । कुनैन की गोलियाँ खरीदने की कीमत से इसमें कहीं ज्यादा मेहनत पड़ती है । लेकिन यह मेहनत उन करोड़ों के लिए उठानी चाहिए, जिनके नाम पर और जिनके लिए लेखक राम-नाम को अपने हल से बाहर रखा चाहते हैं ।”

२८—सम्मिलित प्रार्थना

“क्या आप सम्मिलित प्रार्थना में मानते हैं ? आजकल जैसी सम्मिलित प्रार्थना की जाती है, क्या वह सच्ची प्रार्थना है ? मैं समझता हूँ कि वह नीचे गिरानेवाली चीज है, और इसलिए खतरनाक है । हजरत मसीह ने कहा है—“जब तुम प्रार्थना करो, तो पाखंडियों की तरह न करो, बल्कि अपने कमरे में

किवाड़ बन्द करके और छिपकर अपने पिता के आगे प्रार्थना करो।' भीड़ में लोग ज्यादातर बेध्यान रहते हैं और मनको स्थिर नहीं कर पाते। उस हालत में प्रार्थना पाखण्ड बन जाती है। योगी इसे खूब जानता है। तो क्या जनता को अन्तर्मुख होने यानी अपने अन्दर नज़र डालने की तालीम नहीं दी जानी चाहिए? सच्ची प्रार्थना तो वही है।"

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, "मेरा मत है कि मैं जो सामुहिक मा मजमूई प्रार्थना कराता हूँ, वह जन-समूह के लिए सच्ची प्रार्थना है। उसका संचालक आस्तिक है, पाखण्डी नहीं। अगर वह पाखण्डी होता, तो प्रार्थना शुरू से ही अपवित्र हो जाती। जो स्त्री-पुरुष उसमें शामिल होते हैं, वे किसी पुरानी रीति के प्रार्थना-मन्दिर में नहीं जाते, जहाँ उन्हें कोई सांसारिक लाभ हो।

उनमें ज्यादातर ऐसे होते हैं, जिनका प्रार्थना के संचालन के साथ कोई जाती या निजी सम्बन्ध नहीं। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि वे दिखावे के लिए नहीं आते। चूँकि वे मानते हैं कि सामुहिक प्रार्थना से उन्हें किसी-न-किसी तरह का पुण्य मिलता है, इसीलिए वे उसमें आते हैं। यह बिलकुल सच है कि कुछ लोग शायद ज्यादातर लोग, प्रार्थना में ध्यान नहीं देते, या मन को स्थिर नहीं कर पाते। इसका मतलब यही है कि वे अनाड़ी हैं। मन को स्थिर या एकाग्र न कर सकना, या ध्यान न लगा सकना, असत्य या पाखण्ड नहीं। अगर वे ध्यान न धरते हुए भी यह दिखाने की कोशिश करें कि वे ध्यान धर रहे हैं, तो उनपर पाखण्ड का इलजाम लग सकता है। लेकिन इसके खिलाफ बहुतों ने मुझसे पूछा है कि जब वे अपना चित्त स्थिर न कर सकें, तो क्या करें?

ऊपर के सबाल में हजरत मसीह का जो फ़िक्ररा दिया है,

वह यहाँ लागू नहीं होता। हजरत मसीह उन लोगों का जिक्र कर रहे थे, जो दिखावे के लिए प्रार्थना करने का ढोंग रचते थे। उनके उस वचन में सामूहिक प्रार्थना के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा गया है। मैं कई दफा कह चुका हूँ कि जाती प्रार्थना के बिना आम प्रार्थना का लाभ बरायनाम ही होता है। मेरा विश्वास है कि व्यक्तिगत या जाती प्रार्थना सामूहिक यानी आम प्रार्थना का तैयारी है। इसलिए सामूहिक प्रार्थना तभी सफल मानी जानी चाहिए, जब वह हर एक को अपने तौर पर प्रार्थना करना सिखाये। दूसरे शब्दों में जब इन्सान दिल से प्रार्थना करना सीख जाता है, तो फिर वह अकेले में प्रार्थना करे या दूसरों के साथ मिलकर करे, हमेशा सच्चे दिल से प्रार्थना करता है।

मैं नहीं जानता कि इन भाई ने जिस योगी का जिक्र किया है, वह क्या करता है, और क्या नहीं करता। लेकिन इतना मैं जानता हूँ कि जब जनता परमात्मा के साथ एकतार हो जाती है, तो वह खुद-ब-खुद अपने भीतर नजर डालने लगती है। यह सब प्रार्थनाओं का नतीजा होना चाहिए।



२६—दशरथ-नन्दन-राम

किसी एक आर्य-समाजी महाशय ने महात्मा-गांधी से लिख कर प्रश्न किया था, “जिन अविनाशी राम को आप ईश्वर स्वरूप मानते हैं, वे दशरथ-नन्दन सीता-पति राम कैसे हो सकते हैं? इस दुविधा का मारा मैं आपकी प्रार्थना में बैठता तो हूँ लेकिन

रामधुन में हिस्सा नहीं लेता। यह मुझे चुभता है। क्योंकि आपका कहना तो यह है कि सब हिस्सा लें, और यह ठीक भी है। तो क्या आप ऐसा कुछ नहीं कर सकते, जिससे सब हिस्सा ले सकें।”

इस प्रसंग में “एक आर्य-समाजी महाशय” स्पष्ट रूप से लिखा गया है। अभिप्राय यह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ‘सत्यार्थ प्रकाश’ नामक धार्मिक ग्रन्थ में जिस वैदिक धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध की है उमो को ही आर्य-समाजो सत्य मानते हैं, और उसी के अनुसार चलते भी हैं। ‘रामनाम’ के सम्बन्ध में उसी सत्यार्थ-प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इस प्रकार लिखा हुआ है—“थोड़े दिन हुए कि एक ‘राम स्नेही’ मत शाहपुरा से चला है। उन्होंने सब वेदोक्त धर्म को छोड़ के ‘राम नाम’ पुकारना अच्छा माना है। उसी में ज्ञान, ध्यान मुक्ति मानते हैं। परन्तु जब भूख लगती है तब ‘रामनाम’ में से रोटी-शाक नहीं निकलता क्योंकि खान-पान आदि तो गृहस्थों के घर ही में मिलते हैं। वे भी मूर्ति पूजा को धिक्कारते हैं, परन्तु आप स्वयं मूर्ति बन रहे हैं। स्त्रियों के संग में बहुत रहते हैं क्योंकि राम जी को ‘राम की’ के बिना आनंद हो नहीं मिल सकता।

अब थोड़ा-सा विशेष राम स्नेही के मत विषय में लिखते हैं—एक रामचरण नामक साधु हुआ है जिसका मत मुख्य कर शाहपुरा स्थान मेवाड़ से चला है। वे ‘राम राम’ कहने को ही परम मन्त्र और इसी को सिद्धान्त मानते हैं। उनका एक ग्रन्थ कि जिसमें सन्तदास जी आदि की बाणी हैं, ऐसा लिखते हैं—

उनका वचन

भरम रोग तब ही मिट्या, रट्या निरंजन राइ ।

तब जम का कागज फट्या, कट्या कर्म तब जाइ ॥

साखी ॥ ६ ॥

अब बुद्धिमान् लोग विचार लेवें कि राम-राम करने से भ्रम जो कि अज्ञान है वा यमराज का पापानुकूल शासन अथवा किये हुए कर्म कभी छूट सकते हैं वा नहीं ? यह केवल मनुष्यों को पापों में फँसाना और मनुष्य जन्म को नष्ट कर देना है ।

अब इनका जो मुख्य गुरु हुआ है 'रामचरण' उसके बचन—

महमा नांव प्रताप की, सुणौ सरवण चित लाइ ।

रामचरण रसना रटौ. क्रम सकल भड़ जाइ ॥

जिन जिन सुमर्या नांव कूं, सो सब उतर्या पार ।

रामचरण जो बीसर्या, सो ही जम के द्वार ॥

राम बिना सब मूठ बतायो ।

राम भजत छूट्या सब क्रम्मा । चंद अरु सूर देह परक्रम्मा ॥

राम कहे तिन कूं भै नाहीं । तीन लोक में कीरति गाहीं ॥

राम रटत जम जोर न लागै ।

राम नाम लिख पथर तराई । भगति हेति औतार ही धरही ॥

ऊंच नीच कुल भेद बिचारै । सो तो जनम आपणो हारै ॥

संता के कुल दीसै नांही । राम-राम कह राम सम्हांही ॥

पेसो कुण जो कीरति गावै । हरि हरिजन को पार न पावै ॥

राम संतां का अन्त न आवै । आप आपकी बुद्धि सम गावै ॥

इनका खंडन—

प्रथम तो रामचरण आदि के ग्रंथ देखने से विदित होता है कि यह ग्रामीण सादा सीधा मनुष्य था । न वह कुछ पढ़ा था, नहीं तो ऐसी गपड़ चौथ क्यों लिखता ? यह केवल इनको भ्रम है कि 'राम राम' कहने से कर्म छूट जाय, केवल ये अपना और दूसरों का जन्म खोते हैं । जम का भय तो बड़ा भारी है, परन्तु राज-सिपाही, चोर, डाकू, ब्याघ्र, सर्प, बीछू और मच्छर आदि

का भय कभी नहीं छूटता । चाहे रात दिन 'राम राम' किया करें, कुछ भी नहीं होगा ।

जैसे 'शक्कर शक्कर' कहने से मुख मीठा नहीं होता वैसे सत्य-भाषणादि कर्म किये बिना 'राम राम' करने से कुछ भी नहीं होगा, और यदि 'राम राम' कहना इनका राम नहीं सुनता, तो जन्म भर कहने से भी नहीं सुनेगा, और जो सुनता है, तो दूसरी बार भी 'राम राम' कहना व्यर्थ है । इन लोगों ने अपना पेट भरने और दूसरों का भी जन्म नष्ट करने के लिए पाखंड खड़ा किया है, सो यह बड़ा आश्चर्य हम सुनते और देखते हैं कि नाम तो धरा 'रामस्नेही' और काम करते हैं राँड स्नेही का । जहाँ देखो वहाँ राँड ही राँड सन्तों को घेर रही हैं । यदि ऐसे-पाखंड न चलते तो आर्यावर्त्त देश की दुर्दशा क्यों होती ! ये लोग अपने चेलों को जूँठ खिलाते हैं और स्त्रियाँ भी लम्बी पड़ के दण्डवत् प्रणाम करती हैं । एकान्त में भी स्त्रियों और साधुओं की लीला होती रहती है ।

अब दूसरी इनकी शाखा 'खेड़ापा' ग्राम मारवाड़ देश से चली है ।

उसका इतिहास—एक रामदास नामक जाति का ढेढ़ बड़ा चाहाक था । उसके दो स्त्रियाँ थीं । वह प्रथम बहुत दिन तक औघड़ होकर कुत्तों के साथ खाता रहा । पीछे बामी कूण्ठापन्थी । पीछे 'रामदेव' का कामड़िया बना । (राजपूताने में 'चमार' लोग भगवे वस्त्र रंग कर 'रामदेव' आदि के गीत जिनको वे 'शब्द' कहते हैं, चमारों और अन्य जातियों को सुनाते हैं, वे 'कामड़िये' कहलाते हैं ।) अपनी दोनों स्त्रियों के साथ गाता था । ऐसे घूमता-घूमता 'सीथिल' (यह जोधपुर के राज्य में एक बड़ा ग्राम है ।) में ढेढ़ों का 'गुरु रामदास' था, उससे मिला । उसने

उसको रामदास का पंथ बता के अपना चेला बनाया। उस रामदास ने खेड़ापुर ग्राम में जगह बनाई और इसका इधर मत चला।

उधर शाहपुरे में रामचरण का। उसका भी इतिहास ऐसा सुना है कि वह जयपुर का बनिया था। उसने 'दातड़ा' ग्राम में एक साधु से वेष लिया और उसको गुरु किया और शाहपुरे में जाके टिक्की जमाई। भोले मनुष्यों में पाखंड की जड़ शीघ्र जम जाती है, जम गई। इन सब में ऊपर के रामचरण के वचनों के प्रमाण से चेला करके ऊँच नीच का कुछ भेद नहीं। ब्राह्मण से अन्त्यज पर्यन्त इसमें चेले बनते हैं। अब भी कूंडा-पंथी से ही हैं, क्योंकि गट्टो के कूडों में ही खाते हैं। और साधुओं की जूठन खाते हैं। वेद-धर्म से माता-पिता संसार के व्यवहार से ब्रह्मकाकर छुड़ा देते और चेला बना लेते हैं और 'राम नाम' को महामंत्र मानते हैं और इसी को 'छुच्छम' (सूक्ष्म) वेद भी भी कहते हैं।

'राम राम' कहने से अनन्त जन्मों के पाप से छूट जाते हैं, इसके बिना मुक्ति किसी की नहीं होती। जो श्वास और प्रश्वास के साथ 'राम राम' कहना बतावे उसको 'सत्यगुरु' कहते हैं और सत्यगुरु को परमेश्वर से भी बड़ा मानते हैं और उसकी मूर्ति का ध्यान करते हैं। साधुओं के चरण धोके पीते हैं। जब गुरु से चेला दूर जावे तो गुरु के नख और डाढ़ी के बाल अपने पाछे रख लेवे। उसका चरणामृत नित्य लेवे, रामदास और हर रामदास के बाणी के पुस्तक को वेद से अधिक मानते हैं। उसकी परिक्रमा और आठ दण्डवत् प्रणाम करते हैं और जो गुरु समीप हो तो गुरु को दण्डवत् प्रणाम कर लेते हैं। स्त्री वा पुरुष को 'राम राम' एक सा ही मंत्रोपदेश करते हैं और नाम स्मरण

ही से कल्याण मानते, पुनः पढ़ने में पाप समझते हैं। उनकी साखी—

पंडताई पाने पड़ी, औ पूरब लो पाप।

राम राम सुमर्यौ बिना, रहग्यो रीतो आप ॥

वेद पुराण पढ़े पढ़ गीता। राम भजन बिन रह गये रीता ॥

ऐसे-ऐसे पुस्तक बनाये हैं, स्त्री को पति की सेवा करने में पाप और गुरु और साधु को सेवा में धर्म बतलाते हैं, वर्णाश्रम को नहीं मानते। जो ब्राह्मण रामस्नेही न हो तो उसको नीच और चंडाल, रामस्नेही हो तो उसको उत्तम जानते हैं, अब ईश्वर का अवतार नहीं मानते और रामचरण का बचन जो ऊपर लिख आये कि—

भगति हेति औतार ही धर ही ॥

भक्ति और सन्तों के हित अवतार को भी मानते हैं इत्यादि पाखण्ड प्रपंच इनका जितना है सो सब आर्यावर्त्त देश का अहित-कारक है।)

सत्यार्थ प्रकाश के कारण वैदिक संस्कारों को श्रेष्ठ समझने वाले आर्य समाजी महाशय के प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था, “सब के मानी मैं बता चुका हूँ। जो लोग दिल से हिस्सा ले सकें, जो एक सुर में गा सकें वे ही हिस्सा लें, बाक़ी शान्त रहें। लेकिन यह तो छोटी बात हुई। बड़ी बात तो यह है कि दशरथ-नन्दन अविनाशी कैसे हो सकते हैं? यह सवाल खुद तुलसीदास जी ने उठाया था और उन्होंने इसका जवाब भी दिया था। ऐसे सवालों का जवाब बुद्धि से नहीं दिया जा सकता। यह दिल की बात है। दिल की बात दिल ही जाने।

शुरु में मैंने राम को 'सीता-पति के रूप में पाया। लेकिन जैसे-जैसे मेरा ज्ञान और अनुभव बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा राम

अविनाशी और सर्वव्यापी बना है और है । इसका मतलब यह कि वह सीता-पति बना रहा, और साथ ही सीता-पति के माने भी बढ़ गये । संसार ऐसे ही चलता है । जिसका राम दशरथ राजा का कुमार ही रहा, उसका राम सर्वव्यापी नहीं हो सकता, लेकिन सर्वव्यापी राम का बाप दशरथ भी सर्वव्यापी बन जाता है । कहा जा सकता है कि यह सब मनमानी है—‘जैसी जिसकी भावना, वैसा उसको होय ।’ दूसरा कोई चारा मुझे नज़र नहीं आता ।

अगर आखिरकार सब धर्म एक हैं तो हमें सब का एकीकरण करना है । अलग तो पड़े ही हैं, और अलग मानकर हम एक-दूसरे से लड़ते हैं । और जब थक जाते हैं, तो नास्तिक बन जाते हैं, और फिर सिवा ‘हम’ के न ईश्वर रहता है, न कुछ और ! लेकिन जब समझ जाते हैं, तो हम कुछ नहीं रह जाते, ईश्वर ही सब कुछ बन जाता है—वह दशरथ-नन्दन, सीता-पति भरत व लक्ष्मण का भाई है भी और नहीं भी । जो दशरथ नन्दन राम को न मानते हुए भी सबके साथ प्रार्थना में बैठते हैं, उनकी बलिहारी है ! यह बुद्धिवाद नहीं । यहाँ मैं यह बता रहा हूँ कि मैं क्या करता हूँ, और क्या मानता हूँ ।” रामचरितमानस के बालकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रयाग निवासी भरद्वाज द्वारा याज्ञवल्क्य से इस प्रकार के प्रश्न कराये हैं :—

नाथ एक संशय बड़ मोरे । कर गत वेद तत्त्व सब तोरे ॥

कहत मोहि लागत भय लाजा । जो न कहाँ बड़ होइ अकाजा ॥

दोहा—संत कहिं अस नीति प्रभु, श्रुति पुरान जो गाव ।

होइ न विमल विवेक उर, गुरु सन किये दुराव ॥

अस विचारि प्रगटौ निज मोहू । हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥

राम नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद् गावा ॥

संतत जपत सम्भु अविनाशी । सिब भगवान ज्ञान गुन रासी ॥

आकर चारि जीव जग अहहीं । कासी मरत परम पद लहहीं ॥
 सोपि राम महिमा मुनि राया । सिव उपदेसु करत करि दाया ॥
 रामु कवन प्रभु पूछौ तोही । कहहु बुभाइ कृपानिधि मोही ॥
 एक राम अवधेश कुमारा । तिन्ह कर चरित विदित संसारा ॥
 नारि विरह दुख लहेउ अपारा । भयउ रोष रन रावन मारा ॥

दोहा—प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।

सत्य धाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ॥
 जैसे मिटै मोह भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥
 याज्ञबल्कि बोले मुसुकाई । तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई ॥
 राम भगत तुम मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
 चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । कीन्हेउ प्रभ मनहुँ अति मूढ़ा ॥
 तात सुनहु सादर मन लाई । कहउँ राम कै कथा सुहाई ॥
 महा मोह महिषेसु विसाला । राम कथा कलिकाल कराला ॥
 राम कथा ससि किरनि समाना । संत चकोरकरहिं जेहिं पाना ॥
 ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥

दोहा—कहाँ सो मति अनुहारि अब, उमा संभु सम्बाद ।

भयउ समय जेहि हेतु अब, सुनु मुनि मिटहिं विषाद ॥
 एक बार त्रेता युग माहीं । सम्भु गये कुम्भज रिषि पाहीं ॥
 संग सती जग जननि भवानी । पूजे रिषि अखिलेश्वर जानी ॥
 राम कथा मुनि बर्ज बखानी । सुनी महेस परम सुख मानी ॥
 रिषि पूछी हरि भगति सुहाई । कही सम्भु अधिकारी पाई ॥
 कहत मुनत रघुपति गुन गाथा । कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
 मुनि सन विदा माँगि त्रिपुरारी । चलेउ मवनसँग दच्छ कुमारी ॥
 तेहि अवसर भंजन महि भारा । हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा ॥
 पिता वचन तजि राज उदासी । दंडक बन विचरत अविनासी ॥

दोहा—हृदय विचारत जात हर, केहि विधि दरसन होइ ।

गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ ॥

सोरठा—संकर उर अति छोभु, सती न जानहिं मर्म सोइ ।

तुलसी दरसन लोभ, मन उर लोचन लालची ॥

रावन मरन मनुज कर जाँचा । प्रभु विधि वचन कीन्ह यह साँचा ॥

जो नहि जाउँ रहै पछितावा । करत विचार न बनत बनावा ॥

एहि विधि भये सोच बस ईसा । ताही समय जाइ दससीसा ॥

लीन्ह नीच मारीचहिं संग । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥

करि छल मूढ़ हरी वैदेही । प्रभु प्रभाव तस विदित न तेही ॥

मृग बधि बंधु सहित हरि आये । आश्रम देखि नयन जल छाये ॥

विरह विकल नर इव रघुराई । खोजत विपिन फिरत दोड भाई ॥

कबहुँ योग वियोग न जाके । देखा प्रगट दुसह दुख ताके ॥

दोहा— अति विचित्र रघुपति चरित, जानहिं परम सुजान ।

जे मति-मन्द विमोह बश, हृदय धरहिं कछु आन ॥

सम्भु समय तोह रामाहिं देखा । उपजा हिय अति हरख विशेषा ॥

भरि लोचन छाँव सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी ॥

जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥

चले जात सिय सती समेता । पुनि पुनि पुलकित कृपा निकेता ॥

सती सो दसा सम्भु की देखी । उर उपजा सन्देह विसेखी ॥

संकर जगत बन्ध जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥

तिन नृप सुतहिं कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानन्द परधामा ॥

भये मगन छाँव तासु विलोकी । अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दोहा—ब्रह्म जो व्यापक विरज अज, अकल अनीह अभेद ।

सो कि देह धरि होय नर, जाहि न जानत वेद ॥

विष्णु जो सुर हित नर तनु धारी । सोउ सरबज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥

खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ॥

सम्भु गिरा पुनि मृषा न होई । सिव सरबज्ञ जान सब कोई ॥

अस संसय मन भयउ अपारा । होय न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥

यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अन्तरजामी सब जानी ॥

सुनहु सती तब नारि सुभाऊ । संसय अस न धरिय उर काऊ ॥
जासु कथा कुम्भज रिषि गाई । भगति जासु मैं मुनिहिं सुनाई ॥
प्रोइ मम इष्ट देव रघुबारा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा
छन्द—मुनि धीर योगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥

सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकायपति मायाधनी ।

अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी ॥

सोरठा—लाग न लर उपदेस, यदपि कहेउ सिव बार बहु ।

बोले बिहँसि महेस, हरिमाया बल जानि जिय ॥

जो तुम्हरे मन अति सन्देहू । तो किन जाय परीछा लेहू ॥

तब लगि बैठि अहाँ बट छाहीं । जब लगि तुम ऐहहु मोहि पाहीं ॥

इस प्रकार सती को श्री रामचन्द्र की परीक्षा लेने श्री शिव जी ने भेष दिया और परिणाम यह हुआ कि फिर उस जन्म में वे सुख न पा सकीं । दूसरा जन्म पार्वती का लेना पड़ा और जब घोर तपस्या के बाद फिर श्री शिव जी को पति के रूप में पाकर उन्हें प्रसन्न कर पाया, तब बड़े ही विनीत भाव से श्री रामचन्द्र के सम्बन्ध में प्रश्न किया—

दोहा—जटा मुकुट सुर सरित सिर, लोचन नलिन बिसाल ।

नीलकण्ठ लावन्य निधि, सोह बाल बिधु भाल ॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे । धरे शरीर सान्त रस जैसे ॥

पारवती भल अबसर जानी । गई सम्भु पहुँ मात भवानी ॥

जानि प्रियां आदर अति कीन्हा । बाम भाग आसन प्रभु दीन्हा ॥

बैठी सिब समीप हरषाई । पूरब जन्म कथा चित आई ॥

पति हिय हेतु अधिक अनुमानी । बिहँसि उमा बोली प्रिय बानी ॥

कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैल कुमारी ॥

विस्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी ॥

चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहि पद पङ्कज सेवा ॥

दोहा—प्रभु समरथ सरवज्ञ सिव, सकल कला गुन धाम ।

जोग ज्ञान वैराग निधि. प्रनत कलप तरु नाम ॥

जो मोपर प्रसन्न सुख रासी । जानिय सत्य मोहि निज दासी ॥
 तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना । कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ॥
 जासु भवन सुरतरु तर होई । सह कि दरिद्र जनित दुख सोई ॥
 ससि भूषन अस हृदय विचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥
 प्रभु जे मुनि परमारथ वादी । कहहिं राम कहैं ब्रह्म अनादी ॥
 सेष सारदा वेद पुराना । सकल कहहिं रघुपति गुनगाना ॥
 तुम पुनि राम नाम दिन राती । सादर जपहु अनङ्ग अराती ॥
 राम सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलखगति कोई ॥
 दोहा - जौ नृप तनय तौ ब्रह्म किमि, नारि विरह मति भोरि ।

देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमित बुद्धि अति मोरि ॥

जो अनीह व्यापक विधु कोऊ । कहहु बुझाय नाथ मोहि सोऊ ॥
 अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहू । जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू ॥

X

X

X

X

तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना । आन जीव पाँवर का जाना ॥
 प्रश्न उमा के सहज सुहाई । छल विहीन सुनि सिव मन भाई ॥
 हर हिय राम चरित सब आये । प्रेम पुलक लोचन जल छाये ॥
 श्री रघुनाथ रूप उर आवा । परमानन्द अमित सुख पावा ॥
 दोहा—मगन ध्यान रस दंड जुग, पुनि मन बाहर कीन्ह ।

रघुपति चरित महेस तब, हरषित बरनै लीन्ह ॥

मूँठेव सत्य जाहिं बिनु जाने । जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने ॥
 जेहि जाने जग जाइ हेराई । जागे, यथा सपन भ्रम जाई ॥
 बंदौ बाल रूप सोइ रामू । सब सिधि सुलभ जपत जसु नामू ॥
 मंगल भवन अमंगल हारी । द्रबौ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥
 करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी । हरषि सुधा सम गिरा उचारी ॥
 धन्य धन्य गिरिराज हमारी । तुम समान नहिं कोउ उगकारी ॥

पूछेउ रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक जस पावनि गंगा ॥
तुम रघुवीर चरन अनुरागी । कीन्हेउ प्रसन्न जगत हित लागी ॥”

इसके बाद श्री शिव जी ने जो कुछ कहा वही गोस्वामी तुलसीदास जी का ‘रामचरित-मानस’ है ।

३०—ईश्वर कौन है और कहाँ है ?

बहुत दिनों के बाद ‘हरिजन’ के लिए लिखते समय महात्मा गांधी ने इस प्रकार के विचार प्रकट किये थे—“पाठकों ने देखा होगा कि पिछले हफ्ते से मैंने ‘हरिजन’ के लिए लिखना शुरू किया है । यह कहाँ तक चलेगा, सो तो मैं नहीं जानता । ईश्वर को चलाना होगा, वहाँ तक चलेगा ।

सोचने बैठता हूँ तो जिस हालत में लिखना बन्द किया था, वह आज भी कायम है । प्यारेलाल जी मुझसे दूर पड़े हैं और मेरी नज़र में नोआखाली में बहुत महत्व का काम कर रहे हैं । जिसे मैंने महायज्ञ कहा है, उसमें वे भाग ले रहे हैं । टाइपिस्ट परशुराम जी ने अँग्रेज़ी विभाग का काम ठीक से हाथ में ले लिया था । वे अपनी इच्छा से अभी अहमदाबाद में जीवण जी की मदद कर रहे हैं । कनु गांधी की मुझे बहुत मदद थी, मगर वह भी नोआखाली के महायज्ञ में पड़े हुए हैं । दूसरे मदद करने वाले कालवश या दूसरे कारणों से बहुत करके लिख नहीं सकते । ऐसी हालत में ‘हरिजन’ के लिए लिखने बैठना आम तौर पर पागलपन ही कहा जायगा । मगर लौकिक (दुनियावी) दृष्टि से जो करने लायक नहीं मालूम होता, ईश्वर के दरबार में वह शक्य और आसान हो सकता है । मैं मानता हूँ कि मैं ईश्वर का

नचाया नाचता हूँ। अगर यह मेरा भ्रम हो, तो भी मुझे प्रिय है।

यह ईश्वर कौन है, कैसा है ? इसकी बहस करना यहाँ मुझे अच्छा लगेगा। मगर वह फिर कभी।

जो विषय हम सबके मन पर सवारी कर रहा है, उसकी चर्चा तो मैं रोज़ शाम की प्रार्थना के बाद करता ही हूँ। यहाँ जो लिख रहा हूँ वह तो सात दिन बाद प्रकट होगा। जो चीज़ आज हमारे जीवन में पहली जगह ले रही है, उसके लिए इतना अरसा लम्बा गिना जायगा। इसलिए 'हरिजन' के लिए जीवन के क्रायमी (शाश्वत) भागों पर बहस करना ठीक लगता है। उनमें एक ब्रह्मचर्य है। दुनिया मामूली चीज़ों की तरफ़ दौड़ती है। क्रायमी चीज़ों के लिए उसके पास वक्त ही नहीं रहता। तो भी हम विचार करें तो देखेंगे कि दुनिया क्रायमी चीज़ों पर ही निभती है।

ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ? जो हमें ब्रह्म की तरफ़ ले जाय, वह ब्रह्मचर्य है। इसमें जननेन्द्रिय का संयम आ जाता है। वह संयम मन, वाणी और कर्म से होना चाहिए। अगर कोई मन से भोग करे और वाणी व स्थूल कर्म पर काबू रखे, तो यह ब्रह्मचर्य में नहीं चलेगा। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। मन पर पूरा काबू हो जाय, तो वाणी और कर्म का संयम बहुत आसान हो जाता है। मेरी कल्पना का ब्रह्मचारी कुदरतन् तन्दुरुस्त होगा, उसका सिर तक नहीं दुखेगा, वह कुदरती तौर पर लम्बी उमर वाला होगा, उसकी बुद्धि तेज़ होगी, वह आलसी नहीं होगा, जिस्मानी या दिमागी काम करने में थकेगा नहीं और उसकी बाहरी सुचढ़ता सिर्फ़ दिखावा न होकर भीतर का प्रतिबिम्ब होगी। ऐसे ब्रह्मचारी में स्थितप्रज्ञ के सब लक्षण देखने में

आवेंगे। ऐसा ब्रह्मचारी हमें कहीं दिखाई न पड़े, तो उसमें घबराने की कोई बात नहीं।

जो स्थिरवीर्य है, जो ऊर्ध्वरेता है, उनमें ऊपर के लक्षण देखने में आवे तो कौन बड़ी बात है ? मनुष्य के जिस वीर्य में अपने जैसा जीव पैदा करने की ताकत है, उस वीर्य को ऊँचे ले जाना ऐसी-वैसी बात नहीं हो सकती। जिस वीर्य के एक बूँद में इतनी ताकत है, उसके हजारों बूँदों की ताकत का माप कौन लगा सकता है ?

यहाँ एक जरूरी बात पर विचार कर लेना चाहिए। पतंजलि भगवान् के पाँच महाव्रतों में से किसी एक को लेकर उसकी साधना नहीं की जा सकती। यह हो सकता है, तो सिर्फ सत्य के बारे में ही, क्योंकि दूसरे चार तो सत्य में छिपे हुए हैं। और इस युग के लिए तो पाँच की नहीं, ग्यारह व्रतों की जरूरत है। विनोबा ने उन्हें मराठी में सूत्र रूप में रख दिया है—

अहिंसा सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य असंग्रह,
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन।
सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी स्पर्श भावना,
हीं एकादश सेवावीं नम्रत्वे व्रतनिश्चये।

ये सब व्रत सत्य के पालने में से निकाले जा सकते हैं। मगर जीवन इतना सरल नहीं। एक सिद्धान्त में से अनेक उप-सिद्धान्त निकाले जा सकते हैं। तो भी एक सबसे बड़े सिद्धान्त को समझने के लिए अनेक उप-सिद्धान्त जानने पड़ते हैं।

यह भी समझना चाहिए कि सब व्रत समान हैं। एक टूटा कि सब टूटे। हमें आदत पड़ गई है कि सत्य और अहिंसा के व्रतभंग को हम माफ़ कर सकते हैं। इन व्रतों को तोड़ने वाले की तरफ़ हम उँगली नहीं उठाते। अस्तेय और अपरिग्रह क्या है, सो तो हम समझते ही नहीं। मगर माना हुआ ब्रह्मचर्य व्रत

टूटा, तो तोड़नेवाले का बुरा हाल होता है। जिस समाज में ऐसा होता है, उसमें कोई बड़ा दोष होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य का संकुचित अर्थ लेने से वह निस्तेज बनता है। उसका शुद्ध पालन नहीं होता, सभी कीमत नहीं आँकी जाती और दम्भ बढ़ता है। कम-से-कम इस व्रत का पूरा स्थूल पालन भी अशक्य नहीं, तो बहुत कठिन तो होता ही है। इसलिए सब व्रतों को एक साथ लेना चाहिए। ऐसा हो तभी ब्रह्मचर्य की व्याख्या सिद्ध की जा सकती है। आज की भाषा में वह सच्चा ब्रह्मचारी है, जो एकादश व्रत का पालन मन से, वाणी से और कर्म से, करता है।

ब्रह्मचर्य एकादश व्रतों में से एक व्रत है। इस पर से यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मचर्य की मर्यादा या बाड़ एकादश व्रतों का पालन है। मगर एकादश व्रतों को कोई बाड़ न माने। बाड़ तो किसी खास हालत के लिए ही होती है। हालत बदली और बाड़ भी गई। मगर एकादश व्रत का पालन तो ब्रह्मचर्य का जरूरी हिस्सा है। उसके बिना ब्रह्मचर्य का पालन नहीं हो सकता।

आखिर में ब्रह्मचर्य मन की स्थिति (हालत) है। बाहरी आचार या व्योहार उसकी पहचान, उसकी निशानी है। जिस पुरुष के मन में जरा भी विषय-वासना नहीं रही, वह कभी विकार के बश नहीं होगा। वह किसी औरत को चाहे जिस हालत में देखे, चाहे जिस रूप-रंग में देखे, तो भी उसके मन में विकार पैदा नहीं होगा। यही स्त्री के बारे में भी समझना चाहिए। मगर जिसके मन में विकार उठा ही करते हैं, उसे सगी बहन या बेटी को भी नहीं देखना चाहिए। मैंने अपने कुछ मित्रों को यह नियम पालने की सलाह दी थी। और जिन्होंने इसका पालन किया है, उन्हें फायदा हुआ है। अपने बारे में मेरा यह तजरबा है कि जिन चोषों को देखकर दक्षिण अफ्रीका में मेरे मन

मैं कभी विकार पैदा नहीं हुआ था, उन्हीं से दक्षिण अफ्रीका से वापस आने पर मेरे मनमें विकार पैदा हुआ । और उसे शान्त करने में मुझे काफी मेहनत करनी पड़ी ।

यह बात सिर्फ जननेन्द्रिय के बारे में ही सच थी ऐसा नहीं; इन्सान को शोभा न देने वाले डर के बारे में भी यही सच पड़ी और मैं शर्मिन्दा हुआ । बचपन में मैं स्वभाव से डरपोक था । दीये के बिना मैं आराम से सो नहीं सकता था । कमरे में अकेले सोना अपनी बहादुरी की निशानी समझता था । मुझे पता नहीं कि आज अगर मैं रास्ता भूल जाऊँ और काली रात में घने जङ्गल में भटकता होऊँ, तो मेरी क्या हालत हो ? मेरा राम मेरे पास है, यह खयाल भी उस वक्त भूल जाऊँ तो ? अगर बचपन का डर मेरे मन में से बिलकुल निकल गया हो, तो मैं मानता हूँ कि निर्जन जंगल में निडर रहना जननेन्द्रिय के संयम से भी ज्यादा मुश्किल है । जिसकी यह हालत हो, वह मेरी ब्याख्या का ब्रह्मचारी तो नहीं ही गिना जायगा ।

ब्रह्मचर्य की जो मर्यादा हम लोगों में मानी जाती है, उसके मुताबिक ब्रह्मचारी को स्त्रियों, पशुओं और नपुंसकों के बीच में नहीं रहना चाहिए । ब्रह्मचारी अकेली स्त्री या स्त्रियों की टोली को उपदेश न करे । स्त्रियों के साथ एक आसन पर न बैठे । स्त्रियों के शरीर का कोई हिस्सा न देखे । दूध, दही, घी वगैरह चिकनी चीजें न खाये । स्नान-लेपन न करे । यह सब मैंने दक्षिण-अफ्रीका में पढ़ा था । वहाँ जननेन्द्रिय का संयम करने वाले पच्छिम के स्त्री-पुरुषों के बीच मैं रहता था । मैं उन्हें इन सब मर्यादाओं को तोड़ते देखता था । मैं खुद भी उनका पालन नहीं करता था । यहाँ आकर भी नहीं कर सका । दूध, दही वगैरह मैं हठ-पूर्वक छोड़ता था । उसका कारण दूसरा था । इसमें मैं हारा । अभी भी अगर मुझे ऐसी कोई वनस्पति मिल

जाय जो दूध-धी की जरूरत पूरी कर सके, तो मैं फौरन दूध बगैरह प्राणिज चीजें छोड़ दूँ और मेरी खुशी का पार न रहे। मगर यह तो दूसरी बात हुई।

ब्रह्मचारी कभी निर्बीये नहीं होता। वह रोज वीर्य पैदा करता है और उसे इकट्ठा करके रोज-रोज बढ़ाता जाता है। उसे कभी बुढ़ापा नहीं आता। उसकी बुद्धि कभी कुण्ठित नहीं होती।

रुम्मे लगता है कि जो ब्रह्मचारी बनने की सच्ची कोशिश कर रहा है, उसे भी ऊपर बताई हुई बाड़ों (मर्यादाओं) की जरूरत नहीं है। ब्रह्मचर्य जबर्दस्ती से यानी मनसं विरुद्ध जाकर पालने की चीज नहीं। वह जबर्दस्ती नहीं पाला जा सकता। यहाँ तो मन का वश करने की बात है। जो जरूरत पड़ने पर स्त्री को छूने से भागता है, वह ब्रह्मचारी बनने की कोशिश ही नहीं करता।

इस लेख का मतलब यह नहीं कि लाग मनमाना करें। इसमें तो सच्चा संयम पालने की बात बताई गई है। दंभ या ढोंग के लिए यहाँ कोई जगह हो ही नहीं सकती। जो छुपे तौर से विषय-सेवन के लिए इस लेख का इस्तेमाल करेगा, वह दम्भी और पापी ही गिना जायगा।

ब्रह्मचारी को नकली बाड़ों से भागना चाहिए। उसे अपने लिए अपनी बाड़ बना लेनी है। जब उसकी जरूरत न रहे, तब उसे तोड़ देना चाहिए। इस लेख का मकसद तो यह है कि हम सच्चे ब्रह्मचर्य को पहचानें। उसकी कीमत जान लें और ऐसे कीमती ब्रह्मचर्य का पालन करें। इसमें देश-सेवा का सच्चा ज्ञान रहा है। इससे देश-सेवा करने की शक्ति भी बढ़ती है।

ब्रह्मचर्य क्या है यह बताते हुए मैंने लिखा है कि ब्रह्म यानी ईश्वर तक पहुँचने का जो आचार (जिन्दगी का तरीका) होना चाहिए, वह ब्रह्मचर्य है। लेकिन इतना जान लेने से ईश्वर के

रूप का पता नहीं चलता। अगर उसका ठीक पता चल जाय, तो हम ईश्वर की तरफ जाने का ठीक रास्ता भी जान सकते हैं।

ईश्वर मनुष्य नहीं है। इसलिए वह किसी मनुष्य में उतरता है या अवतार लेता है, ऐसा कहें तो यह पूरा सत्य नहीं है। एक तरह से, ईश्वर किसी खास मनुष्य में उतरता है ऐसा कहने का मतलब सिर्फ इतना ही हो सकता है कि वह मनुष्य ईश्वर के ज्यादा नजदीक है। उसमें हमें ज्यादा ईश्वरीपन दिखाई देता है। ईश्वर तो सब जगह हाजिर है। वह सब में मौजूद है। इसलिए हम सब ईश्वर के अवतार हैं। मगर ऐसा कहने से कोई मतलब हल नहीं होता।

राम, कृष्ण वगैरह को हम अवतार कहते हैं, क्योंकि उनमें लोगों ने ईश्वर के गुण देखे। आखिर तो राम, कृष्ण वगैरह मनुष्य की खयाली दुनिया में बसते हैं और उसकी खयाली तसवीर ही हैं। इतिहास में ऐसे लोग हो गये या नहीं, इसके साथ इन कल्पना की तसवीरों का कोई सम्बन्ध नहीं। कई बार हम इतिहास के राम और कृष्ण को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मुशिकलों में पड़ जाते हैं और हमें कई तरह की दलीलों का सहारा लेना पड़ता है।

सच बात तो यह है कि ईश्वर एक शक्ति (ताक़त) है, तत्व है, शुद्ध चैतन्य है, सब जगह मौजूद है। मगर हैरानी की बात यह है कि ऐसा होते हुए भी सबको उसका सहारा या फ़ायदा नहीं मिलता, या यों कहें कि सब उसका सहारा पा नहीं सकते।

बिजली एक बड़ी ताक़त है। मगर सब उससे फ़ायदा नहीं उठा सकते। उसे पैदा करने का अटल क़ानून है। उसके मुताबिक़ काम किया जाय तभी बिजली पैदा की जा सकती है। बिजली जड़ है, बेजान चीज़ है। उसके इस्तेमाल का फ़ायदा चेतन मनुष्य मेहनत करके जान सकता है। जिस चेतनामय बड़ी भारी

शक्ति को हम ईश्वर कहते हैं, उसके इस्तेमाल का भी नियम तो है ही। लेकिन यह चीज बिल्कुल साफ है कि उस नियम को ठूँढ़ने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत की जरूरत है। उस नियम या कायदे का छोटा-सा नाम है ब्रह्मचर्य।

ब्रह्मचर्य को पालने का सीधा रास्ता राम-नाम है। यह मैं अपने तजरबे से कह सकता हूँ। तुलसीदास जैसे भक्त ऋषि-मुनियों ने तो वह रास्ता बताया ही है। मेरे अनुभव का कोई जरूरत से ज्यादा मतलब न निकाले। राम-नाम सब जगह मौजूद रहने वाली रामबाण दवा है, यह शायद मैंने पहले-पहल उरुलीकांचन में ही साफ-साफ जाना था। जो उसका पूरा इस्तेमाल जानता है, उसे जगत् में कम-से-कम बाहरी काम करना पड़ता है। फिर भी उसका काम बड़े-से-बड़ा होता है।

इस तरह विचार करते हुए मैं कह सकता हूँ कि ब्रह्मचर्य की रक्षा के जो नियम माने जाते हैं, वे तो खेल ही हैं सच्ची और अमर रक्षा तो राम-नाम ही है। राम जब जीभ से उतर कर हृदय में बस जाता है, तभी उसका पूरा चमत्कार दिखलाई देता है। यह अचूक साधन पाने के लिए एकादश व्रत तो हैं ही। मगर कई साधन ऐसे होते हैं कि उनमें से कौन-सा साधन (पाने का तरीका) और कौन सा साध्य (पाने की चीज) है, यह फर्क करना मुश्किल हो जाता है। एकादश व्रतों में से सत्य को ही लें, तो पूछा जा सकता है कि क्या सत्य साधन है और राम साध्य? या, राम साधन है और सत्य साध्य है?

मगर मैं सीधी बात पर आऊँ। ब्रह्मचर्य का आज का माना हुआ अर्थ लें तो वह है—जननेन्द्रिय पर काबू पाना। इस संयम का सुनहला रास्ता और उसकी अमर रक्षा राम-नाम है। इस राम-नाम को सिद्ध करने के कायदे या नियम तो हैं ही।

बापू के प्रिय गीत

[१]

बन्दे मातरम्

सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलां मातरम् ॥ बन्दे मातरम् ॥
शुभ्र ज्योतनां, पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसमित-द्रुमदल शोभनीम्,
सुहासिनीम्, सुमधुर भाषिणीम्,
सुवदां, वरदां मातरम् ॥ बन्दे मातरम् ॥

[२]

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है ॥उठ॥
टुक नींद से अखियाँ खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
यह प्रीति करन की रीति नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है ॥उठ॥
जो कल करना है आज कर ले,
जो आज करना है अब कर ले ।
जब चिड़ियों ने चुन खेत लिया,
तो फिर पछिताए क्या होवत है ॥उठ॥

नादान भुगत करनी अपनी,
 ए पापी पाप में चैन कहाँ ।
 जब पाप गठरिया शीश धरी,
 तो शीश पकड़ क्यों रोवत है ॥उठा॥

[३]

वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीढ़ पराई जाणे रे,
 पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।
 सकल लोक माँ सहुने बंदे निन्दा न करे केनी रे,
 पाँच काल मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ।
 समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,
 जिह्या थकी असत्य न बोले, पर धन नव साले हाथ रे ।
 मोह माया नहि व्यापे जेने, हृद वैराग्य जना मनमा
 रामनाम सु ताली लानी, सकल तीरथ तेना तनमां ।
 बण लोभौ ने कपट रहित छे, कामक्रोध निवार्या
 भणे नरसैर्यौ तेनु दरसन करता, कुल एकीतेर तार्या ।

